शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

कक्षा : बारहवीं

समाजशास्त्र

मार्गदर्शन:

श्री अशोक कुमार

सचिव (शिक्षा)

श्री हिमांशु गुप्ता

निदेशक (शिक्षा)

डा0 रीता शर्मा

अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयक:

श्री संजय सुभाष कुमार	श्रीमती सुनीता दुआ	श्री राज कुमार	श्री कृष्ण कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा)	विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)	विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)	विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में **राजेश कुमार**, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा **मुद्रक :** सुप्रीम ऑफसेट प्रेस, 133, उद्योग केन्द्र, EXT.-1, ग्रेटर नोएडा, उ.प.

ASHOK KUMAR
IAS

सत्यमेव जयते

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष : 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187 Telefax : 23890119
e-mail : secyedu@nic.in

MESSAGE

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself, I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of School and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

(Ashok Kumar)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail: diredu@nic.in

MESSAGE

"A good education is a foundation for a better future."
- Elizabeth Warren

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating thelatest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

Dr. RITA SHARMA
Additional Director of Education
(School/Exam)

सत्यमेव जयते

Govt. of NCT of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-110054
Ph. : 23890185

D.O. No. PS/Addl.DE/Sch/2022/131
Dated: 01 सितम्बर, 2022

संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमि समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई के नवीनतम दिशा-निर्देशों के अनुसार पाठयक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

रीता शर्मा

(रीता शर्मा)

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

समाजशास्त्र

कक्षा : बारहवीं

(हिन्दी माध्यम)

निःशुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

Support Material : 2022-23

Class-XII

SUBJECT : SOCIOLOGY

Reviewed and updated by

Name of the Team Leader	**Ms. Seema Roy Chowdhury** Principal / OSD (SOSE)
Name of the Subject Experts	**Sh. Devender Singh** Lecturer Sociology S (Co-Ed) V, Block-A Keshav Puram Delhi-35
	Ms. Vilakshna Lecturer Sociology CAU Sarvodaya Vidyalaya Sharda Niketan Delhi
	Sh. Rajesh Kumar Lecturer Sociology Govt. Co.Ed Senior Secondary School Punjabi Basti, Nangloi, New Delhi
	Mrs. Pragati Verma Lecturer Sociology Sarvodaya Kanya Vidhyalaya Rana Pratap Bagh, New Delhi

SOCIOLOGY (Code No. 039)

2022-23

Rationale

Sociology is introduced as an elective subject at the senior secondary stage. The syllabus is designed to help learners to reflect on what they hear and see in the course of everyday life and develop a constructive attitude towards society in change; to equip a learner with concepts and theoretical skills for the purpose. The curriculum of Sociology at this stage should enable the learner to understand dynamics of human behaviour in all its complexities and manifestations. The learners of today need answers and explanations to satisfy the questions that arise in their minds while trying to understand social world. Therefore, there is a need to develop an analytical approach towards the social structure so that they can meaningfully participate in the process of social change. There is scope in the syllabus not only for interactive learning, based on exercises and project work but also for teachers and students to jointly innovate new ways of learning.

- Sociology studies society. The child's familiarity with the society in which she /he lives in makes the study of Sociology a double edged experience. At one level Sociology studies institutions such as family and kinship, class, caste and tribe religion and region- contexts with which children are familiar of, even if differentially. For India is a society which is varied both horizontally and vertically. The effort in the books will be to grapple overtly with this both as a source of strength and as a site for interrogation.
- Significantly the intellectual legacy of Sociology equips the discipline with a plural perspective that overtly engages with the need for defamiliarization, to unlearn and question the given. This interrogative and critical character of Sociology also makes it possible to understand both other cultures as well as relearn about one's own culture.
- This plural perspective makes for an inbuilt richness and openness that not too many other disciplines in practice share. From its very inception Sociology has had mutually enriching and contesting traditions of an interpretative method that openly takes into account 'subjectivity' and causal explanations that pay

due importance to establishing causal correspondences with considerable sophistication. Not surprisingly its field work tradition also entails large scale survey methods as well as a rich ethnographic tradition. Indeed Indian sociology, in particular has bridged this distinction between what has often been seen as distinct approaches of Sociology and social anthropology. The syllabus provides ample opportunity to make the child familiar with the excitement of field work as well as its theoretical significance for the very discipline of Sociology.

- The plural legacy of Sociology also enables a bird's eye view and a worm's eye view of the society the child lives in. This is particularly true today when the local is inextricably defined and shaped by macro global processes.
- The syllabus proceeds with the assumption that gender as an organizing principle of society cannot be treated as an add on topic but is fundamental to the manner that all chapters shall be dealt with.
- The chapters shall seek for a child centric approach that makes it possible to connect the lived reality of children with social structures and social processes that Sociology studies.
- A conscious effort will be made to build into the chapters a scope for exploration of society that makes learning a process of discovery. A way towards this is to deal with sociological concepts not as givens but a product of societal actions humanly constructed and therefore open to questioning.

Objectives

- To enable learners to relate classroom teaching to their outside environment.
- To introduce them to the basic concepts of Sociology that would enable them to observe and interpret social life.
- To be aware of the complexity of social processes.
- To appreciate diversity in Indian society and the world at large.
- To build the capacity of students to understand and analyze the changes in contemporary Indian society.

COURSE STRUCTURE
CLASS-XII (2022-23)

One Theory Paper Time : 3 Hours **Max. Marks : 80**

Units		No. of Periods	Marks
A	**Indian Society**		
	1. Introducing Indian Society	0	Non-evaluative
	2. The Demographic Structure of Indian Society	10	10
	3. Social Institutions: Continuity and Change	12	10
	5. Patterns of Social Inequality and Exclusion	18	10
	6. The Challenges of Cultural Diversity	22	10
	7. Suggestions for Project Work	10	Non-evaluative
		Total	**40**
B	**Social Change and Development in India**		
	8.Structural Change	8	5
	9.Cultural Change	12	5
	11.Change and Development in Rural Society	10	10
	12.Change and Development in Industrial Society	12	10
	15.Social Movements	18	10
		Total	**40**
	Total	**132**	**80**

COURSE CONTENT

A.	INDIAN SOCIETY	40 Marks
Unit 1	**Introducing Indian Society** • Colonialism, Nationalism, Class and Community **(Non- evaluative)**	0 Periods
Unit 2	**The Demographic Structure of the Indian Society** • Theories and concepts in demography10 Periods • Rural-Urban Linkages and Divisions • Population Policy in India	10 Periods

Unit 3	**Social Institutions: Continuity and Change** • Caste and the Caste System • Tribal Communities • Family and Kinship	12 Periods
Unit 5	**Patterns of Social Inequality and Exclusion** • Social Inequality and Social Exclusion • Systems justifying and perpetuating Inequality - Caste, Tribe, the Other Backward Classes • Adivasi Struggles • The Struggle for Women's Equality and Rights • The struggles of the Differently Abled	18 Periods
Unit 6	**The Challenges of Cultural Diversity** • Cultural communities and the nation state • Regionalism in the Indian context • The Nation state and religion related issues and identities • Communalism, secularism and the nation state • State and Civil Society	22 Periods
Unit 7	**Suggestions for Project Work**	10 Periods
B.	**SOCIAL CHANGE AND DEVELOPMENT IN INDIA**	**40 Marks**
Unit 8	**Structural Change** • Understanding Colonialism, Industrialization, Urbanization	8 Periods
Unit 9	**Cultural Change** • Social Reform Movements • DifferentKindsofSocialChange:Sanskritisation, Westernization, Modernization, Secularization	12 Periods
Unit 11	**Change and Development in Rural Society** • Agrarian Structure : Caste & class in Rural India • LandReforms,GreenRevolutionandEmerging Agrarian society • Green revolution and its social consequences • Transformation in Rural Society • Circulation of labour • Globalization, Liberalization and Rural Society	10 Periods
Unit 12	**Change and Development in Industrial Society** • From Planned Industrialization to Liberalization • How people find Jobs • Work Processes: How work is carried out, working conditions, home based work, Strikes and Unions	12 Periods

Unit 15	**Social Movements** • Concept of Social Movements • Theories and Classification of Social Movements • Environmental Movements • Class-Based Movements: Workers, Peasants • Caste-Based Movements: Dalit Movement, Backward Class/Castes, Trends in Upper Caste Responses • Tribal Movements • Women's Movements in Independent India	18 Periods

PROJECT WORK **Periods : 40**	
Max. Marks: 20	
C. Project undertaken during the academic year at school level 1. Introduction -2 Marks 2. Statement of Purpose – 2 Marks 3. Research Question – 2 Marks 4. Methodology – 3 Marks 5. Data Analysis – 4 Marks 6. Conclusion – 2 Marks	**15 Marks**
D. Viva-based on the project work	**05 Marks**

SYLLABUS AS PER CBSE

CLASS-XII (2022-23)

	TERM I	WEIGHTAGE (IN MARKS)
1.	The Demographic Structure of Indian Society	10
2.	Social Institutions -Continuity and Change	10
3.	Patterns of Social Inequality and Exclusion	10
4.	Challenges of Cultural Diversity	10
	Total	**40 Marks**
	TERM II	
1.	Structural Change	5
2.	Cultural Change	5
3.	Change and Development in Rural Society	10
4.	Change and Development in industrial Society	10
5.	Social Movements	10
	Total	**40 Marks**

Prescribed Textbooks:

1. Indian Society (NCERT)
2. Social Change and Development in India (NCERT)

Project Work* = 20 Marks

***See the guidelines given with the document.**

Grand Total =	Book I	=	40 Marks
	Book II	=	40 Marks
	Project Work	=	20 Marks
		=	**100 Marks**

Note: Kindly refer to the guidelines on project work given below:

Guidelines for Subjects having Project Work: 20 Marks

(Sociology, History, Legal Studies, Political Science, Economics, Business Studies, Accountancy)

One Project to be done throughout the session, as per the existing scheme.

1. **The objectives of the project work:**

   Objectives of project work are to enable learners to:

- probe deeper into personal enquiry ,initiate action and reflect on knowledge and skills, views etc. acquired during the course of class XI-XII.
- analyse and evaluate real world scenarios using theoretical constructs and arguments.
- demonstrate the application of critical and creative thinking skills and abilities to produce an independent and extended piece of work
- follow up aspects in which learners have interest
- develop the communication skills to argue logically

2. **Role of the teacher:**

   The teacher plays a critical role in developing thinking skills of the learners. A teacher should:

- help each learner select the topic after detailed discussions and deliberations of the topic;
- play the role of a facilitator to support and monitor the project work of the learner through periodic discussions;
- guide the research work in terms of sources for the relevant data;
- ensure that students must understand the relevance and usage of primary evidence and other sources in their projects and duly acknowledge the same;
- ensure that the students are able to derive a conclusion from the content; cite the limitations faced during the research and give appropriate references used in doing the research work.
- educate learner about plagiarism and the importance of quoting the source of the information to ensure authenticity of research work.
- prepare the learner forthe presentation of the project work.
- arrange a presentation of the project file.

3. **Steps involved in the conduct of the project:**

Students may work upon the following lines as a suggested flow chart:

Choose a title/topic

↓

Collection of the research material/data

↓

Organization of material/data

↓

Present material/data

↓

Analysing the material/data for conclusion

↓

Draw the relevant conclusion

↓

Presentation of the Project Work

- The project work can be in the form of Power Point Presentation / Exhibition/Skit/ albums/files/song and dance or culture show /story telling/debate/panel discussion, paper presentation and so on. Any of these activities which are suitable to visually impaired/differently abled candidates can be performed as per the choice of the student.

4. **Expected Checklist for the Project Work:**

- Introduction of topic/title
- Identifying the causes, events, consequences and/or remedies
- Identify various associated dimensions and effect of the identified situation or issue on each of them.
- Advantages and disadvantages of situations or issues identified
- Short-term and long-term implications of strategies suggested in the course of research
- Validity, reliability, appropriateness and relevance of data used for research work and for presentation in the project file
- Presentation and writing that is succinct and coherent in project file
- Citation of the materials referred to, in the file in footnotes, resources section, bibliography etc.

5. **Term-Wise Assessment of Project Work:**

- Project Work has broadly the following phases: Synopsis/ Initiation, Data Collection, Data Analysis and Interpretation, Conclusion.
- The aspects of the project work to be covered by students can be assessed during the two terms.

- 20 marks assigned for Project Work can be divided in to two terms in the following manner:

TERM-I PROJECT WORK: 10 Marks

The teacher will assess the progress of the project work in the term I in the following manner:

Month	Periodic Work	Assessment Rubrics	Marks
1-3 July-September	Instructions about Project Guidelines, Background reading Discussions on Theme and Selection of the Final Topic, Initiation/ Synopsis	Introduction, Statement of Purpose /Need and objectives of the study, Hypothesis/Research Question, Review of Literature, Presentation of Evidence, Methodology, Questionnaire, Data Collection.	5
4-5 October-November	Planning and organisation: forming an action plan, feasibility or baseline study, Updating/ modifying the action plan, Data Collection	Significance and relevance of the topic; challenges encountered while conducting the research.	5
October-November	**Midterm Assessment by internal examiner**	**TOTAL**	**10**

TERM- II - PROJECT WORK: 10 Marks

The teacher will assess the progress of the project work in the term II in the following manner:

Month	Periodic Work	Assessment Rubrics	Marks
6-7 December -January	Content/data analysis and interpretation. Conclusion, Limitations, Suggestions, Bibliography, Annexures and overall presentation of the project.	Content/data analysis and its relevance in the current scenario. Conclusion, Limitations, Bibliography, Annexures and Overall Presentation.	5
8 January/ February	**Final Assessment and VIVA by both Internal and External Examiners**	External/ Internal Viva based on the project	5
		TOTAL	**10**

6. <u>Viva-Voce</u>

- At the end of the stipulated term, each learner will present the research work in the Project File to the External and Internal examiner.
- The questions should be asked from the Research Work/ Project File of the learner.
- The Internal Examiner should ensure that the study submitted by the learner is his/ her own original work.
- In case of any doubt, authenticity should be checked and verified.

समाजशास्त्र (कोड़ नं. 39)

पुस्तक 1

क्र.सं.	पाठ	अंक
1.	**अध्याय 1 :** भारतीय समाज	N.E.
2.	**अध्याय 2 :** भारतीय समाज की जनसांख्यिकीय संरचना	10
3.	**अध्याय 3 :** सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन	10
4.	**अध्याय 5 :** सामाजिक असमानता (विषमता) एवं बहिष्कार के स्वरूप	10
5.	**अध्याय 6 :** सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ	10
6.	**अध्याय 7 :** परियोजना कार्य के सुझाव	N.E.
	कुल	40

नोट : अध्याय 1 और अध्याय 7 मूल्यांकन रहित हैं।

पुस्तक 2

क्र.सं.	पाठ	अंक
1.	**अध्याय 1 :** संरचनात्मक परिवर्तन	5
2.	**अध्याय 2 :** सांस्कृतिक परिवर्तन	5
3.	**अध्याय 4 :** ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन	10
4.	**अध्याय 5 :** औद्योगिक समाज में परिवर्तन तथा विकास	10
5.	**अध्याय 8 :** सामाजिक आंदोलन	10
	कुल	40

अध्याय - 2

भारतीय समाज की जनसांख्यिकीय संरचना

मुख्य बिन्दु

1. **जनांकिकी / जनसांख्यिकी :** जनसंख्या का सुव्यवस्थित अध्ययन जनांकिकी कहलाता है। इसका अंग्रेजी जनसांख्यिकी डेमोग्राफी यूनानी भाषा के दो शब्दों डेमोस-लोग तथा ग्राफीन यानि वर्णन अर्थात् लोगों का वर्णन।

   इससे जन्म, मृत्यु, प्रवसन, लिंग अनुपात आदि का अध्ययन किया जाता है।

2. **जनांकिकी के प्रकार :**

   जनांकिकी मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है।

   (1) **आकारिक जनसांख्यिकी : इसमें जनसंख्या के आकार का अध्ययन किया जाता है।**

   (2) **सामाजिक जनसांख्यिकी :** इसमें जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक पक्षों पर विचार किया जाता हैं।

3. 18वीं शताब्दी के उत्तर्राद्ध में, यूरोप में लगभग एक ही समय में दो विभिन्न प्रक्रियायें हुई।

   (i) राजनीतिक संगठन के प्रमुख रूप में राष्ट्र - राज्यों की स्थापना।

   (ii) आंकड़ों से सम्बंधित आधुनिक विज्ञान सांख्यिकी की शुरुआत।

4. स्वतंत्रता के पहले से भारत में दस वर्षीय जनगणना की जाती रही है।

   1951 के बाद अब तक सात दस वर्षीय जनगणनाएं हो चुकी हैं। हाल ही में 2011 में जनगणना हुई है।

5. जनसांख्यिकीय आंकड़े राज्य की नीतियों जैसे आर्थिक विकास, जनकल्याण संबंधी नीतियाँ बनाने व कार्यान्वित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

6. जनसांख्यिकीय सिद्धान्त

(A) थॉमस रोबर्ट माल्थस का जनसंख्या वृद्धि का सिद्धान्त : (1766-1834)

- जनसंख्या ज्यामितीय अनुपात से बढ़ती है। जैसे - 2, 4, 8, 16, 32 आदि
- कृषि उत्पादन में वृद्धि गणितीय (समांतर) रूप से होती है। जैसे- 2, 4, 6, 8, 10 आदि।
- इससे जनसंख्या व खाद्य सामग्री में असंतुलन पैदा होता है।
- समृद्धि बढ़ाने के लिए जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित किया जाए। माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण के दो प्रकारों के प्रतिबंध का उल्लेख किया है-

1. प्राकृतिक निरोध/अवरोध : जैसे अकाल, भूकम्प, बाढ़, युद्ध बीमारी आदि।
2. कृत्रिम निरोध/अवरोध : जैसे बड़ी उम्र में विवाह, यौन संयम, ब्रह्मचार्य का पालन आदि।

माल्थस के सिद्धान्त विरोध :

आर्थिक वृद्धि जनसंख्या वृद्धि से अधिक हो सकती है। जैसा कि यूरोप के देशों में हुआ है। गरीबी व भुखमरी जनसंख्या वृद्धि के बजाए आर्थिक संसाधनों के असमान वितरण के कारण फैलती है। (उदारवादी व मार्क्सवादी)

(B) जनसांख्यिकी संक्रमण का सिद्धांत :

- जनसंख्या वृद्धि आर्थिक विकास के समग्र स्तरों से जुड़ी होती है।
- जनसंख्या वृद्धि के तीन बुनियादी चरण होते हैं।

1. पहला चरण है समाज में जनसंख्या वृद्धि का कम होना क्योंकि समाज तकनीकी दृष्टि से पिछड़ा होता है। (मृत्युदर और जन्मदर दोनों ही बहुत ऊँची होती है।)
2. जनसंख्या विस्फोट संक्रमण अवधि में होता है, क्योंकि समाज पिछड़ी अवस्था से उन्नत अवस्था में जाता है, इस दौरान जनसंख्या वृद्धि की दरें बहुत ऊँची हो जाती है।
3. तीसरे चरण में भी विकसित समाज में जनसंख्या वृद्धि दर नीची रहती है क्योंकि ऐसे समाज में मृत्यु दर और जन्म दर दोनों ही काफी कम हो जाती है।

7. सामान्य कल्पनाएँ व संकेतक :

- **जन्म दर :** एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों पर जीवित जन्में बच्चों की संख्या जन्म दर कहलाती है।
- **मृत्यु दर :** क्षेत्र विशेष में प्रति हजार व्यक्तियों में मृत व्यक्तियों की संख्या मृत्यु दर कहलाती है।
- **प्राकृतिक वृद्धि दर या जनसख्या वृद्धि दर :** जन्म दर व मृत्यु दर के बीच का अन्तर। जब यह अंतर शून्य या कम होता है तब हम यह कह सकते हैं कि जनसंख्या स्थिर हो गई है या प्रतिस्थापन स्तर पर पहुँच गई है।
- **प्रतिस्थापन स्तर :** यह एक ऐसी अवस्था होती है जब जितने बूढ़े लोग मरते हैं उनका खाली स्थान भरने के लिए उतने ही नए बच्चे पैदा हो जाते है। भारत में केरल की कुल प्रजनन दरें वास्तव में प्रतिस्थापन स्तर से नीचे है। हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, महाराष्ट्र की प्रजनन दरे प्रतिस्थापन स्तर के बराबर है। बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश ऐसे राज्य है जो प्रतिस्थापन स्तर से ऊपर है। इस राज्यवार विभिन्नता के पीछे शिक्षा तथा जागरूकता के स्तरों में वृद्धि होना अथवा ना होना है।
- **प्रजनन दर :** बच्चे पैदा कर सकने की आयु (15-49 वर्ष) की स्त्रियों की इकाई के पीछे जीवित जन्में बच्चों की संख्या।
- **शिशु मृत्यृ दर :** जीवित पैदा हुए 1000 बच्चों में से एक वर्ष की आयु से पहले मृत बच्चों की संख्या।
- **मातृ मृत्यु दर :** एक हजार शिशु जन्मों पर जन्म देकर मरने वाली महिलाओं की संख्या।
- **लिंग अनुपात :** प्रति हजार पुरुषों पर निश्चित अवधि के दौरान स्त्रियों की संख्या (किसी विशेष क्षेत्र में)
- **जनसंख्या की आयु संरचना :** कुल जनसंख्या के विभिन्न आयु वर्गों में व्यक्तियों का अनुपात।
- **पराश्रितता अनुपात :** जनसंख्या का वह अनुपात जो जीवन यापन के लिए कार्यशील जनसंख्या पर आश्रित है। इसमें कार्यशील वर्ग 15-64 वर्ष की आयु वाले होते हैं। बच्चे व बुजुर्ग पराश्रित होते हैं।

- **बढ़ता हुआ पराश्रितता अनुपात :** यह उन देशों में चिंता का कारण बन सकता है जहाँ जनता बुढ़ापे की समस्या से जूझ रही होती है क्योंकि वहाँ आश्रितों की संख्या बढ़ जाने से कार्यशील आयु वाले लोगों पर बोझ बढ़ जाता है।
- **गिरता हुआ पराश्रितता अनुपात :** यह आर्थिक संवृद्धि और समृद्धि का स्रोत बन सकता है क्योंकि वहाँ कार्यशील लोगों का अनुपात काम न करने वालों की संख्या में अधिक बड़ा होता है। इसे जनसांख्यिकीय लांभाश कहते हैं।

- **आयु संभाविता :** यह इस बात की सूचक है कि एक औसत व्यक्ति अनुमानत: कितने वर्षों तक जीवित रहेगा।

- **सोनोग्राम/अल्ट्रासाउंड:** प्रौद्योगिकी पर आधारित एक्सरे जैसा नैदानिक उपाय, कई बार इसका उपयोग गलत तरीके से भी माँ के गर्भ में भ्रूण का लिंग पता लगाने के लिए किया जाता है।

8. **अकाल :** कई कारणों से पड़ते थे जिनमें से एक यह था कि जिन इलाकों में खेती वर्षा पर निर्भर रहती थी वहाँ वर्षा की कमी के कारण खेती की उपज कम होती थी। जिससे लोग घोर गरीबी और कुपोषण की हालत में जीवन बिताने को मजबूर हो जाते थे। इसके अलावा परिवहन और संचार के साधनों की समुचित व्यवस्था न होने के कारण और राज्य की ओर से इस दिशा में पर्याप्त प्रयत्न न किए जाने के कारण भी अकाल पड़ते थे।

9. **भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना :** अधिकांश भारतीय युवावस्था में है। केरल ने विकसित देशों की आयु संरचना की स्थिति प्राप्त कर ली है। उत्तर प्रदेश में युवा वर्ग का अनुपात अधिक है तथा वृद्धों का अनुपात कम है।

   जनसांख्यिकीय लाभांश : जब कार्यशील लोगों की संख्या पराश्रित लोगों की संख्या से अधिक होती है तो वहां अधिक संवृद्धि होती है अर्थात पराश्रिता अनुपात गिरता है। इसे ही जनसांख्यिकीय लाभांश कहते हैं।

- **भारत में 'जनसांख्यिकीय लाभांश' :** जनसांख्यिकीय संरचना में जनसंख्या संक्रमण की उस अवस्था को जिसमें कमाने वाले यानि 15-64 आयु वर्ग की जनसंख्या न कमाने वाले (पराश्रित वर्ग) यानि 15 से कम और 64 से अधिक आयु वर्ग की जनसंख्या की तुलना में अधिक हो तो उसे जनसांख्यिकीय लाभांश कहते है यह तभी प्राप्त हो सकता है जब कार्यशील लोगो के अनुपात में वृद्धि होती रहे।

10. **स्त्री-पुरुष अनुपात :** भारत में स्त्री-पुरुष अनुपात गिरता रहा है। इसका कारण है लिंग विशेष का गर्भपात, बालिका शिशुओं की हत्या, बाल विवाह, पौष्टिक भोजन न मिलना। देश के विभिन्न हिस्सों में स्त्री-पुरुष अनुपात भिन्न-भिन्न है। केरल राज्य में सबसे अधिक है और हरियाणा, पंजाब चंड़ीगढ़ में सबसे कम है।

11. **बाल स्त्री** - पुरुष अनुपात में गिरावट आने के अनेक कारण हैं -

- शैशवावस्था में बच्चियों की देखभाल की घोर उपेक्षा, जिससे उनकी मृत्यु दरें ऊंची हो जाती हैं।
- लिंग - विशेष के गर्भपात जिससे बच्चियों को पैदा ही होने नहीं दिया जाता।
- बालिका शिशुओं की हत्या (अथवा धार्मिक या सांस्कृतिक अंधविश्वासों के कारण शैशवास्था में ही बच्चियों की हत्या)

12. क्षेत्रीय आधार पर भारत में नीचा बाल स्त्री-पुरुष अनुपात पाया जाता है।

- निम्नतम बाल स्त्री - पुरुष अनुपात भारत के सबसे अधिक समृद्ध क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
- पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, गुजरात और महाराष्ट्र अमीर राज्य है क्योंकि यहां पर प्रति व्यक्ति आय बहुत ऊंची है, लेकिन इन्हीं राज्यों में बाल स्त्री - पुरुष अनुपात बहुत निम्न है।
- इसलिए चयनात्मक गर्भपात की समस्या गरीबी या अज्ञान अथवा संसाधनों के अभाव के कारण उत्पन्न नहीं हुई है। समृद्ध परिवार अपेक्षाकृत कम - अक्सर एक या दो बच्चे उत्पन्न करना चाहते हैं। इसलिये वे अपनी पसंद के अनुसार ही लड़का या लड़की पैदा करना चुनते हैं।

13. **जनघनत्व :** जनघनत्व से तात्पर्य प्रति वर्ग कि० मी० मे निवास करने वाले मनुष्यों की संख्या से लगाया जाता है। भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण जनघनत्व भी बढ़ रहा है।

14. **हकदारी की पूर्ति का आभाव :** अमर्त्य सेन एवं अनेक विद्वानो ने दर्शाया है कि अकाल अनाज के उत्पादन में गिरावट आने के कारण ही नहीं पड़े अपितु हकदारी की पूर्ति का अभाव या भोजन खरीदने या किसी तरह से प्राप्त करने की लोगों की अक्षमता के कारण भी अकाल पड़ते रहे है। इसलिए सरकार ने भूख और भुखमरी की समस्या के समाधान के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (NREGA) नाम का एक कानून बनाया है।

15. **साक्षरता :** साक्षरता शक्ति सम्पन्न होने का साधन है। साक्षरता अर्थव्यवस्था में सुधार, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता व कल्याण कार्यों में सहभागिता बढ़ाती है। केरल साक्षरता में आगे है वहीं बिहार राज्य काफी पीछे है। अनुसूचित जाति व जन-जातियों में साक्षरता दर और भी नीची है।

16. **महामारी (Epidemic) :** महामारियों को बड़े पैमाने पर चलाए गए टीकाकरण कार्यक्रमों द्वारा नियंत्रित किया गया। किन्तु मलेरिया, क्षय रोग और पेचिस व दस्त की बीमारियां आज भी लोगों के लिये जानलेवा बनी हुई हैं।

17. जन्म दर एक ऐसी सामाजिक - सांस्कृतिक प्रघटना है जिसमें परिवर्तन अपेक्षाकृत धीमी गति से आता है।

    कम प्रजनन दर वाले राज्य - केरल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश

    ज्यादा प्रजनन दर वाले राज्य - बिहार, मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश

18. **ग्रामीण-नगरीय विभिन्नताएँ :** भारत को गाँवों का देश कहा जाता है। नगर ग्रामीणों के लिए आकर्षक स्थान बन रहे हैं। गाँव से लोग रोजगार की दृष्टि से नगरों की ओर पलायन कर रहे हैं।

    रेड़ियो, टेलीविजन, समाचार पत्र जैसे जनसंपर्क एवं जनसंचार के साधन अब ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के समक्ष नगरीय जीवन शैली तथा उपभोग के स्वरूपों की तस्वीरें पेश कर रहे हैं। परिणाम स्वरूप दूरदराज के गांवों में रहने वाले लोग नगरीय तड़क-भड़क और सुख-सुविधाओं से सुपरिचित हो जाते हैं उनमें भी वैसा ही उपभोगपूर्ण जीवन जीने की लालसा उत्पन्न हो जाती है।

19. **भारत की जनसंख्या नीति :** जनसंख्या नीति 1952

20. **राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम:**

    - जनसंख्या वृद्धि की दर धीमा करना।
    - जनस्वास्थ्य के मानक स्तरों में सुधार करना।
    - लोगों में जागरूकता लाना।

    राष्ट्रीय आपातकाल (1975-77):

    - जबरदस्ती वंध्यकरण
    - नसबंदी, नलिकाबंदी

21. आपातकाल के बाद राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम:

आपातकाल के बाद राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम का नाम बदलकर उसे राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम कहा जाने लगा और वध्यकरण के लिए अपनाए जाने वाले दबावकारी तरीकों को छोड़ दिया गया। अब इस कार्यक्रम के व्यापक आधार वाले सामाजिक-जनसांख्यिकीय उद्देश्य हैं। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 के अंतर्गत कुछ नए दिशानिर्देश तैयार किए गए हैं। 2017 में भारत सरकार ने इन सभी लक्ष्यों को राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति में नए लक्ष्यों के साथ निगमित कर लिया।

22. भारत की 15 वीं जनगणना 2011 के आँकड़े :-

- **स्त्री पुरुष अनुपात** : 943 : 1000
- **सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य** : उत्तर प्रदेश
- **न्यूनतम जनसंख्या वाला प्रदेश** : सिक्किम
- **अधिकतम मातृत्व मृत्यु दर वाला राज्य** : उत्तर प्रदेश
- **न्यूनतम मातृत्व मृत्यु दर वाला राज्य** : केरल
- **सर्वाधिक शिशु मृत्यु दर वाला राज्य** : मध्य प्रदेश
- **न्यूनतम शिशु मृत्यु दर वाला राज्य** : मणिपुर
- **साक्षरता** : पुरुष-80.9%, महिला-64.6%
- **सबसे बड़ा राज्य (क्षेत्रफल में)** : राजस्थान
- **सबसे छोटा राज्य (क्षेत्रफल में)** : गोवा

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

रिक्त स्थान भरो:-

1. जनसांख्यिकी का अध्ययन समाजशास्त्र के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है। वस्तुत: समाजशास्त्र के उद्‌भव और एक अलग अकादमिक विषय के रूप में इसकी स्थापना का श्रेय बहुत कुछ जनसांख्यिकी को ही जाता है।
   जनसंख्या का.....सुव्यवस्थित अध्ययन है।
   a) सांख्यिकी
   b) जनसांख्यिकी
   c) समाजशास्त्र
   d) अकादमिक

उत्तर **b)** जनसांख्यिकी

2. इस दर का अर्थ है बच्चे पैदा कर सकने की आयु (जो आमतौर पर 15 से 49 वर्ष की मानी जाती है) वाली 1000 स्त्रियों की इकाई के पीछे जीवित जन्मे बच्चों की संख्या। इस दर को.....कहा जाता है।

उत्तर **प्रजनन दर**

3. राष्ट्रीय आपातकाल की अवधि में परिवार नियोजन के कार्यक्रम को गहरा धक्का लगा।
   राष्ट्रीय आपातकाल की अवधि..... थी।

उत्तर **1975 - 76**

सही विकल्प चुनिए

4. जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत किसके द्वारा गढ़ा गया था?
   a) माल्थस b) कार्ल मार्क्स c) मैक्स वेबर d) एम एन श्रीनिवास

उत्तर **a) माल्थस**

5. भारत में जनगणना.....वर्ष में शुरू हुई थी।
   a) 2011 b) 1975 c) 1875 d) 1881

उत्तर **d) 1881**

बताएं कि दिया गया कथन सही है या गलत

6. एक वर्ष में प्रति हजार व्यक्तियों पर जीवित जन्में बच्चों की संख्या जन्म दर कहलाती है।

उत्तर **सही**

7. पराश्रितता अनुपात कार्यशील वर्ग के साथ आश्रित वर्ग का अनुपात है।

उत्तर **गलत**

दिए गए कथनों को ठीक करें -

8. राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम का नाम बदलकर राष्ट्रीय परिवार सहायता कार्यक्रम कर दिया गया।

उत्तर राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम का नाम बदलकर राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम कर दिया गया।

9. टीकाकरण और बेहतर स्वच्छता के कारण महामारियों को नियंत्रित नहीं किया गया है।

उत्तर टीकाकरण और बेहतर स्वच्छता के कारण महामारियों को नियंत्रित किया गया है।

10 जनसंख्या उस दर की तुलना में धीमी गति से बढ़ती है जिस दर पर मनुष्य के भरण-पोषण के साधन।

उत्तर जनसंख्या उस दर की तुलना में तेज गति से बढ़ती है जिस दर पर मनुष्य के भरण-पोषण के साधन।

11. भारत पहला देश है जिसने.....में अपनी जनसंख्या नीति की घोषणा की ?

A. 1950 B. 1951 C. 1952 D. 1953

उत्तर- C. 1952

12. जबरन नसबंदी कब और किसकी सरकार के काल में की गई ?

A. आपातकाल, काँग्रेस C. आपातकाल भाजपा

B. आपातकाल, जनता दल D. इनमे से कोई नही

उत्तर- A. आपातकाल, काँग्रेस

13. जनसांख्यिकी के अंतर्गत निम्नलिखित पहलू पर अध्ययन किया जाता है ?

A. जनसंख्या के आकार में परिवर्तन

B. जन्म, मृत्यु तथा प्रवास

C. स्त्री, पुरुष तथा अन्य आयु वर्ग के लोगो का अनुपात

D. उपरोक्त सभी

उत्तर- D. उपरोक्त सभी

14. जनसांख्यिकी के दो प्रकार कौन से है ?

A. आकारिक और नैतिक

B. आकारिक और सामाजिक

C. सामाजिक और सांस्कृतिक

D. आकरिक और सांस्कृतिक

उत्तर- B आकारिक और सामाजिक

15. भारत में जनगणना का प्रयास सबसे पहले किसने किया ?

A. मुगलों ने

C. दोनों ने

B. अंग्रेजो ने

D. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- B अंग्रेजो ने

16. जनसंख्या वृद्धि के तीन बुनियादी चरण किस सिद्धांत में बताए हुए है ?

A. जनसांख्यिकी संक्रमण का सिद्धांत में

B. माल्थस के सिद्धांत में

C. जनसंख्या विस्फोट सिद्धांत में

D. इनमे से कोई नहीं

उत्तर- A. जनसांख्यिकी संक्रमण का सिद्धांत में

17. भारत विश्व में.....सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है ?

A. पहला B. दूसरा C. तीसरा D. चौथा

उत्तर- B दूसरा

18. भारत में सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य.....है ?

A. केरल B. उत्तर प्रदेश C. मध्य प्रदेश D. इनमे से कोई नही

उत्तर- B उत्तर प्रदेश

19. भारत में सबसे अधिक क्षेत्रफल वाला राज्य ..... है ?

A. केरल B. उत्तर प्रदेश C. मध्य प्रदेश D. राजस्थान

उत्तर- D राजस्थान

20. भारत में सबसे कम क्षेत्रफल वाला राज्य.....है ?

A. गोवा B. उत्तर प्रदेश C. मध्य प्रदेश D. राजस्थान

उत्तर- A गोवा

2 अंक के प्रश्न

1. जनसांख्यिकी किसे कहते हैं?
2. आकारिक जनसांख्यिकी व सामाजिक जनसांख्यिकी में अंतर बताइए।
3. शिशु मृत्यु दर क्या है?
4. पराश्रित अनुपात का बढ़ना, उन देशों को क्यों चिंतित कर रहा है जिसमें वृद्धों की संख्या बढ़ रही हैं?
5. गिरती हुई पराश्रित अनुपात आर्थिक वृद्धि व समृद्धि का कारक माना जा रहा है क्यों?
6. अकाल के क्या कारण है?
7. उस प्रदेश का नाम बताइए जिसमें अभी भी (TFR) संपूर्ण प्रजनन दर बहुत अधिक है।
8. जनसांख्यिकीय आंकड़ों का महत्व बताइए।
9. भारत जनसांख्यिकीय लाभांश से कैसे लाभान्वित होता है?
10. बच्चे के लिंग का निर्धारण करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली तकनीक का नाम बताएं।
11. प्रतिस्थापन स्तर से क्या तात्पर्य है?
12. स्त्री पुरुष अनुपात से आप क्या समझते हैं?

4 अंक के प्रश्न

1. माल्थस के जनसंख्या के सिद्धांत की विवेचना कीजिए।
2. शिशु लिंग अनुपात गिरने के कारण लिखिए।

3. कम शिशु लिंग अनुपात की क्षेत्रीय विभिन्नता का वर्णन करें।

4. जेंडर, क्षेत्रों और सामाजिक समूहों की साक्षरता में बहुत अंतर होता है। समझाइए।

5. दिए गए गद्यांश को पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें

शिक्षित होने के लिए साक्षर होना जरूरी है और साक्षरता शक्ति सम्पन्न होने का महत्वपूर्ण साधन हैं। जनसंख्या जितनी अधिक साक्षर होगी आजीविका के विकल्पों के बारे में उसमें उतनी ही अधिक जागरुकता उत्पन्न होगी और लोग ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में उतना ही अधिक भाग ले सकेंगे। इसके अलावा साक्षरता से स्वास्थ्य के प्रति भी जागरुकता आती है और समुदाय के सदस्यों की सांस्कृतिक और आर्थिक कल्याण - कार्यों में सहभागिता बढ़ती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद साक्षरता के स्तरों में काफी सुधार आया है एवं हमारी जनसंख्या का दो तिहाई हिस्सा अब साक्षर है।

(i) साक्षरता.....है।

(a) एक कला

(b) पढ़ने और लिखने की क्षमता

(c) एक संस्कृति

(d) समुदाय

(ii) .....शिक्षा के लिए जरूरी है और शक्ति सम्पन्न होने का महत्वपूर्ण साधन है।

(a) साक्षरता

(b) स्कूल

(c) अर्थव्यवस्था

(d) समुदाय

(iii) हमारी जनसंख्या का लगभग .....हिस्सा अब साक्षर है ।

(a) एक तिहाई

(b) तीन तिहाई

(c) चार तिहाई

(d) दो तिहाई

(iv) स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद साक्षरता के स्तरों में ..... सुधार आया है

(a) अत्यधिक

(b) काफ़ी

(c) कम

(d) मोटे तौर पर ।

उत्तर (i) (b) पढ़ने और लिखने की क्षमता

(ii) (a) साक्षरता

(iii) (d) दो तिहाई

(iv) (b) काफ़ी

6. अकाल भी बढ़ती हुई मृत्यु दर के एक प्रमुख एवं पुनरावर्तक स्त्रोत थे। एक जमाना था जब अकाल व्यापक रूप से बार - बार पड़ते थे। उन दिनों अकाल पड़ने के कई कारण होते थे जिनमें से एक यह था कि जिन इलाकों में खेती वर्षा पर निर्भर रहती थी वहाँ वर्षा की कमी के कारण खेती की उपज कम होती थी जिससे लोग घोर गरीबी और कुपोषण की हालत में जीवन बिताने को मजबूर हो जाते थे। इसके अलावा परिवहन और संचार के साधनों की समुचित व्यवस्था न होने के कारण और राज्य की ओर से इस दिशा में पर्याप्त प्रयत्न न किए जाने के कारण भी अकाल पड़ते थे। किन्तु, जैसाकि अमर्त्य सेन एवं अनेक विदवानों ने दर्शाया है कि अकाल अनाज के उत्पादन में गिरावट आने के कारण ही नहीं पड़े बल्कि 'हकदारी की पूर्ति का अभाव' (failure of entitlements), अथवा भोजन खरीदने या और किसी तरह से प्राप्त करने की लोगों की अक्षमता के कारण भी अकाल पड़ते रहे हैं।

(a) विदवानों जैसे ..... और अन्य लोगों ने दिखाया है कि अकाल अनाज के उत्पादन में गिरावट आने के कारण ही नहीं पड़े।

(b) .....भी बढ़ती हुई मृत्यु दर के एक प्रमुख एवं पुनरावर्तक स्त्रोत थे।

(c) ....., अथवा भोजन खरीदने या और किसी तरह से प्राप्त करने की लोगों की अक्षमता के कारण भी अकाल पड़ते रहे हैं।

(d) .....और संचार के साधनों की समुचित व्यवस्था न होने के कारण और राज्य की ओर से इस दिशा में पर्याप्त प्रयत्न न किए जाने के कारण भी अकाल पड़ते थे।

उत्तर (a) अमर्त्य सेन

(b) अकाल

(c) हकदारी की पूर्ति का अभाव

(d) परिवहन

7 सारणी का अध्ययन करें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें ?

1. भारत की जनसंख्या जवान होने का क्या अर्थ है ?
2. देश की संपूर्ण जनसंख्या में 15 वर्ष से कम आयु वाले वर्ग का हिस्सा 1971 में कितना प्रतिशत था ?
3. 2011 में 15 - 59 आयु वर्ग में कितने प्रतिशत जनसंख्या थी ?
4. वर्ष 2026 में 0-14 आयु वर्ग का हिस्सा 2011 की तुलना में कितना प्रतिशत घट जाने का अनुमान है?

सारणी 2 : भारत की जनसंख्या की आयु संरचना, 1961-2026

वर्ष	आयु वर्ग			जोड़
	0-14 वर्ष	15-59 वर्ष	60 वर्ष से अधिक	
1961	41	53	6	100
1971	42	53	5	100
1981	40	54	6	100
1991	38	56	7	100
2001	34	59	7	100
2011	29	63	8	100
2026	23	64	12	100

टिप्पणी: आयु वर्ग के खानों में उनके हिस्सों का प्रतिशत दिया गया है, हो सकता है कि कहीं पूर्णांकन के कारण इन प्रतिशतांशों का जोड़ 100 न हो।

स्रोत : राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग के जनसंख्या प्रक्षेप विषयक तकनीकी समूह के आँकड़ों (1996 और 2006) पर आधारित

1996 की रिपोर्ट के वेबपृष्ठ http://populationcommission.nic.in/factsl.htm

उत्तर 1. भारत की जनसंख्या का जवान होने का अर्थ है - अधिकांश भारतीय युवावस्था में है। 1 अंक

2. देश की संपूर्ण जनसंख्या में 15 वर्ष से कम आयु वाले वर्ग का हिस्सा 1971 में 42 प्रतिशत था । 1 अंक

3. 2011 में 15 - 59 आयु वर्ग में 63 प्रतिशत जनसंख्या थी । 1 अंक

4. वर्ष 2026 में 0-14 आय वर्ग का हिस्सा 2011 की तुलना में 6 प्रतिशत घट जाने का अनुमान है। 1 अंक

6 अंक के प्रश्न

1. जनसांख्यिकी संक्रमण के सिद्धांत का वर्णन करें।
2. ग्रामीणों के लिए नगर क्यों आकर्षण के केन्द्र बन रहे हैं।
3. भारतीय जनसांख्यिकी उपलब्धियाँ बताएँ।
4. परिवार नियोजन कार्यक्रम की कामयाबी व भविष्य के बारे में लिखें।
5. राष्ट्रीय समाज जनसांख्यिकी के उद्देश्य-2010 के बारे में बताएं (6 वाक्य)
6. भारत के कौन से राज्य प्रतिस्थापन दर पर पहुँच चुके हैं या उसके नजदीक हैं? कौन सा राज्य प्रजनन दर में सबसे ऊँचा है? आपके विचार से इस विभिन्नता के क्या कारण हैं?
7. जनसांख्यिकी संरचना से आप क्या समझते हैं? यह आर्थिक उन्नति व संवृद्धि के लिए किस प्रकार सहायक हैं?
8. लिंग अनुपात क्या है? घटते हुए लिंग अनुपात के क्या प्रभाव होते हैं, क्या आप समझते हैं कि माता-पिता पुत्री की अपेक्षा पुत्र को पसन्द करते हैं? इसके लिए किन कारणों को जिम्मेदार मानते हैं?
9. परिवार नियोजन कार्यक्रम के आपात काल के समय (1975-76) नाकाम होने के क्या कारण थे? वर्णन कीजिए।
10. भारत की जनसंख्या की आयु संरचना पर चर्चा करें
11. दिए गए गद्यांश को पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें

    कभी - कभी लोग शहरी जीवन को कुछ सामाजिक कारणों से भी पसंद करते हैं जैसे कि शहरों में गुमनामी की जिंदगी जी जा सकती है। इसके अलावा , यह तथ्य कि नगरीय जीवन में अपरिचितों से संपर्क होता रहता है कुछ भिन्न कारणों से लाभकारी साबित हो सकता है। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों जैसे सामाजिक रूप से पीड़ित समूहों को शहरी रहन - सहन कुछ हद तक रोज़मर्रा की उस अपमानजनक स्थिति से बचाता है जो गाँवों में भुगतनी पड़ती है जहाँ हर कोई उनकी जाति से उन्हें पहचानता है। शहरी जीवन की गुमनामी के कारण सामाजिक दृष्टि से प्रभुत्वशाली ग्रामीण समूहों के अपेक्षाकृत गरीब लोग शहर में जाकर कोई भी नीचा समझा जाने वाले काम करने से नहीं हिचकिचाते जिसे वे गाँव में रहते हुए बदनामी के डर से नहीं कर सकते थे। इन सभी कारणों से शहर ग्रामीणों के

लिए आकर्षक गंतव्य बन गए हैं। दिन - पर - दिन बढ़ते जा रहे शहर जनसंख्या के इस प्रवाह के प्रमाण हैं। स्वातंत्र्योतर काल में नगरीकरण की तेज़ रफ्तार से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है।

1. गुमनामी से आप क्या समझते हो? (2)

2. लोग शहरी जीवन को क्यों पसंद करते हैं? (4)

12 'स्त्री-पुरुष अनुपात' का क्या अर्थ है ? एक गिरते हुए स्त्री-पुरुष अनुपात के क्या निहितार्थ हैं? क्या आप यह महसूस करते हैं कि माता-पिता आज भी बेटियों के बजाय बेटों को अधिक पसंद करते हैं ? आपकी राय में इस पसंद के क्या-क्या कारण हो सकते हैं ?

उत्तर **स्त्री -पुरुष अनुपात का अर्थ** - 1 अंक

स्त्री-पुरुष अनुपात का अर्थ है कि किसी क्षेत्र विशेष में एक निश्चित अवधि के दौरान प्रति 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या कम है।

एक गिरते हुए स्त्री-पुरुष अनुपात के निम्नलिखित निहितार्थ हैं 2 अंक

(i) पुरुषों को स्त्रियों की तुलना में अधिक महत्त्व प्रदान किया जाना ।

(ii) बेटे को अधिमान्यता अर्थात अधिक पसंद के कारण बालिका शिशुओं की उपेक्षा किया जाना ।

(iii) लिंग-विशेष के गर्भपात के कारण बच्चियों को पैदा ही नहीं होने दिया जाता।

(iv) बालिका शिशुओं की हत्या तथा आधुनिक तथा चिकित्सा की सहायता से गर्भावस्था की प्रारंभिक स्थितियों में गर्भस्थ शिशु के लिंग के बारे में पता लगाया जा सकता है।

माता-पिता का बेटे-बेटियों के प्रति दृष्टिकोण 2 अक

(i) माता-पिता का बेटियों के बजाय बेटों को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

(ii) सामाजिक चिंतन तथा झुकाव अभी भी बेटों की तरफ है।

बेटों के लिए पसंद के कारण - 1 अक

(i) बेटों के लिए सामाजिक पूर्वाग्रह

(ii) धार्मिक कारण

(iii) वंश को आगे बढ़ाने में बेटों की भूमिका

नोट : छात्र उत्तर लिखते समय इन या इन जैसे बिंदुओं को विस्तार से लिखे

अध्याय - 3

सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन

मुख्य बिन्दु

1. जनसंख्या सिर्फ अलग-अलग असंबंधित व्यक्तियों का जमघट नहीं है। परन्तु यह विभिन्न प्रकार के आपस में संबंधित वर्गों व समुदाय से बना समाज है।
2. भारतीय समाज की तीन प्रमुख संस्थाएँ - जाति, जनजाति, परिवार।
3. जाति भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली एक सामाजिक संस्था है जो भारत में हजारों सालों से प्रचलित है। हालांकि जाति हिंदू समाज की एक संस्थात्मक विशेषता है परंतु यह भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले धार्मिक समुदायों में भी पाई जाती है, खासकर मुसलमानों, ईसाइयों और सिखों में।

- वर्ण का अर्थ 'रंग' होता है। भारतीय समाज में चार वर्ण माने गए हैं - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जाति को क्षेत्रीय या स्थानीय उपवर्गीकरण के रूप में समझा जा सकता है। जाति एक व्यापक शब्द है जो किसी वंश किस्म को संबोधित करने के लिए किया जाता है। इसमें पेड़-पौधे, जीव-जन्तु तथा मनुष्य भी शामिल हैं।
- वर्ण और जाति में अन्तर
    1. शाब्दिक अर्थो में अन्तर
    2. वर्ण कर्म प्रधान है और जाति जन्म प्रधान है।
    3. वर्ण व्यवस्था लचीली है और जाति व्यवस्था कठोर है।
    4. वर्णो की संख्या 4 है जबकि जातियों की संख्या हजारों में है। (लगभग 3000 जातियां)
- वैदिक काल में जाति व्यवस्था बहुत विस्तृत तथा कठोर नहीं थी।
- लेकिन वैदिक काल के बाद यह व्यवस्था बहुत कठोर हो गई। जाति जन्म से निर्धारित होने लगी। विवाह, खान-पान आदि के कठोर नियम बन गए। व्यवसाय को जाति से जोड़ दिया गया जो वंशानुगत थे, इसे एक सीढ़ीनुमा व्यवस्था बना दिया, जो ऊपर से नीचे जाती है।

- जाति की सामान्य विशेषताएं:-

  1. जन्म से निर्धारण

  2. विवाह सम्बंधी कठोर नियम : जाति अपने सदस्यों पर विवाह सम्बंधी कठोर नियम लागू करती है। जाति समूह सजातीय होते हैं अर्थात वह अपनी जाति समूह में ही हो सकते हैं।

  3. जाति अपने सदस्यों पर खान-पान सम्बंधी नियम लागू करती है। किस प्रकार का खाना खा सकते हैं और किस प्रकार का नहीं। किसके साथ खाना बांटकर खाया जा सकता है और किसके साथ नहीं, यह सब जाति संस्था द्वारा निर्धारित होता है।

  4. जाति एक खंडात्मक संगठन है अर्थात जातियों में भी उपजातियां पाई जाती हैं।

  5. जाति अधिक्रम पर आधारित व्यवस्था है। जाति व्यवस्था में प्रत्येक जाति को एक निर्धारित स्थान प्राप्त होता है।

  6. जाति व्यवस्था में व्यवसाय वंशानुगत होते हैं अर्थात इसमें व्यवसाय चयन पर रोक है।

- जाति व्यवस्था को सिद्धांतों के दो समुच्चयों के मिश्रण के रूप में समझा जा सकता है।

  1. भिन्नता व अलगाववाद 2. सम्पूर्णता व अधिक्रम

  (i) प्रत्येक जाति अन्य जाति से भिन्न है। इन नियमों में शादी, खान-पान एवं सामाजिक अन्त:क्रिया से लेकर व्यवसाय तक के नियम शामिल हैं।

  (ii) पृथक जातियों का कोई व्यक्तिगत अस्तित्व नहीं है और सभी जातियां मिलकर ही समाज को संपूर्णता प्रदान करती हैं।

- श्रेणी अधिक्रम में जातियों का आधार- 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' होता है। वे जातियाँ शुद्ध या पवित्र मानी जाती है जो कर्मकाण्डों और धार्मिक कृत्यों में संलग्न रहती हैं। इसके विपरीत असंस्कारित जातियाँ अशुद्ध या अपवित्र मानी जाती हैं।

4. **उपनिवेशवाद तथा जाति व्यवस्था :** वर्तमान काल में जाति पर औपनिवेशिक काल और स्वतंत्रता के बाद भी बहुत परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं जिन्होंने जाति व्यवस्था के रूप में एक मजबूत आधार प्रदान किया। अंग्रेजों ने देश पर कुशलतापूर्वक शासन करने के लिए जाति की जटिलताओं को समझने के लिए कई महत्वपूर्ण

कदम उठाए जिसमें से सबसे महत्वपूर्ण कदम जनगणना के रूप में उठाया गया। जनगणना को 1860 के दशक में प्रारंभ किया गया परंतु 1881 में पहली नियमित जनगणना की गई और इसके बाद नियमित रूप से प्रत्येक 10 वर्ष पश्चात जनगणना कराई जाने लगी। 1901 में हरबर्ट रिजले के निर्देशन में कराई गई जनगणना में जातियों और उसके सामाजिक अधिक्रम के बारे में जानकारी एकत्रित की गई।

भूराजस्व व्यवस्था व उच्च जातियों को वैध मान्यता दी गई।

प्रशासन ने पददलित जातियों, जिन्हें उन दिनों दलित वर्ग कहा जाता था, के कल्याण में भी रूचि ली।

भारत सरकार का अधिनियत - 1935, में अनुसूचित जाति व जनजाति को कानूनी मान्यता दी गई। इसमें उन जातियों को शामिल किया गया जो औपनिवेशिक काल में सबसे निम्न थी। इनके कल्याण की योजनाएँ बनीं।

5. **जाति का समकालीन रूप :** आजाद भारत में राष्ट्रवादी आन्दोलन हुए, जिनमें दलितों को संगठित किया गया। ज्योतिबा फूले, पेरियार, बाबा अम्बेडकर इन आन्दोलनों के अग्रणी थे।

- राज्य के कानून जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध थे। इसके लिए कुछ ठोस कदम उठाए गए जैसे अनुसूचित जाति तथा जनजाति को आरक्षण, आधुनिक उद्योगों में जाति प्रथा नहीं है, शहरीकरण द्वारा जाति प्रथा कमजोर हुई है।
- सांस्कृतिक व घरेलू क्षेत्रों में जाति सुदृढ़ सिद्ध हुई। अंतर्विवाह, आधुनिकीकरण व परिवर्तन से भी अप्रभावित रही पर कुछ लचीली हो गई।

6. **संस्कृतिकरण :** ऐसी प्रक्रिया जिसके द्वारा (आमतौर पर मध्यम निम्न) निम्न जाति के सदस्य उच्च जाति की धार्मिक क्रियाएँ, घरेलू या सामाजिक परिपाटियों को अपनाते हैं, संस्कृतिकरण कहलाती है। एम.एन. श्री निवास ने संस्कृतिकरण व प्रबल जाति की संकल्पना बनाई।

   प्रबल जाति : वह जाति जिसकी संख्या बड़ी होती है, भूमि के अधिकार होते हैं तथा राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक रूप से प्रबल होते हैं, प्रबल जाति कहलाती है। बिहार और उत्तर प्रदेश के यादव, कर्नाटक के वोक्कलिंग, आंध्रप्रदेश के रेड्डी और खम्मा लोग, महाराष्ट्र के मराठे, पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाट और गुजरात के पाटीदार ये प्रबल जातियों के उदाहरण हैं।

7. समकालीन दौर में जाति व्यवस्था उच्च जातियों, नगरीय मध्यम व उच्च वर्गों के लिए अदृश्य होती जा रही है।

- आज विशेषकर शहरों में विभिन्न जातियों के लोग अच्छी व तकनीकी शिक्षा-योग्यता पाकर एक विशेष वर्ग में परिवर्तित हो गए है। वे अभिजात वर्ग कहलाते है। राजनीति और उद्योग व्यापार में भी इन जातियों का वर्चस्व बढ़ने लगा है। इस प्रकार हम कह सकते है कि अभिजात वर्ग के सदस्यों की मूल जाति अदृश्य हो गई है।

  दूसरी ओर अनुसूचित जातियाँ, जनजातियाँ और पिछडी जातियाँ सरकारी नीतियों के तहत आरक्षण का लाभ प्राप्त कर उच्च स्तर की नौकरियों में और उच्च शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश पा रही है। इस प्रकार हम कह सकते है कि आरक्षण का लाभ पाने के कारण जाति अदृश्य हो जाती है।

8. **जनजातीय समुदाय :** जनजातियाँ ऐसे समुदाय थे जो किसी लिखित धर्मग्रन्थ के अनुसार किसी धर्म का पालन नहीं करते थे; उनमें जाति जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी; न ही वे हिन्दू थे और न ही किसान।

- **जाति और जनजाति में अन्तर**

जाति	जनजाति
1. शुद्धता और शुद्धता की धारणा पर आधारित है।	1. नातेदारी पर आधारित सामाजिक संगठन है।
2. धर्म में विश्वास, लिखित धर्म ग्रंथ मिलते हैं।	2. जनजाति का कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं है।
3. जाति एक अधिक्रमित संगठन है।	3. जनजाति समतावादी संगठन है।

- **जनजातीय समाजों का वर्गीकरण :**

1. **स्थायी विशेषक :** इसमें क्षेत्र, भाषा, शारीरिक गठन सम्मिलित हैं।

2. **अर्जित विशेषक :** जनजातियों में जीवन यापन के साधन तथा हिन्दू समाज की मुख्य धारा से जुड़ना है।

जनजातियाँ वनों में पृथक रहने वाले आदिम समुदाय नहीं

कुछ विद्वानों ने जनजातियों को ऐसी द्वितीयक परिघटना माना जो शोषणात्मक और उपनिवेशवादी संपर्क के कारण अस्तित्व में आई। आदिवासी सदा ही इतने पीड़ित समूह नहीं थे कि जितने वह आज हैं। मध्य भारत में अनेक गोंड राज्य रहे हैं जैसे, गढ़ मांडला अथवा चांदा। आदिवासी लोग अक्सर अपनी आक्रामक क्षमता और स्थानीय सैन्य दलों में अपनी सेवाओं के माध्यम से मैदानी इलाकों पर अपने प्रभुत्व का प्रयोग करते रहे हैं। कुछ आदिवासी समुदाय व्यापार भी करते थे। जिनके अंतर्गत वे वन्य उत्पाद, नमक और हाथी बेचा करते थे। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने जनजातीय समाजों को मुख्यधारा वाले समाज के संपर्क में ला दिया। जनजातीय समूह नए संपर्क में आए अन्य लोगों से अपने आपकों अलग दर्शाने के लिए स्वयं को जनजाति के रूप में परिभाषित करने लगते हैं।

जनजातियों का वर्गीकरण

स्थायी विशेषक

भाषा

1) भारतीय आर्य परिवार
2) द्रविड़ परिवार
3) आस्ट्रिक
4) तिब्बती बर्मी

शारीरिक प्रजातीय आधार पर

1) नीग्रिटो
2) आर्स्ट्रेलॉइड
3) मंगोलॉइड
4) द्रविड़
5) आर्य

क्षेत्र

1) 85% मध्य भारत में निवास करते हैं
2) 15% उत्तर-पूर्वी राज्यों में निवास करते हैं।

आकार के आधार पर जनसंख्या

बड़ी जनसंख्या वाली जनजातियॉ

1) गोंड
2) भील
3) संथाल
4) ओरांव
5) मीना
6) बोडो
7) मुंडा

सबसे छोटी जनसंख्या वाली जनजाति

1) अण्डमानी जनजाति जारवा

अर्जित विशेषक

आजीविका के साधन

1) मछुआ
2) खाद्य संग्राहक
3) आखेटक (शिकारी)
3) झूम खेती करने वाले
4) कृषक
5) बागान तथा औद्योगिक कामगार

हिन्दू समाज में समावेश

मुख्यधारा के समुदायों का जनजातियों के प्रति दृष्टिकोण

- जनजातियों को राजनीतिक तथा आर्थिक मोर्चे पर साहूकारों तथा महाजनों के दमनकारी कुचक्रों को सहना पड़ा। 1940 के दशक के दौरान पृथक्करण बनाम एकीकरण विषय पर बहस चली तो यह तस्वीरें सामने आई।

  पृथक्करण : कुछ विद्वानों का मानना था कि जनजातियों की गैर जनजातीय समुदाय से रक्षा की जानी चाहिए। क्योंकि ये सभी लोग जनजातियों का अलग अस्तित्व मिटाकर उन्हें भूमिहीन श्रमिक बनाना चाहते हैं।

  एकीकरण : कुछ विद्वानों का मत था कि जनजातियों के विकास पर ध्यान देना चाहिए।

राष्ट्रीय विकास बनाम जनजातीय विकास

- बड़ी-बड़ी परियोजनाओं के परिणाम स्वरूप जनजातीय समुदाय बुरी तरह प्रभावित हुए। बड़े-बड़े बांध बनाए गए, कारखाने स्थापित किए गए और खानों की खुदाई शुरु की गई। इस प्रकार के विकास से जनजातियों की हानि की कीमत पर मुख्यध ारा के लोग लाभान्वित हुए। अधिकांश जनजातीय समुदाय वनों पर आश्रित थे, इसलिए वन छिन जाने से उन्हें भारी धक्का लगा। जनजातीय संस्कृति विलुप्त हो रही है। विकास की आड़ में बड़े पैमाने पर उन्हें उजाड़ा गया है।
- दो प्रकार के मुद्दों ने जनजातीय आन्दोलन को तूल देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है- आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण तथा नृजातीय सांस्कृतिक पहचान ये दोनों साथ-साथ चल सकते हैं, परन्तु जनजातीय समाज में विभिन्नताएँ होने से ये अलग भी हो सकते हैं।
- एक लंबे संघर्ष के बाद झारखंड और छत्तीसगढ़ को अलग-अलग राज्य का दर्जा मिल गया है। सरकार द्वारा उठाए गए कठोर कदम और फिर उनसे भड़के विद्रोहों ने पूर्वोत्तर राज्यों की अर्थव्यवस्था, संस्कृति और समाज को भारी हानि पहुँचाई है। एक अन्य महत्वपूर्ण विकास जनजातीय समुदायों में शनैः-शनैः एक शिक्षित मध्य वर्ग का उद्‌भव है।

9. **परिवार :** सदस्यों का वह समूह जो रक्त, विवाह या गौत्र संबंधों पर नातेदारों से जुड़ा होता है।

(क) मूल या एकाकी परिवार (माता पिता और उनके बच्चे।)

(ख) विस्तृत या संयुक्त परिवार (दो या अधिक पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते हैं।)

- **निवास स्थान के आधार पर**

(अ) पितृस्थानीय परिवार : नवविवाहित जोड़ा वर के माता-पिता के साथ रहता है।

(ब) मातृस्थानीय परिवार : नवविवाहित जोड़ा वधु के माता-पिता के साथ रहता है।

- **वंश के आधार पर**

(अ) पितृवंशीय परिवार : जायदाद/वंश पिता से पुत्र को मिलता है।

(ब) मातृवंशीय परिवार : जायदाद/वंश माँ से बेटी को मिलती है।

- **सत्ता के आधार पर**

(अ) पितृसत्तात्मक परिवार : पुरुषों की सत्ता व प्रभुत्व होता है।

(ब) मातृसत्तात्मक परिवार : स्त्रियाँ समान प्रभुत्वकारी भूमिका निभाती है।

- सामाजिक संरचना में बदलावों के परिणामस्वरूप परिवारिक ढांचे में बदलाव होता है। उदाहरण के तौर पर, पहाड़ी क्षेत्रों के ग्रामीण अंचलो से रोजगार की तलाश में पुरुषों को शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन जिससे महिला प्रधान परिवारों की संख्या काफी बढ़ गई है।

  उद्योगों में नियुक्त युवा अभिभावकों का कार्यभार अत्याधिक बढ़ जाने से उन्हे अपने बच्चों की देखभाल के लिए अपने बूढ़े माता-पिता को अपने पास बुलाना पड़ता है। जिससे शहरों में बूढ़े माता-पिता की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। लोग व्यक्तिवादी हो गए है। युवा वर्ग अपने अभिभावकों की पसंद की बजाय अपनी पसंद से विवाह/जीवन साथी का चुनाव करते है।

- खासी जनजाति और मातृवंशीय संगठन खासी जनजाति मातृवंशानुक्रम संगठन का प्रतीक है। मातृवंशीय परम्परा के अनुसार खासी परिवार में विवाह के बाद पति अपनी पत्नी के घर रहता है।

  वंश परम्परा के अनुसार उत्तराधिकार भी पुत्र को प्राप्त न होकर पुत्री को ही प्राप्त होता है। खासी लोगों में माता का भाई (यानी मामा) माता की पुश्तैनी सम्पत्ति की देख रेख करता है। अर्थात सम्पत्ति पर नियन्त्रण का अधिकार माता के भाई

को दिया गया है। इस स्थिति में वह स्त्री उत्तराधिकार के रूप में मिली सम्पत्ति का अपने ढंग से उपयोग नहीं कर पाती है। इस प्रकार खासी जनजाति में मामा की अप्रत्यक्ष सत्ता संघर्ष को जन्म देती है। खासी पुरुषों को दोहरी भूमिका निभानी पड़ती है। एक ओर तो खासी पुरुष अपनी बहन की पुत्री की सम्पत्ति की रक्षा करता है और दूसरी ओर उस पर अपनी पत्नी तथा बच्चों के लालन पालन का भी उत्तरदायित्व होता है। दोनों पक्षों की स्त्रियाँ बुरी तरह प्रभावित होती है। मातृवंशीय व्यवस्था के बावजूद खासी समाज में शक्ति व सत्ता पुरुषों के ही आसपास घूमती है।

10. **नातेदारी :** नातेदारी व्यवस्था में समाज द्वारा मान्यता प्राप्त वे संबंध आते हैं जो अनुमानित और रक्त संबंधों पर आधारित हों - जैसे चाचा, मामा आदि।

नातेदारी के प्रकार :

(अ) विवाह मूलक नातेदारी : जैसे- साला-साली, सास-ससुर, देवर, भाभी आदि।

(ब) रक्तमूलक नातेदारी : जैसे- माता-पिता, भाई-बहन आदि।

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

1. कथन सही करें:

(i) वर्ण और जाति में कोई अंतर नहीं है।

उ0- वर्ण और जाति में अंतर है।

(ii) पितृसत्तात्मक परिवार में महिलाओं की सत्ता व प्रभुत्व होता है।

उ0-पितृसत्तात्मक परिवार में महिलाओं की सत्ता व प्रभुत्व होता है।

(iii) खासी जनजाति में महिलाओं को गहन भूमिका द्वंद्व का सामना करना पड़ता है।

उ0-खासी जनजाति में पुरूषों को गहन भूमिका द्वंद्व का सामना करना पड़ता है।

(iv) एक लंबे संघर्ष के बाद झारखंड व छत्तीसगढ़ को अलग राज्यों का दर्जा **नहीं** मिल पाया।

उ0-एक लंबे संघर्ष के बाद झारखंड व छत्तीसगढ़ को अलग राज्यों का दर्जा मिल पाया।

2. संस्कृतिकरण और प्रबल जाति की अवधारणा किसके द्वारा की गई ?

(i) ज्योतिबा फुले (ii) पेरियार (iii) एम एन श्रीनिवास (iv) अय्यकल्ली

उ0 : (iii) एम. एन. श्रीनिवास

3. जाति के कठोर नियम हैं

(i) विवाह (ii) खान-पान (iii) व्यवसाय (iv) उपरोक्त तीनों

उ0 : (iv) उपरोक्त तीनों

4. जाति.....से निर्धारित होती है।

उ0 : जन्म

5. प्रबल जाति के उदाहरण हैं

(i) जाट (ii) यादव (iii) पाटीदार (iv) उपरोक्त तीनों

उ0- (iv) उपरोक्त तीनों

6. महात्मा गांधी और.....दोनों ने ही 1920 के दशक से अस्पृश्यता के विरुद्ध अपने आंदोलन शुरू किये थे।

उ0-बाबा साहेब अंबेडकर

7. धार्मिक दृष्टि से जाति का अधिक्रम.....और..... पर आधारित होता है।

उ0-शुद्धता और अशुद्धता

8. किसने कहा "जाति एक बंद वर्ग" है?

(i) श्रीनिवास (ii) घूर्ये (iii) मुखर्जी (iv) मजूमदार

उ0- (iv) मजूमदार

9. क्या यह कथन सत्य है या असत्य?

(i) जनजातीय जनसंख्या का लगभग 85% भाग उत्तर भारत में रहता है।

उ0-असत्य

(ii) जनजाति बहुल राज्य झारखंड को मध्य प्रदेश राज्य से अलग करके गठित किया गया है।

उ0-असत्य

(iii) विस्तृत परिवार को ही सामान्य तौर पर संयुक्त परिवार कहा जाता है।

उ0-सत्य

10. जाति भारतीय समाज की संस्था है ?

A- प्राचीन B- आधुनिक

Ans- A प्राचीन

11. समाज में चार श्रेणियों का विभाजन ''ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र'' क्या कहलाता है ?

A- जाति B- वर्ण

C- समुदाय D- संघ

Ans- B वर्ण

12. वर्ण विभाजन में कौन शामिल नहीं थे ?

A- जाति बहिष्कृत विदेशी B- दास

C- युद्धों में पराजित लोग D- उपरोक्त सभी

Ans- D उपरोक्त सभी

13. निम्न में से कौन सा वर्गीकरण क्षेत्रीय है ?

A- वर्ण के आधार पर वर्गीकरण

B- जाति के आधार पर वर्गीकरण

C- पंचम वर्ग का वर्गीकरण

D- उपरोक्त सभी

Ans- B जाति के आधार पर वर्गीकरण

14. निम्नलिखित में से जाति से संबंधित कौन सा कथन सत्य नही है ?

A- जाति, जन्म से निर्धारित होती है

B- जाति की सदस्यता के साथ विवाह संबंधी कठोर नियम शामिल होते हैं

C- जातियों में उप विभाजन भी होता है

D- जातियों को बदला जा सकता है

Ans- D जातियों को बदला जा सकता है

15. अयनकल्ली जो की एक दलित एवं निम्न जातियों के नेता थे इनका जन्म किस राज्य में हुआ था ?

A- केरल

B- तमिलनाडु

C- कर्नाटक

D- गुजरात

Ans- A केरल

16. सत्यशोधक समाज की स्थापना किसने की थी ?

A - अयंकल्ली ने

B - जोतिराव फुले ने

C - भीमराव अम्बेडकर ने

D - गांधी जी ने

Ans- B जोतिराव फुले ने

17. निम्न में से कौन देश में बालिकाओं के लिए बने पहले विद्यालय की पहली प्रधान अध्यापिका थी ?

A- ज्योतिबा राव फुले

B- सावित्री बाई फुले

C- कर्पूरी ठाकुर

D- सरोजिनी नायडू

Ans- B सावित्री बाई फुले

18. किस भारत सरकार अधिनियम के द्वारा अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति शब्द अस्तित्व में आए ?

A- भारत सरकार अधिनियम 1858

B- भारत सरकार अधिनियम 1919

C- भारत सरकार अधिनियम 1935

D- इनमें से कोई नही

Ans- C भारत सरकार अधिनियम 1935

19. अस्पृश्य या अछूत जातियों को किस वर्ग में रखा गया ?

A - अनुसूचित जाति

B- अनुसूचित जनजाति

C- अन्य पिछड़ा वर्ग

D- उपरोक्त सभी

Ans- A अनुसूचित जाति

20. सबके लिए एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर का नारा किसने दिया ?

A- श्री नारायण गुरु

B- ज्योतिराव फुले

C- ओमप्रकाश वाल्मीकि

D- इनमें से कोई नही

Ans- A श्री नारायण गुरु

2 अंक के प्रश्न

1. जाति क्या है?
2. प्रबल जाति क्या होती है?
3. वर्ण व जाति में क्या अन्तर है?
4. चार प्रबल जातियों के नाम लिखें।
5. जनजाति की परिभाषा बताईये।
6. पृथक्करण बनाम एकीकरण विषय पर वाद-विवाद का वर्णन करें।
7. उन दो कारणों को बताइये जो जनजाति के विकास में सहायक हैं।
8. एकल व संयुक्त परिवार में अन्तर बताइये।
9. नातेदारी की परिभाषा लिखें।

4 अंक के प्रश्न

1. जाति की विशेषताएँ बताइये।
2. जाति व जनजाति में क्या अन्तर है?
3. जनजातीय पहचान को प्रभावित करने वाले कारकों को लिखिए।
4. संस्कृतिकरण किसे कहते हैं?
5. जाति व्यवस्था में पृथक्करण व अधिक्रम की क्या भूमिका है?
6. वे कौन से नियम है जिसका पालन करने के लिए जाति व्यवस्था बाध्य करती है?
7. भारत में जनजातियों का वर्गीकरण किस प्रकार किया गया है?
8. सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तन पारिवारिक संरचना में किस प्रकार परिवर्तन ला सकते हैं? उदाहरण देकर वर्णन करें?
9. परिवार के विभिन्न प्रकार बताइये।

10. नीचे दिये गये अनुच्छेद को ध्यान से पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

दो प्रकार के मुद्दों ने जनजातीय आंदोलन को तूल देने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक प्रकार के मुद्दे वे हैं जो भूमि तथा विशेष रूप से वनों जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण से संबंधित हैं और दूसरे प्रकार के मुद्दों का संबंध नृजातीय सांस्कृतिक पहचान मामलों से है। यह दो मुद्दे अक्सर साथ-साथ चल सकते हैं, परंतु जनजातीय समाज में विभिन्नताएं होने से ये अलग-अलग भी हो सकते हैं। जनजातीय समाजों में मध्यवर्गीय लोगों द्वारा अपनी जनजातीय पहचान का दावा किए जाने के कारण उन कारणों से भिन्न हो सकते हैं जिनके लिए गरीब और अशिक्षित जनजातीय लोग जनजातीय आंदोलनों में हिस्सा लेते हैं। जैसाकि किसी भी अन्य समुदाय के साथ होता है। इस प्रकार की आंतरिक गतिशीलताओं और बाह्य शक्तियों के बीच संबंध ही इनके भविष्य को रूप प्रदान करेंगे।

(i) जनजातीय समुदाय क्या है?

(ii) जनजातीय समाज से संबंधित मुद्दे.....और.....हैं।

(iii) जनजातीय समाजों में.....लोगों द्वारा जनजातीय आंदोलन में भाग लेने के मुद्दे अन्य गरीब लोगों से अलग हैं।

(iv) नृजातीय सांस्कृतिक पहचान क्या है?

11. नीचे दिये गये अनुच्छेद को ध्यान से पढ़े और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

खासी मातृवंश पुरुषों के लिए गहन भूमिका द्वंद्व की स्थिति उत्पन्न करता है। वो अपनी पत्नी और बच्चों एवं जन्म के घर की जिम्मेदारियों के बीच बंट जाते हैं। एक तरह से भूमिका द्वंद्व द्वारा उत्पन्न इस तनाव का असर खासी स्त्रियों पर बहुत ज्यादा पड़ता है। एक स्त्री कभी सुनिश्चित नहीं कर सकती कि उसके पति को उसकी बहन का घर ज्यादा अच्छा लगता है या अपना स्वयं का। उसी तरह बहन सोचेगी कि शादीशुदा भाई अपनी बहन के प्रति जिम्मेदारियों को भूल जाएगा।

खासी मातृवंशीय व्यवस्था में उत्पन्न भूमिका द्वंद्व से पुरुषों की बजाय अंततः स्त्रियां ज्यादा गहन रूप से प्रभावित होती हैं, सिर्फ इसलिए नहीं कि क्योंकि पुरुष अधिकारों के स्वामी हैं और स्त्रियां इससे वंचित हैं पर इसलिए भी क्योंकि समाज पुरुषों को नियम तोड़ने पर उन्हें कम सजा देता है या नजर अंदाज कर देता है। खासी समाज में स्त्रियों के पास सिर्फ नाम का अधिकार होता है-असली अधिकार पुरुषों के हाथ में होता है। हाँ इतना जरूर है कि यह व्यवस्था पुरुष के मातृ नातेदार की तरफ झुकी हुई है न कि पितृ नातेदार की तरफ।

(i) मातृवंशीय व्यवस्था क्या है?

(ii) .....और.....दो प्रकार की नातेदारी होती है।

(iii) भारत में..... समुदाय में मातृवंशीय व्यवस्था पाई जाती है।

(iv) खासी समुदाय में पुरुषों को किस प्रकार की भूमिका द्वंद्व का सामना करना पड़ता है?

6 अंक के प्रश्न

1. जाति व्यवस्था के सिद्धान्तों का पूर्ण विवरण दें।
2. उपनिवेशवाद ने भारत में जाति व्यवस्था को किस प्रकार मजबूत किया?
3. राष्ट्रीय विकास बनाम जनजातीय विकास की विवेचना करें।
4. उन विशेषताओं का वर्णन करें जो जनजातीय समाज को वर्गीकृत करते हैं।
5. नीचे दिये गये अनुच्छेद को ध्यान से पढ़ें और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।

   समकालीन दौर में जाति व्यवस्था में हुए अत्यंत महत्वपूर्ण फिर भी विरोधाभासी परिवर्तनों में से एक परिवर्तन यह है कि अब जाति व्यवस्था उच्च जातियों, नगरीय मध्यम और उच्च वर्गों के लिये अदृश्य होती जा रही है। इन समूहों के लिये जो स्वतंत्रता के पश्चात विकास की नीतियों से सर्वाधिक लाभान्वित हुए हैं, जातीयता का महत्व कम हो गया प्रतीत होता है क्योंकि अब इसका कार्य भली-भांति संपन्न हो चुका है। इन समूह की जातीय प्रस्थिति यह सुनिश्चित करने के लिये निर्णायक रही है कि इन समूहों को तीव्र विकास द्वारा प्रदत्त अवसरों का पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिये आवश्यक आर्थिक तथा शैक्षणिक संसाधन उपलब्ध हों। इन समूहों के लिये सार्वजनिक जीवन में जाति की कोई भूमिका नहीं रही है, वह धार्मिक रीति रिवाज, विवाह अथवा नातेदारी के व्यक्तिगत क्षेत्र में ही सीमित है।

   (i) जाति समाज के किन किन वर्गों में अदृश्य होती जा रही है?

   (ii) जाति व्यवस्था में स्वतंत्रता के पश्चात क्या-क्या परिवर्तन आए हैं, विवेचना कीजिए।

अध्याय - 5

सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरूप

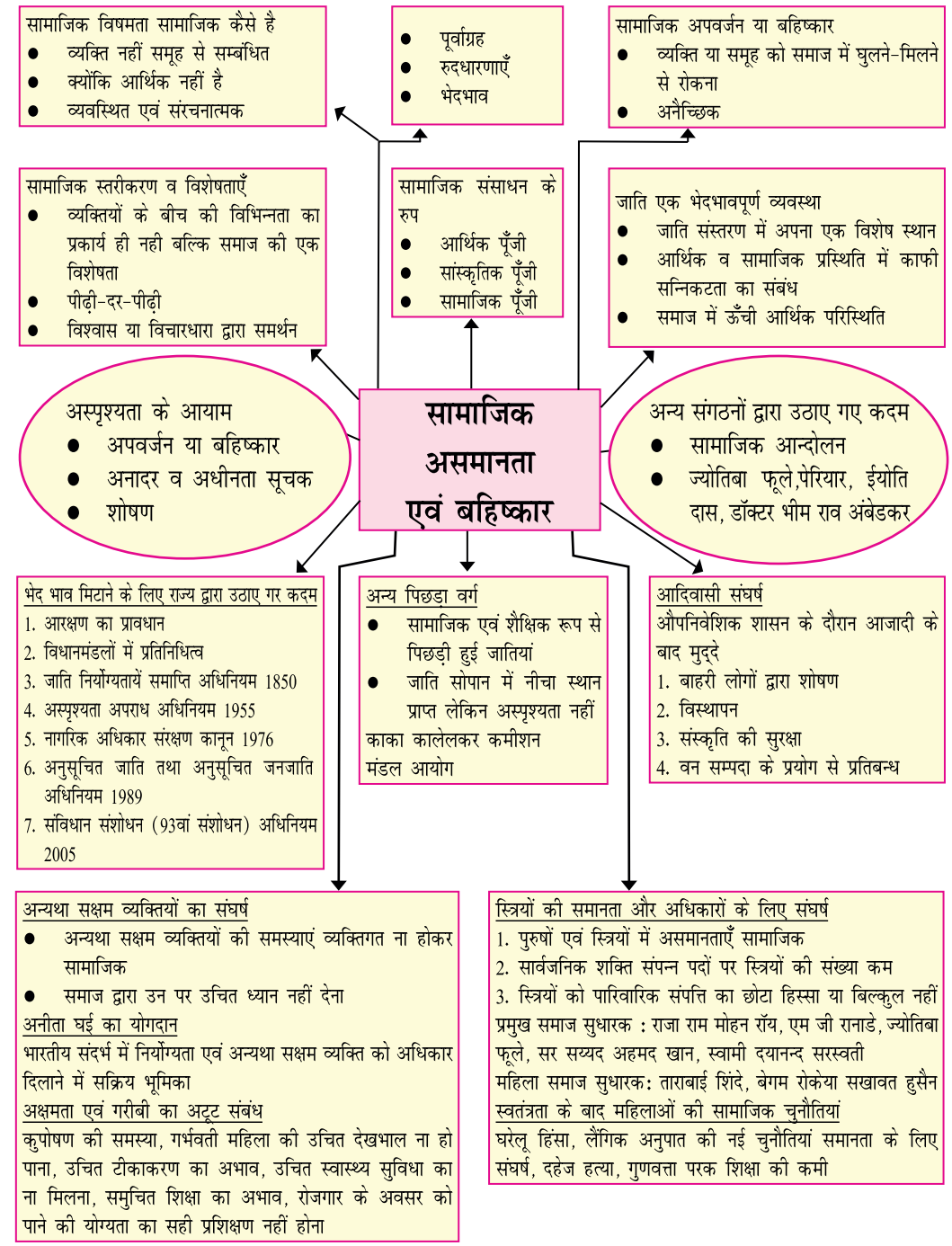

1. **सामाजिक विषमता (असमानता) :**

- सामाजिक विषमता व बहिष्कार हमारे दैनिक जीवन की वास्तविकता है एवं ये प्राकृतिक व व्यवहारिक है।
- प्रत्येक समाज में हर व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति एक समान नहीं होती है। समाज में कुछ लोगों के पास तो धन, सम्पत्ति, शिक्षा, स्वास्थ्य, सत्ता और शक्ति जैसे साधनों की अधिकता होती है तो दूसरी ओर कुछ लोगों के पास इनका नितान्त अभाव रहता है तो कुछ लोगों की स्थिति बीच की होती है।
- सामाजिक विषमता व बहिष्कार सामाजिक इसलिए है-

  (1) ये व्यक्ति से नहीं समूह से सम्बन्धित है।

  (2) ये व्यवस्थित व संरचनात्मक हैं।

  (3) ये आर्थिक नहीं हैं।
- सामाजिक संसाधनों को तीन रूपों में विभाजित किया जा सकता है-

(अ) आर्थिक पूंजी : भौतिक संपत्ति एवं आय के रूप में।

(ब) सांस्कृतिक पूंजी : प्रतिष्ठा व शैक्षणिक योग्यता के रूप में।

(स) सामाजिक पूंजी : सामाजिक संगतियों व संपर्कों के जाल के रूप में।

- सामाजिक विषमता : सामाजिक संसाधनों तक असमान पहुँच की पद्धति सामाजिक विषमता कहलाती है।

2. **सामाजिक स्तरीकरण :**

- एक समाज के अंतर्गत पाए जाने वाले समूहों का ऊँच-नीच या छोटे-बड़े के आधार पर विभिन्न स्तरों पर बँट जाना ही सामाजिक स्तरीकरण कहलाता है।
- सामाजिक स्तरीकरण की तीन मुख्य सैद्धान्तिक विशेषताएँ :-

(क) सामाजिक स्तरीकरण व्यक्तियों के बीच की विभिन्नता का प्रकार्य नहीं बल्कि समाज की विशिष्टता है।

(ख) सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी दर पीढ़ी बना रहता है।

(ग) सामाजिक स्तरीकण को विश्वास या विचारधारा द्वारा समर्थन मिलता है।

- **पूर्वाग्रह**

- एक समूह के सदस्यों द्वारा दूसरे समूह के बारे में पूर्वकल्पित विचार या विश्वास को पूर्वाग्रह कहते हैं।
- पूर्वाग्रह अपरिवर्तनीय, कठोर व रूढ़िवद्ध धारणाओं पर आधारित होते हैं।

- **रूढ़धारणाएँ:-**

- ऐसे लोक विश्वास, कोई भी अचल विचार या ऐसी भावना जो सामान्यत: शाब्दिक तथा संवेगयुक्त हो और समूह स्वीकृत हो, रूढ़धारणा कहलाती है।
- यह ज्यादातर महिलाओं, नृजातीय, प्रजातीय समूहों के बारे में प्रयोग की जातीहै।

- भेदभाव:- किसी समूह के सदस्यों को उनके लिंग, जाति या धर्म के आधार पर अवसरों तथा सुविधाओं से वंचित रखा जाना भेदभाव कहलाता है।

3. सामाजिक बहिष्कार:-

- वह तौर तरीके जिनके जरिए किसी व्यक्ति या समूह को समाज में पूरी तरह घुलने मिलने से रोका जाता है या अलग रखा जाता है।
- सामाजिक बहिष्कार आकस्मिक नहीं होता, यह व्यवस्थित तथा अनैच्छिक होता है।
- लम्बे समय तक विषमता व बहिष्कार के कारण निष्कासित समाज में प्रतिशोध व घृणा की भावना पैदा हो जाती है, जिस कारण निष्कासित समाज अपने-आप को मुख्य धारा से जोड़ने की कोशिश नहीं करते। जैसे-दलित, जनजातीय समुदाय, महिलाएँ तथा अन्यथा सक्षम लोग।

4. जाति व्यवस्था

- जाति जन्म से ही निर्धारित होती है न कि उस मनुष्य की स्थिति से।
- जाति व्यवस्था व्यक्तियों का व्यवसाय निर्धारित करती है।
- सामाजिक व आर्थिक प्रस्थिति जाति के अनुरूप होती है।
- यह एक भेदभावपूर्ण व्यवस्था है।
- जाति सामाजिक स्थिति को निर्धारित करती है।
- जाति के आधार पर स्तरीकरण भारतीय समाज का हिस्सा है।
- यह शुद्धता तथा अशुद्धता के आधार पर विभाजित व्यवस्था है।

5. **अस्पृश्यता**- आम बोलचाल में इसे छुआछूत कहा जाता है। धार्मिक एवं कर्मकांडीय दृष्टि से शुद्धता व अशुद्धता के पैमाने पर सबसे नीची माने जाने वाली जातियों के विरूद्ध अत्यन्त कठोर सामाजिक दंडों का विधान किया जाता है। इसे अस्पृश्यता कहते है।

- अस्पृश्यता शब्द का प्रयोग ऐसे लोगों के लिए किया गया है जिन्हे अपवित्र, गन्दा और अशुद्ध माना जाता था। ऐसे लोगों का कुओं, मन्दिरों और सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश निषेध था।
- गाँधी जी ने इन लोगों के लिए "हरिजन" शब्द का प्रयोग किया था किन्तु आजकल दलित शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- दलित का शब्दिक अर्थ है- 'पैरों से कुचला हुआ।'
- भारतीय संविधान (1956) के अनुसार जाति अस्पृश्यता निषेध है।
- महात्मा गाँधी, डॉ अम्बेडकर और ज्योतिबा फूले ने अस्पृश्यता निवारण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया।
- अस्पृश्यता के आयाम-

(अ) **अपवर्जन या बहिष्कार :** पेयजल के सामान्य स्त्रोतों से पानी नहीं लेने दिया जाता। सामाजिक उत्सव, समारोहों में भाग नहीं ले सकते। धार्मिक उत्सव पर ढोल-नगाड़े बजाना भी निषिद्ध होता है।

(ब) **अनादर और अधीनतासूचक :** टोपी या पगड़ी उतारना, जूतो को उतारकर हाथ में पकड़कर ले जाना, सिर झुकाकर खड़े रहना, साफ या चमचमाते हुए कपड़े नहीं पहनना।

(स) **शोषण व आश्रितता :** उन्हें 'बेगार' करनी पड़ती है जिसके लिए उन्हें कोई पैसा नहीं दिया जाता या बहुत कम मज़दूरी दी जाती है।

- **दलित :** वह लोग जो जाति व्यवस्था में निचले पायदान पर हैं तथा शोषित हैं, दलित कहलाते हैं।

6. **जातियों व जनजातियों के प्रति भेदभाव मिटाने के लिए राज्य द्वारा उठाए गए कदम:-**

(1) अनुसूचित जाति व जनजातियों के लिए राज्य व केन्द्रीय विधान-मंडलों में आरक्षण।

(2) सरकारी नौकरी में आरक्षण

(3) अस्पृश्यता (अपराध) 1955

(4) 1850 का जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम

(5) अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति अस्पृश्यता उन्मूलन कानून-1989

(6) उच्च शैक्षिक संस्थानों के 93वें संशोधन के अंतर्गत अन्य पिछड़े वर्ग को आरक्षण देना।

(7) अनुच्छेद 17 संविधान : अस्पृश्यता का अंत व दंड का प्रावधान

- **गैर सरकारी प्रयास**

(1) स्वाधीनता पूर्व- ज्योतिबाफूले, पेरियार, सर सैयद अहमद खान, डॉ. अम्बेडकर, महात्मा गांधी, राजाराम मोहन राय आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

(2) उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी, कर्नाटक में दलित संघर्ष समिति

(3) विभिन्न भाषाओं के साहित्य में योगदान

- **समाज सुधार कार्यक्रम**

(1) सत्यशोधक समाज : जोतिबा फुले द्वारा

(2) ब्रह्म समाज : राजा राममोहन राय

(3) आर्य समाज : दयानन्द सरस्वती

7. **अन्य पिछड़ा वर्ग**- सामाजिक, शैक्षिक रूप से पिछड़ी जातियों के वर्ग, को अन्य पिछड़ा वर्ग कहा जाता है इसमें सेवा करने वाली शिल्पी जातियों के लोग शामिल है।

- इन वर्गों की प्रमुख विशेषता संस्कृति, शिक्षा, और सामाजिक दृष्टि से इनका पिछड़ापन है। ये वर्ग न तो उच्च जाति में आते हैं न ही निम्न जाति में आते हैं।
- काका कालेलकर की अध्यक्षता में सबसे पहले '' पिछड़े वर्ग आयोग'' का गठन किया था। आयोग ने अपनी रिपोर्ट 1953 में सरकार को सौंप दी थी।
- 1979 में दूसरा पिछड़ा वर्ग आयोग (बी. पी. मंडल आयोग) गठित किया गया।
- आज अन्य पिछड़े वर्गों के बीच भारी विषमता देखने को मिलती है। एक ओर तो OBC का वह वर्ग है जो धनी किसान है तो दूसरी ओर गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहा दूसरा वर्ग है जिन्हें आजकल क्रीमी लेयर (मलाईदार तबका) व नोन क्रीमी लेयर के नाम से जाना जाता है।

8. भारत में जनजातीय जीवनः-

- भारतीय संविधान के अनुसार निर्धनता, शक्ति हीनता व सामाजिक लांछन से पीड़ित सामाजिक समूह है। इन्हें जनजाति भी कहा जाता है।
  जनजातियों को प्राय- 'वनवासी' या 'आदिवासी' के नाम से भी जाना जाता है।
- आन्तरिक उपनिवेशवाद- आदिवासी समाज ने प्रगति के नाम पर आन्तरिक उपनिवेशवाद का सामना किया। भारत सरकार ने वनों का दोहन, खदान कारखाने, बांध बनाने के नाम पर उनकी जमीन का अधिग्रहण किया तथा उनका पलायन हुआ।
- आदिवासियों की समस्याओं से जुड़े प्रमुख मुद्दे:-

(1) राष्ट्रीय वन नीति बनाम आदिवासी विस्थापन

(2) आदिवासी क्षेत्रों में सघन औद्योगीकरण की नीति

(3) आदिवासियों में सजातीय राजनीतिक जागरूकता के दर्शन।

9. स्त्रियों के अधिकारों व उनकी स्थिति के लिए उन्नीसवीं सदी में सुधार आन्दोलन हुआः-

- स्त्री-पुरुष में असमानता सामाजिक है, न कि प्राकृतिक यदि स्त्री-पुरुष प्राकृतिक आधार पर असमान है तो क्यों कुछ महिलाएँ समाज में शीर्ष स्थान पर पहुँच जाती है। दुनिया या देश में ऐसे भी समाज है जहाँ परिवारों में महिलाओं की सत्ता व्याप्त है जैसे केरल के 'नायर' परिवारों में और मेघालय की 'खासी' जनजाति। यदि महिला जैविक या शारीरिक आधार पर अयोग्य समझी जाती तो कैसे वह सफलतापूर्वक कृषि और व्यापार को चला पाती। संक्षेप में, यह कहना न्याय संगत होगा कि स्त्री-पुरुष के बीच असमानता के निर्धारण में जैविक/प्राकृतिक या शारीरिक तत्वों की कोई भूमिका नहीं है।
- राजा राम मोहन राय ने सती प्रथा तथा बाल विवाह का विरोध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया।
- ज्योतिबा फूले ने जातिय व लैंगिक अत्याचारों के विरोध में आन्दोलन किया।
- सर सैयद अहमद खान ने इस्लाम में सामाजिक सुधारों के लिए लड़कियो के स्कूल तथा कॉलेज खोले।
- दयानंद सरस्वती ने नारियों की शिक्षा में योगदान दिया।

- रानाडे ने विधवा विवाह पुनर्विवाह पर जोर दिया।
- ताराबाई शिंदे ने ''स्त्री-पुरूष तुलना'' लिखी जिसमें गलत तरीके से पुरूषों को ऊँचा दर्जा देने की बात कही गई।
- बेगम रोकेया हुसैन ने 'सुल्तानाज ड्रीम नामक किताब लिखी जिसमें हर लिंग को बराबर अधिकार देने पर चर्चा की गई है।
- 1931 में कराची में भारतीय कांग्रेस द्वारा एक अध्यादेश जारी करके स्त्रियों को बराबरी का हक देने पर बल दिया गया। सार्वजनिक रोजगार, शक्ति या सम्मान के संबंध में निर्योग्य नहीं ठहराया जाएगा।
- 1970 में काफी अहम मुद्दों पर जोर दिया गया जैसे- पुलिस हिरासत में बलात्कार, दहेज हत्या आदि। स्त्रियों को मत डालने, सार्वजनिक पदधारण करने का अधिकार होगा।

10. **अक्षमता (विकलांगता):-** शारीरिक, मानसिक रूप से बाधित व्यक्ति, इसलिए अक्षम कहलाते हैं क्योंकि वे समाज की रीतियों व सोच के अनुसार जरूरत को पूरा नहीं करते।
    - निर्योग्यता/अक्षमता को एक जैविक कमजोरी माना जाता है।
    - जब कभी किसी अक्षम व्यक्ति के समक्ष कई समस्याएँ खड़ी होती है तो यह मान लिया जाता है कि ये समस्याएँ उसकी बाधा या कमजोरी के कारण ही उत्पन्न हुई है।
    - अक्षम व्यक्ति को हमेशा शिकार यानी पीड़ित व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।
    - यह माना जाता है कि निर्योग्यता उस निर्योग्य व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।
    - निर्योग्यता तथा गरीबी के बीच काफी निकट संबंध देखा गया है क्योकि गरीबी के कारण ही माताएँ कुपोषण का शिकार होती है और दुर्बल व अविकसित बच्चों को जन्म देती है। जो बडे होकर विक्लांग लोगों की संख्या को बढ़ाते है।
    - सरकार इनके लिए विभिन्न कार्यक्रम प्रदान करती है- जैसे- शिक्षा, रोजगार, व्यावसायिक

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

1. **कथन सही करें–**

   (a) रानाडे ने **सती प्रथा** के विरुद्ध आंदोलन चलाया।

   उ0- रानाडे ने विधवा विवाह पुनर्विवाह के लिए आंदोलन चलाया।

   (b) आम बोलचाल में अस्पृश्यता को छुआछूत **नहीं** कहा जाता।

   उ0–आम बोलचाल में अस्पृश्यता को छुआछूत कहा जाता है।

   (c) सामाजिक विषमता व बहिष्कार सामाजिक इसलिए है क्योंकि ये **व्यक्ति** से संबंधित है।

   उ0- सामाजिक विषमता व बहिष्कार सामाजिक इसलिए है क्योंकि ये समाज से संबंधित है।

   (d) जाति एक भेदभाव पूर्ण **व्यवस्था नहीं है।**

   उ0–जाति एक भेदभाव पूर्ण व्यवस्था है।

2. दलित का शाब्दिक अर्थ ..... है।

   उ0- पैरों से कुचला हुआ

3. एक समूह के सदस्यों द्वारा दूसरे समूह के बारे में पूर्वकल्पित विचार या विश्वास को ..... कहते है।

   उ0–पूर्वाग्रह

4. वह व्यवस्था जो एक समाज के अंतर्गत पाए जाने वाले समूहों का ऊँच–नीच या छोटे–बड़े के आधार पर विभिन्न स्तरों पर बँट जाना ही ..... कहलाता है।

   उ0–सामाजिक स्तरीकरण

5. गाँधी जी ने अस्पृश्य लोगों के लिए ..... शब्द का प्रयोग किया।

   उ0–हरिजन

6. 1882 में ..... ने स्त्री–पुरुष तुलना नामक पुस्तक लिखी।

   उ0–ताराबाई शिंदे

7. सामाजिक व शैक्षिक रूप से पिछड़ी जातियों को कहा जाता है।

(a) अन्य पिछड़ा वर्ग (b) अनुसूचित जाति

(c) अनुसूचित जनजाति (d) दलित

उ0- (a)अन्य पिछड़ा वर्ग

8. अस्पृश्यता के आयाम हैं–

(a) अपवर्जन व बहिष्कार (b) अनादर

(c) शोषण (d) उपरोक्त तीनों

उ0- (d) उपरोक्त तीनों

9. किसके द्वारा जातीय व लैंगिक अत्याचारों के विरोध में आंदोलन किया।

(a) ज्योतिबा फुले (b) राजा राम मोहन राय

(c) दयानंद सरस्वती (d) रानाडे

उ0- (a) ज्योतिबा फुले

10. इनकी अध्यक्षता में सबसे पहले पिछड़े वर्ग आयोग का गठन किया गया।

(a) काका कालेलकर (b) बी.पी. मण्डल

(c) सर सैयद अहमद खान (d) महात्मा गाँधी

उ0- (a) काका कालेलकर

11. जातियों व जनजातियों के प्रति भेदभाव मिटाने के लिए राज्य द्वारा उठाए गए कदम है–

(a) आरक्षण व कानून द्वारा

(b) समाज सुधारकों द्वारा

(c) राजनीतिक पार्टी द्वारा

(d) विभिन्न भाषाओं के साहित्य से योगदान द्वारा

उ0- (a)आरक्षण व कानून द्वारा

12. भारतीय समाज के निम्न धार्मिक अल्पसंख्यकों में कौन - सा सम्प्रदाय सबसे छोटा है
(a) मुसलमान (b) बौद्ध (c) सिख (d) पारसी

उत्तर- (d) पारसी

13. संविधान के किस अनुच्छेद में अस्पृश्यता निवारण का प्रावधान किया गया है ?
(a) अनुच्छेद -23 (b) अनुच्छेद -17 (c) अनुच्छेद -29 (d) अनुच्छेद -25

उत्तर- (b) अनुच्छेद -17

14. अनुसूचित जनजाति को पहले निम्नलिखित में से किस नाम से पुकारा जाता था ?
(a) आदिवासी (b) जंगली जाति (c) वनजाति (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर- (d) उपर्युक्त सभी

15. भारतीय समाज में सामाजिक स्तरीकरण का बुनियादी आधार क्या है ?
(a) धन एवं संपति (a) जाति (a) वंश (a) धर्म

उत्तर- (a) जाति

16. 'सामाजिक संसाधनों' तक असमान पहुँच क्या कहलाती है -
(a) सामाजिक विषमता (b) आर्थिक विषमता (c) राजनीतिक विषमता
(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर- (a) सामाजिक विषमता

17. निम्न में से कौन-सा कार्य 'अमीर' लोग नहीं करते हैं -
(a) खुदाई करना (b) पत्थर तोड़ना (c) भारी वज़न उठाना (d) ये सभी

उत्तर- (d) ये सभी

18. हमारे समाज की विशेषताओं में सबसे बड़ी चिंता का विषय रहा है -
(a) असीमित विषमता (b) अपवर्जन (c) बहिष्कार (d) उपरोक्त सभी

उत्तर- (d) उपरोक्त सभी

19. सुनी - सुनाई बात पर किसी व्यक्ति के बारे में कोई धारणा बना लेना क्या कहलाता है -
(a) रूढधारणाएं (b) पूर्वाग्रह (c) भेदभाव (c) बहिष्कार

उत्तर- (b) पूर्वाग्रह

20. 'राजपूत एक बहादुर कौम है 'यह लोक - विश्वास किस धारणा को प्रकट करता है -

(a) पूर्वाग्रह (b) रूढ़धारणा (c) स्तरीकरण (d) संस्कृतिकरण

उत्तर - (b) रूढ़धारणा

2 अंक प्रश्न

1. सामाजिक विषमता व बहिष्कार में क्या सामाजिक है?
2. विभिन्न सामाजिक संसाधन क्या है?
3. निम्न का अर्थ बताइए।

   (अ) पूर्वाग्रह (ब) भेदभाव (स) रूढ़िबद्ध धारणाएँ
4. सामाजिक बहिष्कार किसे कहते है?
5. अस्पृश्यता क्या है? (Outside Delhi 2018)
6. जाति व आर्थिक असमानता के बीच क्या सम्बन्ध है?
7. दलित किसे कहते हैं?
8. राज्य द्वारा अनुसूचित जाति व जनजाति को किस तरह का आरक्षण दिया गया है?
9. जातीय विषमता को दूर करने के लिए गैर राजकीय संगठनों की क्या भूमिका रही है?
10. अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) कौन है? या O.B.C को परिभाषित करने के मानदंड क्या है? (Outside Delhi-2018)
11. 'आदिवासी' से आप क्या समझते है?
12. अक्षमता व गरीबी में क्या सम्बन्ध है?
13. गाँधी जी ने अस्पृश्य लोगों को क्या कहकर पुकारा?

4 अंक प्रश्न

1. सामाजिक स्तरीकरण की कुछ विशेषताए बताईए।
2. नारी से सम्बन्धित कौन-कौन से मुद्दे हैं?
3. जाति व्यवस्था एक भेदभावपूर्ण व्यवस्था है। वर्णन करें?
4. जातीय व जनजातीय विषमता को दूर करने में राज्य द्वारा उठाये गए कदम कितने कारगर सिद्ध हुए?
5. स्त्री व पुरूष में असमानता सामाजिक है, न कि प्राकृतिक, उदाहरण सहित व्याख्या करें।
6. अक्षमता के प्रति आम व्यक्ति के क्या विचार है? विस्तार से लिखिए।
7. स्त्रियों को समानता का अधिकार देने के लिए 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कराची अधिवेशन द्वारा किए गए प्रयासों की विवचना कीजिए।
8. 'स्त्री-पुरुष तुलना' नामक पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई? यह पुस्तक क्या दर्शाती है?
9. 'सुलताना ड्रीम्स' नामक पुस्तक किसके द्वारा लिखी गई? इस पुस्तक को लिखने के पीछे लेखक की मंशा क्या है?

10. अनुच्छेद पढ़कर उत्तर दीजिए :-

    इसे आम बोलचाल की भाषा में 'छुआछूत' कहा जाता है, जाति व्यवस्था का ये अत्यंत घृणित एंव दूषित पहलू है, जो कर्मकांडीय दृष्टि से शुद्धता एवं अशुद्धता के पैमाने पर सबसे नीची माने जाने वाली जातियों के सदस्यों के विरुद्ध अत्यंत कठोर सामाजिक अनुशास्त्रियों (दंडों) का विधान करता है। इन्हें इतना अधिक अशुद्ध एवं अपवित्र माना जाता है कि उनके जरा छू जाने भर से ही अन्य सभी जातियों के सदस्य अत्यंत अशुद्ध हो जाते हैं और अछूतों को कठोर दंड के साथ-साथ उच्च जाति के व्यक्ति को भी शुद्धीकरण प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।

    (क) यहां 'छुआछूत' किसे कहा जा रहा है?

    (ख) सामाजिक स्तरीकरण में जाति व्यवस्था की क्या भूमिका है?

    (ग) इसके अंत के लिये भारतीय संविधान में क्या प्रावधान हैं?

    (घ) किसी एक आंदोलन का नाम बताइये जिसके द्वारा इसे खत्म करने का प्रयास किया गया।

11. भारत में निर्योग्य, बाधित, अक्षम, अपंग, अंधा और बहरा जैसे विशेषणों का प्रयोग लगभग एक ही भाव को दर्शाने के लिए किया जाता है। अक्सर किसी व्यक्ति का अपमान करने के लिए उस पर इन शब्दों की बौछार कर दी जाती है। एक ऐसी संस्कृति में जहां शारीरिक 'पूर्णता' का आदर किया जाता हो, 'पूर्ण शरीर' न होने का अर्थ है कि उसमें कोई असमान्यता, दोष या खराबी है। 'बेचारा' जैसे विशेषणों से संबोधित करने

पर तो उसकी पीड़ित परिस्थिति और भी विकट हो जाती है।

(क) यहां कौन से व्यक्तियों की बात की गई है?

(ख) 'विकलांग-विरोधी' न्यायालय क्या है?

(ग) अक्षमता सामाजिक कैसे है?

(घ) विकलांगता किस-किस तरह की हो सकती है?

6 अंक प्रश्न

1. उपनिवेश काल के दौरान नारी सम्बन्धित मुद्दे समाज सुधार आंदोलनों ने किस प्रकार उठाए?
2. अस्पृश्यता को परिभाषित कीजिए? इसके आयाम भी लिखे।
3. आदिवासियों की समस्याओं से जुड़े प्रमुख मुद्दे कौन से है?
4. नारी आंदोलन ने अपने इतिहास के दौरान कौन-कौन से मुद्दे उठाए हैं?
5. सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताओं को समझाएँ?
6. सारणी को समझकर उत्तर दीजिए। गरीबी रेखा से नीचे की जनसंख्या का प्रतिशत, 2011-2012

जाति एवं समुदाय समूह	ग्रामीण भारत 327 रु. या कम प्रति व्यक्ति प्रति माह व्यय	नगरीय भारत 454 रु. या कम प्रति व्यक्ति प्रति माह व्यय
अनुसूचित जनजातियाँ	45.3%	24.1%
अनुसूचित जातियाँ	31.5%	21.4%
अन्य पिछड़ा वर्ग	22.7%	15.4%
उच्च जाति मुसलमान	26.9%	22.1%
उच्च जाति हिन्दू	25.6%	12.1%
उच्च जाति ईसाई	22.2%	05.5%
उच्च जाति सिक्ख	06.2%	05.0%
सभी समूह	27.0%	13.7%

(क) किस जाति/समुदाय समूह के ज्यादातर लोग ग्रामीण तथा नगरीय भारत में अत्याधिक गरीबी में जिंदगी गुजार रहे है? किस समुदाय के सबसे कम प्रतिशत लोग गरीबी में जीते हैं?

(ख) अन्य पिछड़े वर्ग से आप क्या समझते हैं? इस सारणी को देखकर आपको अन्य पिछड़े वर्ग के बारे में क्या जानकारी मिलती है व इनकी सामाजिक समस्याएँ कौन-सी हैं?

अध्याय 6

सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ

मुख्य बिन्दु

1.
- 'विविधता' शब्द असमानताओं के बजाय अंतरों पर बल देता है। जब हम यह कहते हैं कि भारत एक महान सांस्कृतिक विविधता वाला राष्ट्र है तो हमारा तात्पर्य यह होता है कि यहाँ अनेक प्रकार के सामाजिक समूह एवं समुदाय निवास करते है।
- भारत में सांस्कृतिक विविधता की झलक:- भारत में विभिन्न प्रदेशों में भाषा, रहन-सहन, खानपान, वेश-भूषा, प्रथा, परम्परा, लोकगीत, लोकगाथा, विवाह प्रणाली, जीवन संस्कार, कला, संगीत तथा नृत्य में भी हमें अनेक रोचक व आकर्षक भेद देखने को मिलते है।
- भारतीय राष्ट्र राज्य सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से विश्व के सर्वाधिक विविधतापूर्ण देशों में से एक है।
- जनसंख्या की दृष्टि से विश्वभर में इसका स्थान दूसरा है।
- यहाँ के एक अरब से ज्यादा लोग कुल मिलाकर लगभग 1632 भिन्न-भिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोलते हैं। 18 भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिया गया है।
- 80% से अधिक आबादी हिन्दुओं की है। लगभग 13.4% आबादी मुसलमानों की है। 2.3% ईसाई, 1.9% सिख, 0.8% बौद्ध, 0.4% जैन है।
- संविधान में यह घोषणा की गई है भारत एक धर्म-निरपेक्ष राज्य होगा।
- सांस्कृतिक विविधता से सम्प्रदायवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद आदि पनपते हैं। एक समुदाय दूसरे समुदाय को नीचा दिखाता है।
- जैसे-नदियों के जल, सरकारी नौकरियों, अनुदानों के बंटवारे को लेकर खींचतान शुरू हो जाती है।

- रंगभेद-रंग के आधार पर भेदभाव जैसे-गोरा या काला।

2. सामुदायिक पहचान का महत्त्वः-

- हमारा समुदाय हमें भाषा (मातृभाषा) और सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करता है जिनके माध्यम से हम विश्व को समझते हैं। यह हमारी स्वयं की पहचान को भी सहारा देता है।

- सामुदायिक पहचान, जन्म तथा अपनेपन पर आधारित है, न कि किसी उपलब्धि के आधार पर। यह 'हम क्या' हैं इस भाव की द्योतक है न कि हम क्या बन गए हैं।

- संभवतः इस आकस्मिक, शर्त सहित अथवा लगभग अनिवारणीय तरीके से संबंधित होने के कारण ही हम अक्सर अपनी सामुदायिक पहचान से भावनात्मक रूप से इतना गहरे जुड़े होते हैं। सामुदायिक संबंधों (परिवार, नातेदारी, जाति, नृजातीयता, भाषा, क्षेत्र या धर्म) के बढ़ते हुए और परस्पर व्यापक दायरे ही हमारी दुनिया को सार्थकता प्रदान करते हैं और हमें पहचान प्रदान करते हैं कि हम कौन हैं।

3. राष्ट्र की व्याख्या करना सरल है पर परिभाषित करना कठिन क्यों?

राज्य : राज्य एक ऐसा क्षेत्रीय समुदाय है जो प्रभुता संपन्न सरकार द्वारा नियमित हो और बाहरी नियंत्रण से मुक्त हो।

राष्ट्र : राष्ट्र एक बड़े स्तर का समुदाय होता है जो एक ही राजनैतिक व्यवस्था के अंतर्गत स्वेच्छा से रहने का प्रयत्न करता है और नैतिक भावनाओं के शक्तिशाली सूत्रों में बंधा होता है।

राष्ट्र - राज्य : एक विशेष प्रकार का राज्य जिसमें आधुनिक जगत की विशेषता होती है और एक सरकार की एक निश्चित क्षेत्र पर संप्रभु शक्ति होती है और वहां रहने वाले लोग उसके नागरिक कहलाते है।

- राष्ट्र एक अनूठे किस्म का समुदाय होता है। जिसका वर्णन तो आसान है पर इसे परिभाषित करना कठिन है। हम ऐसे अनेक विशिष्ट राष्ट्रों का वर्णन कर सकते हैं। जिनकी स्थापना साझे-धर्म, भाषा, इतिहास अथवा क्षेत्रीय संस्कृति जैसी साझी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक ओर राजनीतिक संस्थानों के आधार पर की गईहै।

- उदाहरण के लिए, ऐसे बहुत से राष्ट्र है जिनकी अपनी एक साझा या सामान्य भाषा, धर्म, नृजातीयता आदि नहीं है। दूसरी ओर ऐसी अनेक भाषाएं, धर्म या नृजातिया हैं जो कई राष्ट्रों में पाई जाती है। लेकिन इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि यह सभी मिलकर एक एकीकृत राष्ट्र का निर्माण करते हैं, उदाहरण के लिए सभी अंग्रेजी भाषी लोग या सभी बौद्ध धर्मावलंबी।

- आत्मासात्करणवादी और एकीकरणवादी रणनीतियाँ:- एकल राष्ट्रीय पहचान स्थापित करने की कोशिश करती हैं जैसे:-
- संपूर्ण शक्ति को ऐसे मंचों में केन्द्रित करना जहाँ प्रभावशाली समूह बहुसंख्यक हो और स्थानीय या अल्पसंख्यक समूहों की स्वायत्ता को मिटाना।
- प्रभावशाली समूह की परंपराओं पर आधारित एक एकीकृत कानून एवं न्याय व्यवस्था को थोपना और अन्य समूहों द्वारा प्रयुक्त वैकल्पिक व्यवस्थाओं को खत्म कर देना।
- प्रभावशाली समूह की भाषा को ही एकमात्र राजकीय 'राष्ट्रभाषा' के रूप में अपनाना और उसके प्रयोग को सभी सार्वजनिक संस्थाओं में अनिवार्य बना देना।
- प्रभावशाली समूह की भाषा और संस्कृति को राष्ट्रीय संस्थाओं के जरिए, जिनमें राज्य नियंत्रित, जनसंपर्क के माध्यम और शैक्षिक संस्थाएँ शामिल हैं, बढ़ावा देना।
- प्रभावशाली समूह के इतिहास, शूरवीरों और संस्कृति को सम्मान प्रदान करने वाले राज्य प्रतीकों को अपनाना, राष्ट्रीय पर्व, छुट्टी या सड़कों आदि के नाम निर्धारित करते समय भी इन्हीं बातों का ध्यान रखना।
- अल्पसंख्यक समूहों और देशज लोगों से जमीनें, जंगल एवं मत्स्य क्षेत्र छीनकर, उन्हें 'राष्ट्रीय संसाधन' घोषित कर देना।

4. **भारतीय सन्दर्भ में क्षेत्रवाद:-**
   - भारत में क्षेत्रवाद भारत की भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों की विविधता के कारण पाया जाता है इसे विशेष पहचान चिन्हकों के भौगोलिक संकेद्रण के कारण भी प्रोत्साहन मिलता है ओर क्षेत्रीय वंचन का भाव अग्नि में घी का काम करता है। भारतीय संघवाद इन क्षेत्रीय भावुकताओं को समायोजित करने वाला एक साधन है।
   - क्षेत्रवाद भाषा पर आधारित है-जैसे पुराना बंबई राज्य मराठी, गुजराती, कन्नड़ एवं कोंकणी बोलने वाले लोगों का बहुभाषी राज्य था। मद्रास राज्य तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम बोलने वाले लोगों से बना था।
   - क्षेत्रवाद धर्म पर आधारित है।
   - क्षेत्रवाद जनजातीय पहचान पर भी आधारित था जैसे सन् 2000 में छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तरांचल जनजातीय पहचान पर आधारित थे।
   - इन सब तत्वों के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में तनाव रहता है उदारीकरण के युग में आर्थिक विकास में निजी पूँजी निवेश को अधिक बड़ी भूमिका सौंपी गई है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि निजी निवेशकर्त्ता आमतौर पर पहले से विकसित ऐसे राज्य में पूँजी लगाना चाहते है जहाँ सुविधाएँ बेहतर हों।

5. **अल्पसंख्यक का समाजशास्त्रीय अर्थ:-** वह समूह जो धर्म, जाति की दृष्टि से संख्या में कम हो। जैसे- सिक्ख, मुस्लिम, जैन, पारसी, बौद्ध।

- अल्पसंख्यक समूहों की धारणा का समाजशास्त्र में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है एवं सिर्फ एक संख्यात्मक विशिष्टता के अलावा और अधिक महत्त्व है- इसमें आमतौर पर असुविधा या हानि का कुछ भावनिहित है। अत: विशेषाधिकार प्राप्त अल्पसंख्यक जैसे अत्यंत धनवान लोगों को आमतौर पर अल्पसंख्यक नहीं कहा जा सकता।
- अल्पसंख्यकों को क्यों संवैधानिक संरक्षण दिया जाना चाहिए?
- बहुसंख्यक वर्ग के जनसांख्यिकीय प्रभुत्व के कारण धार्मिक अथवा सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को विशेष संरक्षण की आवश्यक्ता होती है।
- धार्मिक तथा सांस्कृतिक अल्पसंख्यक वर्ग राजनीतिक दृष्टि से कमजोर होते हैं भले ही उनकी आर्थिक या सामाजिक स्थिति कैसी भी हो, अत: इन्हें संरक्षण की आवश्यकता होती है।
- बहुसंख्यक समुदाय राजनीतिक शक्ति को हथिया लेगा और उनकी धार्मिक या सांस्कृतिक संस्थाओं को दबाने के लिए राजतंत्र का दुरुपयोग करेगा और उन्हे अपनी पहचान छोड़ देने के लिए मजबूर कर देगा।
- अल्पसंख्यकों की समस्याएं

  (i) सामाजिक स्थिति

  (ii) अलाभकारी स्थिति

  (iii) समाज से कटे हुए

  (iv) पूर्वाग्रह और रूढ़ धारणाएं

  (v) सांस्कृतिक दृष्टि से अलाभकारी स्थिति

  (vi) राजनीतिक दृष्टि से कमजोर
- अल्पसंख्यको एवं सांस्कृतिक विविधता पर भारतीय संविधान का:-

अनुच्छेद 29

(1) भारत के राज्यक्षेत्र या उसके किसी भाषा के निवासी नागरिकों के किसी अनुभाग को, जिसकी अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति है, उसे बनाए रखने का अधिकार होगा।

(2) राज्य द्वारा पोषित या राज्य-निधि से सहायता पाने वाली किसी शिक्षा संस्था में प्रवेश से किसी भी नागरिक को केवल धर्म, मूलवंश, जाति, भाषा या इनमें से किसी के आधार पर वंचित नहीं किया जाएगा।

अनुच्छेद 30

(1) धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी रूचि की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन का अधिकार होगा।

(2) शिक्षा संस्थाओं को सहायता देने में राज्य किसी शिक्षा संस्था के विरूद्ध इस आधार पर विभेद नहीं करेगा कि वह धर्म या भाषा पर आधारित किसी अल्पसंख्यक वर्ग के प्रबंध में है।

6. सांप्रदायिकता:-

- रोजमर्रा की भाषा में 'सांप्रदायिकता' का अर्थ है धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद, अपने आपमें एक ऐसी अभिवृत्ति है जो अपने समूह को ही वैध या श्रेष्ठ समूह मानती है ओर अन्य समूह को निम्न, अवैध अथवा विरोधी समझती है।
- सांप्रदायिकता एक आक्रामक राजनीतिक विचारधारा है जो धर्म से जुड़ी होतीहै।
- सांप्रदायिकता राजनीति से सरोकार रखती है धर्म से नहीं। यद्यपि संप्रदायवादी धर्म के साथ गहन रूप से जुड़े होते है।
- भारत में बार-बार सांप्रदायिक तनाव फैलते हैं जो कि चिंता का विषय बना हुआ है। इसमें लूटा जाता है, बलात्कार होता है ओर लोगों की जान ली जाती है, जैसा कि 1984 में सिक्खों के साथ एवं 2002 में गुजरात के मुसलमानों के साथ हुआ, इसके अलावा भी हजारों ऐसे फसाद हुए हैं। जिसमें सदैव अल्पसंख्यकों का बड़ा नुकसान हुआ है।

7. धर्मनिरपेक्षतावाद:-

- पश्चिमी नजरिये के अनुसार इसका अर्थ है चर्च या धर्मो को राज्य से अलग रखना। धर्म को सत्ता से अलग रखना पश्चिमी देशों के लिए एक सामाजिक इतिहास की हैसियत रखता है।
- भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्ष राज्य वह होता है। जो किसी विशेष धर्म का अन्य धर्मों की तुलना में पक्ष नहीं लेता। भारतीय भाव के राज्य के सभी धर्मों को समान आदर देने के कारण दोनों के बीच तनाव से एक तरह की कठिन स्थिति पैदा हो जाती है हर फैसला धर्म को ध्यान में रखते हुए लिया जाता है। उदाहरण के लिए हर धर्म के त्योहार पर सरकारी छुट्टी होती है।

8. सत्तावादी राज्य:-

- एक सत्तावादी राज्य लोकतंत्रात्मक राज्य का विपरीत होता है।
- इसमें लोगों की आवाज नहीं सुनी जाती है। और जिनके पास शक्ति होती है वे किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं होते।
- सत्तावादी राज्य अक्सर भाषा की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतन्त्रता, सत्ता के दुरूपयोग से संरक्षण का अधिकार विधि (कानून) की अपेक्षित प्रक्रियाओं का अधिकार जैसी अनेक प्रकार की नागरिक स्वतंत्रताओं को अक्सर सीमित या समाप्त कर देते हैं।
- भारतीय लोगों को सत्तावादी शासन का थोड़ा अनुभव आपातकाल के दौरान हुआ जो 1975 से 1977 तक लागू रही थी।
- संसद को निलंबित कर दिया गया था। नागरिक स्वतंत्रताएँ छीन ली गई और राजनीतिक रूप से सक्रिय लोग बड़ी संख्या में गिरफ्तार हुए। बिना मुकदमा चलाए जेलों में डाल दिए गए।
- जनसंचार के माध्यमों पर सेंसर व्यवस्था लागू कर दी गई थी।
- सबसे कुख्यात कार्यक्रम नसबंदी अभियान था। लोगों की शल्यक्रिया के कारण उत्पन्न हुई समस्याओं से मौत हुई।
- 1977 के प्रारंभ में चुनाव कराए गए तो लोगों ने बढ़-चढ़कर सत्ताधारी कांग्रेस दल के विरोध में वोट डाले।
- सत्तावादी शासन का परिणाम:
  - मौलिक अधिकारों का हनन
  - भागीदारी की लहर का उत्पन्न होना
  - सामाजिक आंदोलन की शुरुआत
  - महिला आंदोलन, पर्यावरण सुरक्षा आंदोलन, मानव अधिकार एवं दलित आंदोलन।

9. नागरिक समाज:-

- नागरिक समाज उस व्यापक कार्यक्षेत्र को कहते हैं जो परिवार के निजी क्षेत्र से परे होता है, लेकिन राज्य और बाजार दोनों क्षेत्र से बाहर होता है।
- नागरिक समाज में स्वैच्छिक संगठन होते है।

- यह सक्रिय नागरिकता का क्षेत्र है यहाँ व्यक्ति मिलकर सामाजिक मुद्दों पर चर्चा करते हैं। जैसे-गैर सरकारी संस्थाएँ, राजनीतिक दल, मीडिया, श्रमिक संघ आदि।
- नागरिक समाज के द्वारा उठाए गए मुद्दे
  - जनजाति की भूमि की लड़ाई
  - पर्यावरण की सुरक्षा
  - मानव अधिकार और दलितों के हक की लड़ाई (मुद्दे)।
  - नगरीय शासन का हस्तांतरण।
  - स्त्रियों के प्रति हिंसा और बलात्कार के विरूद्ध अभियान।
  - बाँधों के निर्माण अथवा विकास की अन्य परियोजनाओं के कारण विस्थापित हुए लोगों का पुनर्वास।
  - गंदी बस्तियाँ हटाने के विरूद्ध और आवासीय अधिकारों के लिए अभियान।
  - प्राथमिक शिक्षा संबंधी सुधार।
  - दलितों को भूमि का वितरण।
  - राज्य को काम काज पर नजर रखने और उससे कानून का पालन करवाना।

सूचनाधिकार अधिनियम 2005 (लोगों के उत्तर देने के लिए राज्य को बाध्य करना)

- सूचनाधिकार अधिनियम 2005 भारतीय संसद द्वारा अधिनियमित एक ऐसा कानून है जिसके तहत भारतीयों को (जम्मू और कश्मीर) सरकारी अभिलेखों तक पहुँचने का अधिकार दिया गया है।
- कोई भी व्यक्ति किसी ''सार्वजनिक प्राधिकरण'' से सूचना के लिए अनुरोध कर सकता है ओर उस प्राधिकरण से यह आशा की जाती है कि वह शीघ्रता से यानी 30 दिन के भीतर उसे उत्तर देगा।

सूचनाधिकार अधिनियम 2005 के लाभ

- इस अधिनियम के अनुसार कोई भी व्यक्ति सरकार से धन के आवंटन, कर की मांग कर सकता है और निधि दस्तावेज की प्रतिलिपि मांग सकता है।
- विभिन्न परियोजनाओं के लिए धन आवंटित किए जाने के बारे में लोगों को जानकारी प्राप्त करने का अधिकार है।

- दस्तावेज प्राप्त करने का अधिकार
- दस्तावेजों, कार्यों और अभिलेखों का निरीक्षण
- कार्य की सामग्रियों के प्रमाणित नमूने लेने का अधिकार
- नागरिक सूचना प्रिंटआउट, डिस्क्स, फ्लॉपी, टेप, वीडियो कैसेट व अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से लेना।

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

1. **कथन सही करें–**

(a) राष्ट्र की व्याख्या करना **कठिन** है पर परिभाषित करना **सरल** है।

उ0–राष्ट्र की व्याख्या करना सरल है पर परिभाषित करना कठिन है।

(b) अल्पसंख्यक वह समूह है जो धर्म, जाति की दृष्टि से संख्या में **अधिक** होते है।

उ0–अल्पसंख्यक वह समूह है जो धर्म, जाति की दृष्टि से संख्या में कम होते है।

(c) सांप्रदायिकता का अर्थ "धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद" **नहीं** होता है।

उ0–सांप्रदायिकता का अर्थ "धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद" होता है।

(d) सामुदायिक पहचान **जाति** तथा **वर्ग** पर आधारित है, न कि किसी उपलब्धि के आधार पर।

उ0–सामुदायिक पहचान जन्म तथा अपने पर आधारित है, न कि किसी उपलब्धि के आधार पर।

(e) जनसंख्या की दृष्टि से विश्व भर में **चीन** का स्थान दूसरा है।

उ0- जनसंख्या की दृष्टि से विश्व भर में भारत का स्थान दूसरा है।

2. सांस्कृतिक विविधता का उदाहरण है–

(a) भारत (b) पाकिस्तान

(c) नेपाल (d) चीन

उत्तर - भारत

3. अल्पसंख्यकों से संबंधित अनुच्छेद है–

(a) 29 एवं 30 (b) 31 एवं 32

(c) 33 एवं 34 (d) 27 एवं 28

उत्तर - (a)

4. सत्तावादी शासन के दौरान निम्नलिखित में से क्या सही नहीं है।

(a) नागरिक स्वतंत्रताएँ छिनना (b) सेंसर व्यवस्था लागू करना

(c) संसद को निलंबित करना (d) भाषा की स्वतंत्रता होना।

उत्तर - (d)

5. ..... अधिनियम 2005 एक ऐसा कानून है जिसके तहत भारतीयों को सरकारी अभिलेखों तक पहुँचने का अधिकार दिया गया है।

उत्तर - सूचना का अधिकार

6. एक ..... राज्य लोकतंत्रात्मक राज्य का विपरीत होता है।

उत्तर - सत्तावादी

7. पश्चिमी नजरिये के अंतर्गत चर्च या धर्मों को राज्य से अलग रखना क्या कहलाता है।

उत्तर - धर्मनिरपेक्षतावाद

8. रंग भेद से तात्पर्य है ..... जैसे गोरा या काला।

उत्तर - भेदभाव

9. ..... और ..... रणनीतियाँ एकल राष्ट्रीय पहचान स्थापित करने की कोशिश करती है।

उत्तर - सरलीकरण, एकीकरण

10. क्षेत्रवाद ..... तथा ..... पर आधारित है।

उत्तर - भाषा, धर्म

11. ''विविधता'' शब्द असमानता की जगह ..... पर बल देता है ?

A- समानता B- अंतर C- महानता D- इनमें से कोई नहीं

उत्तर - B- अंतर

12. सांस्कृतिक विविधता.....प्रस्तुत करती है ?

A- चुनौतियां B- प्रतिस्पर्धा C- सांप्रदायिकता D- रूढ़िवादिता

उत्तर - A- चुनौतियां

13. ''राज्य एक ऐसा निकाय होता है जो एक विशेष क्षेत्र में विधिसम्मत एकाधिकार का सफलतापूर्वक दावा करता है'' यह परिभाषा किसकी है ?

A- कार्ल मार्क्स B- जॉन स्मिथ C- मैक्स वेबर D- माल्थस

उत्तर - C- मैक्स वेबर

14. वर्तमान में भारत विश्व की.....बड़ी आबादी वाला देश है ?

A- पहली B- दूसरी C-तीसरी D- पांचवी

उत्तर - B- दूसरी

15. सन 2000 में कौन सा राज्य बना?

A- छत्तीसगढ़ B-उतरांचल C- झारखंड D- उपरोक्त सभी

उत्तर - D- उपरोक्त सभी

16. निम्न में से भारतीय संविधान का प्रमुख शिल्पकार कौन है -

a) पंडित जवाहर लाल नेहरू b) डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद

c) डॉक्टर भीमराव अंबेडकर c) सरदार पटेल

उत्तर - c) डॉक्टर भीमराव अंबेडकर

17. 'वह आक्रामक राजनीतिक विचारधारा जो धर्म से जुड़ी होती है, क्या कहलाती है -

a) धर्मनिरपेक्षता b) सांप्रदायिकता c) जातीयता d) आतंकता

उत्तर - b) सांप्रदायिकता

18. कौन सा अधिनियम लोगों को उत्तर देने के लिए राज्य को बाध्य करता है ?

A- सूचना का अधिकार B- शिक्षा का अधिकार

C- सरकारी अभिलेख की जानकारी का अधिकार

D- इनमे से कोई नहीं

उत्तर - A- सूचना का अधिकार

19. निम्नलिखित में से कौन राष्ट्रीय एकीकरण में बाधक है -

a) धर्मनिरपेक्षता b) सांप्रदायिकता

उत्तर - b) सांप्रदायिकता

20. भीमराव अंबेडकर ने कौन सा धर्म अपना लिया था ?

A- जैन B- बौद्ध C- ईसाई D- सिख

उत्तर - B- बौद्ध

2 अंक प्रश्न

1. सांस्कृतिक विविधता से आप क्या समझते है?
2. धर्मनिरपेक्षता को पाश्चात्य व भारतीय संदर्भ में समझाइए।
3. अर्जित पहचान क्या होती है।
4. राष्ट्र-राज्य की परिभाषा लिखें।
5. अल्पसंख्यक कौन होते हैं?
6. समाजवादी राज्य की कुछ विशेषताएं लिखें।
7. क्षेत्रवाद क्या होता है?

8. विशेष अधिकार प्राप्त/सुविधा प्राप्त अल्पसंख्यक कौन होते हैं?
9. राजनीतिक रूप से अल्पसंख्यक महत्त्वपूर्ण क्यों हैं?
10. अल्पसंख्यकों की सुरक्षा राज्य के लिए एक चुनौती है, क्यों?
11. राज्य अक्सर सांस्कृतिक विविधता के बारें में शंकालु क्यों होते हैं?
12. भारत में पाई जाने वाली धार्मिक विविधता पर लेख लिखें।
13. अल्पसंख्यकों के अधिकारों के विषय में संविधान में क्या-क्या लिखा है?
14. सांप्रदायिकता से आप क्या समझते हैं?
15. रंगभेद से क्या तात्पर्य है?

4 अंक प्रश्न

1. भारतीय संदर्भ में सांप्रदायिकता का वर्णन करें।
2. भारत ने अपनी सांस्कृतिक विविधता को किस प्रकार बनाए रखा है?
3. सांप्रदायिकता की कुछ विशेषताएँ बताइये।
4. पाश्चात्य व भारतीय धर्म निरपेक्षता में अन्तर स्पष्ट करें।
5. प्रजातंत्रीय राज्य व सत्तावादी राज्य में अन्तर बताइये।
6. एक विशिष्ट क्षेत्र में क्षेत्रवाद खतरनाक है, जबकि सांप्रदायिकता पूरे राष्ट्र के लिए खतरनाक है। उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।
7. साम्प्रदायिकता के अर्थ आज बुरे हो गए हैं। इससे आज चारों ओर भेदभाव, नफरत और कटुता का जहर फैलता जा रहा है। साम्प्रदायिकता से प्रभावित व्यक्ति, समाज और राष्ट्र एक-दूसरे के प्रति असद्भावों को पहुंचाता है। धर्म और धर्म नीति जब मदान्ध ता को चुन लेती है, तब वहां साम्प्रदायिकता उत्पन्न हो जाती है। उस समय धर्म, धर्म नहीं रह जाता है वह तो काल का रूप धारण करके मानवता को ही समाप्त करने पर तुल जाता है। फिर नैतिकता, शिष्टता, उदारता, सरलता, सहृदयता आदि सात्विक और दैवीय गुणों और प्रभावों को कहीं शरण नहीं मिलती है।

प्रश्न 1: संप्रदायवाद से चारों ओर भेदभाव, नफरत और.....का जहर फैलता जा रहा है।

उत्तर : कटुता

प्रश्न 2: कथन सही करो

सम्प्रदायवाद से अच्छे परिणाम आ रहे हैं।

उत्तर : सम्प्रदायवाद से बुरे परिणाम आ रहे हैं।

प्रश्न 3: साम्प्रदायिकता किसकी दुश्मन है?

1. असमानता 2. अधर्म 3. मानवता 4. राहगीरी

उत्तर : मानवता

प्रश्न 4: साम्प्रदायिकता के गुण नहीं हैं

1. नैतिकता 2. सरलता 3. शिष्टता 4. धर्मान्धता

i) 1, 2 व 4 ii) 2,3 व 4

iii) 1, 2 व 3 iv) 1, 2, 3 व 4

उत्तर - iii

8. भारत संघ राज्य कई संघीय इकाईयों जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश आदि से मिलकर बना है। इनको हम राज्य बोलते हैं। संविधान में भी कुछ जगहों पर इनके लिए राज्य शब्द का प्रयोग हुआ है। इसी तरह संयुक्त राज्य अमेरिका की सभी इकाईयों के लिए राज्य शब्द का प्रयोग किया जाता है।

इन संघीय इकाईयों के लिए राज्य शब्द का प्रयोग करना गलत है क्योंकि संघ राज्यों की इन इकाईयों में राज्य का निर्माण करने वाले प्रथम तीन तत्व (निश्चित भू-क्षेत्र, जनसंख्या और सरकार) तो मौजूद रहते हैं लेकिन इनकी आंतरिक संप्रभुता सीमित होती है और बाहरी संप्रभुता तो इन्हें बिल्कुल ही प्राप्त नहीं होती है।

प्रश्न 1: राज्य के लिए मुख्य तीन तत्व हैं....., ...और.....।

प्रश्न 2: संविधान में उत्तर प्रदेश, बिहार आदि के लिए.....शब्द का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 3: कथन सही करो

राज्य को आंतरिक संप्रभुता बिल्कुल ही प्राप्त नहीं होती है और बाहरी संप्रभुता तो सीमित होती है।

9. "सत्तावादी राज्य में सारी स्वतंत्रताएं छीन ली जाती हैं और सरकार की जनता के प्रति कोई जवाबदेही नहीं होती।" भारत के संदर्भ में उपर्युक्त कथन की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

6 अंक प्रश्न

1. नागरिक समाज क्या होता है? आज दुनिया में इसका क्या महत्त्व है? उदाहरण सहित वर्णन करें।
2. सांप्रदायिकता किसे कहते हैं? क्या यह तनाव और हिंसा का पुनरावर्त्तक स्रोत रहा है?
3. आपकी राय में राज्यों के भाषाई पुनर्गठन ने भारत की एकता को बढ़ाया या नुकसान पहुँचाया?

Linguistic composition (2001)*

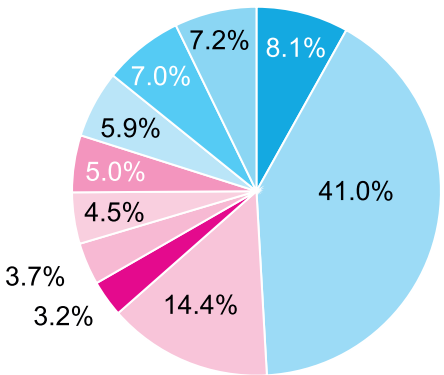

Linguistic Distribution in India (2001 Census)

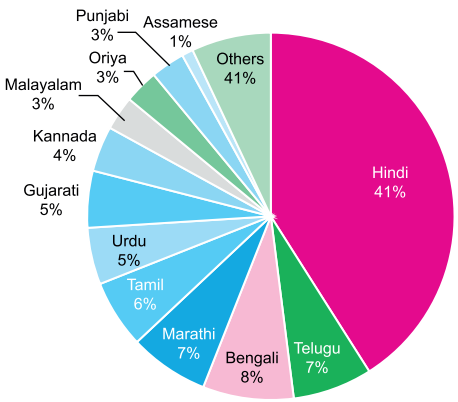

4. भारत में भाषाई संरचना के स्वरूप को व्यक्त करें।

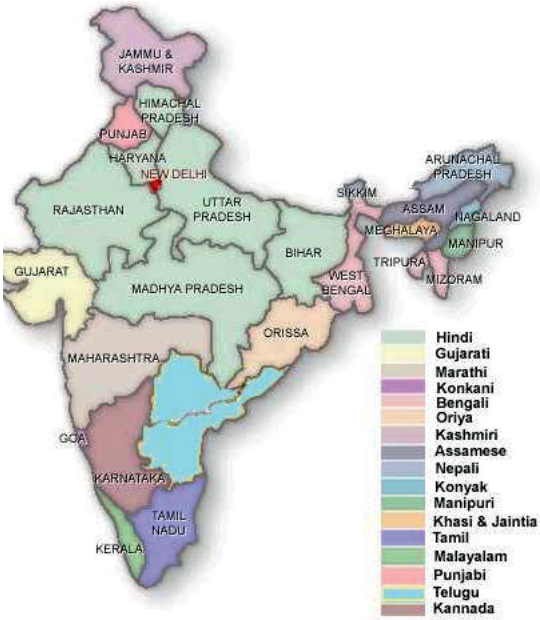

5. भारत में भाषाई संरचना के क्षेत्रीय स्वरूप को व्यक्त करे।

परियोजना कार्य के लिये सुझाव

समाजशास्त्र

कक्षा-12वीं

पाठ्यक्रम में संशोधन के फलस्वरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा 2005 के अनुसार समाजशास्त्र में परियोजना 2008-09 में शुरू किया गया। यह किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक विद्यालय और घर के बीच अंतराल बनाये हुए है। इस प्रयास में जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। कक्षा 11वीं तथा 12वीं की पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न परियोजना।संभावित समस्याओं को ध्यान में रखने का प्रयास किया गया है जो विभिन्न संदर्भों, परिस्थितियों या विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में ऐसे शोध कार्यों के दौरान उपस्थित हो सकते हैं। पाठ्यपुस्तक में सिर्फ सुझाव मात्र हैं। छात्र अपने अध्यापकों के साथ विचार विमर्श कर अन्य शोध परियोजनाएँ तैयार कर उन पर कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं।

बाह्य परीक्षक द्वारा मूल्यांकन किया जाएगा, जो व्यवहारिक परियोजना कार्य के लिए निर्धारित 20 अंक का विभाजन है।

अंकन योजना (MARKING SCHEME)

S.No.	ITEM	MARKS
1.	परिचय **(Introduction)**	2 अंक
2.	प्रयोजन का कथन **(Statement of Purpose)**	2 अंक
3.	शोध प्रश्न **(Research Question)**	2 अंक
4.	कार्यप्रणाली **(Methodology)** (शोध पद्धति)	3 अंक
5.	डेटा विश्लेषण **(Data Analysis)**	4 अंक
6.	निष्कर्ष **(Conclusion)**	2 अंक
	परियोजना **(VIVA)**	5 अंक
	कुल अंक	20 अंक

परियोजना कार्य - विस्तृत विवरण

अनुसंधाान के बारे में पढ़ने और उसे वास्वत में करने में बहुत अंतर होता है। किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए व्यावहारिक प्रयास करना और सुव्यवस्थित रूप से साक्ष्य इकट्ठा करना एक अत्यंत उपयोगी अनुभव है।

एक वास्तविक अनुसंधान परियोजना निश्चित रूप से अधिक विस्तृत होगी और उसे संपन्न करने के लिए छात्रों को विद्यालय में उपलब्ध समय से कहीं अधिक समय देने एवं प्रयत्न करने की आवश्यकता होगी। प्रत्येक अनुसंधान प्रश्न यानि शोध विषय पर कार्य करने के लिए उपयुक्त अनुसंधान पद्धति की आवश्यकता होती है। एक प्रश्न का उत्तर अक्सर एक से अधिक पद्धतियों से दिया जा सकता है लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि एक अनुसंधान पद्धति सभी प्रश्नों के लिए उपयुक्त हो। यह चयन व्यावहारिकता को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए। इससे अनेक बातें शामिल हो सकती हैं जैसे-अनुसंधान के लिए उपलब्ध समय की मात्रा, लोगों एवं सामग्री दोनों के रूप में उपलब्ध संसाधन, परिस्थितियॉ इत्यादि।

एक निर्धारित प्रश्न चुन लेने के बाद अगला कदम होता है उपयुक्त पद्धति का चयन करना। पद्धति के आधार पर एक प्रश्नावली तैयार करनी होगी। तत्पश्चात प्रश्नावलियों को इकट्ठा करके उनसे परिणामों का विश्लेषण करेंगे।

प्रस्तावना

इसके अंतर्गत हम विषय का पूर्व ज्ञान बताएंगे कि अब तक उस विषय के बारे में हमें क्या पता है। लिए गए टॉपिक का एक सामान्य परिचय दें। अपनी शोध समस्या और उद्देश्य बताएं। अपने विषय पर प्रासंगिक साहित्य को संक्षेप में लिखें। विषय की वर्तमान स्थिति का वर्णन करें। विषय में किसी भी अंतराल पर ध्यान दें जो आपका अध्ययन संबोधित करेगा

प्रयोजन का कथन

अपने आप को, अपनी रुचियों और प्रेरणाओं का परिचय दें। अपने पिछले करियर को संक्षेप में बताएं। अपनी हाल की और वर्तमान गतिविधियों की प्रासंगिकता पर चर्चा करें। विषय को चुनने का औचित्य क्या है इसको संक्षेप में बताएं। विषय कि चुनौतियाँ क्या हैं और आप क्या समझना चाहते हैं संक्षेप में बताएं

शोध प्रश्न

सामान्य तौर पर एक अच्छा शोध प्रश्न स्पष्ट और केन्द्रित होना चाहिए। दूसरे शब्दों में प्रश्न स्पष्ट रूप से बताना चाहिए कि अनुसंधानकर्ता को क्या करने की आवश्यकता है। प्रश्न न ज्यादा व्यापक हो और न ही ज्यादा संकीर्ण हो।

शोध पद्धति - विषय की मांग, समय, धन खर्च करने की सीमा आदि बातों को ध्यान में रखकर पद्धति का चुनाव किया जाता है।

मुख्य विभिन्न शोध पद्धतियाँ

1. **सर्वेक्षण प्रणाली**- इस प्रणाली के अंतर्गत सामान्यत: निर्धारित प्रश्नों को बड़ी संख्या में लोगों से पूछा जाता है। इस प्रणाली से लोगों के विचारों को जाना जा सकता है।

2. **साक्षात्कार**- साक्षात्कार हमेशा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है और इसमें काफी कम लोगों को शामिल किया जाता है। साक्षात्कार में लचीलापन होता है। इसमें विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है।

3. **प्रेक्षण**- प्रेक्षण पद्धति के अंतर्गत शोधकर्ता को अपने शोध करने के लिए निर्धारित परिस्थिती या संदर्भ में क्या-क्या हो रहा है इस पर बारीकी से नजर रखनी होती है और उसका अभिलेख तैयार करना होता है।

डेटा विश्लेषण

डेटा विश्लेषण डेटा का वर्णन और चित्रण, संक्षेपण और पुनरावृत्ति करने और डेटा का मूल्यांकन करने के लिए सांख्यिकीय / या तार्किक तकनीकों को व्यवस्थित रूप से लागू करने की प्रक्रिया है। दरअसल, शोधकर्ता आमतौर पर संपूर्ण डेटा संग्रह करके उनका विश्लेषण करते हैं। सूचनादाताओं से प्राप्त सूचनाओं को सारणीबद्ध करके उनका अध्ययन करना विश्लेषण कहलाता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार अंत में हम सूचनाओं के आधार पर परिणाम निकाल सकते हैं।

परियोजना VIVA

परीक्षा वाले दिन बाह्य परीक्षक प्रोजेक्ट के आधार पर प्रश्न पूछ कर **VIVA** के अंकों का निर्धारण करता है।

सैंपल प्रोजेक्ट

विषय : कोरोना काल में दिल्ली शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षण कार्य

परिचय

जैसा कि सभी को पता है कि विश्व इस वक्त कोरोना महामारी का शिकार है और पूरा विश्व जैसे थम सा गया है। मार्च 2020 में पूरा विश्व लॉक डाउन की स्थिति का सामना कर रहा है और बच्चों की पढ़ाई बाधित हो गई है। विद्यालय और विश्वविद्यालय बंद कर दिए गए हैं तथा घरों से निकलना भी केवल विशेष परिस्थितियों में ही हो पाता है। लोग वापिस अपने गांव की ओर लौट गए हैं। बच्चे घरों में कैद हो गए हैं। ऐसे समय में दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग ने शिक्षण कार्य को जारी रखने की संभावनाएं तलाशना शुरू किया और आधुनिक तकनीकों का सहारा लेते हुए ऑनलाइन शिक्षा की शुरुआत की।

प्रयोजन का कथन

इस विषय को चुनने का मेरा उद्देश्य यह है कि जब सामान्य तरीके से पढ़ाई न हो पा रही हो तब किन विधियों का प्रयोग करके पढ़ाई जारी रखी जा सकती है। आधुनिक तकनीक का जमाना है और नई पीढ़ी आधुनिक तकनीकों को अच्छी तरह समझती है। मोबाइल, इंटरनेट या आधुनिक अन्य उपकरण आम आदमी की पहुंच में हैं तो क्यों न इस विधि का सहारा लिया जाये। इन तकनीकों के उपयोग से पढ़ाई कितनी सफल रही और क्या भविष्य में जरूरत पड़ने पर इसे जारी रखा जा सकता है? हर मुसीबत एक नया रास्ता दिखा कर जाती है। कोरोना के कारण हम भी नई तकनीकों का प्रयोग करके पढ़ाई को नई तकनीकों के साथ जोड़ कर नए आयाम छू सके।

शोध प्रश्न

पढ़ाई को जारी रखने में आधुनिक तकनीकें किस सीमा तक सहायक हो सकती हैं?

अथवा

कहीं आधुनिक तकनीकें हमें उन पर आश्रित होना तो नहीं सिखा रहीं?

अथवा

दिल्ली के शिक्षा विभाग की ऑनलाइन क्लास का प्रयोग कितना सफल रहा?

शोध पद्धति

उपरलिखित मुद्दे को जानने के लिए प्रश्नावली पर आधारित सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है। विभिन्न प्रश्नों को सामने रखकर हम इनके उत्तर जान सकते हैं। क्योंकि ऐसे समय में घर से बाहर ज्यादा निकलना उचित नहीं होगा। अत: ऐसे में ऑनलाइन तकनीक का ही सहारा लेकर लोगों से ऑनलाइन संपर्क किया जाये और आंकड़े इकट्ठे किए जाएँ या फिर केवल कोरोना बचाव के तरीकों का पूरी तरह से पालन करते हुए ही लोगों से मिला जाए। इसके लिए 15 से 20 प्रश्नों की एक प्रश्नावली बनायी जाये और गूगल फॉर्म बनाकर ऑनलाइन ऐप्प जैसे व्हाट्सप्प, फेसबुक, ट्विटर आदि का प्रयोग किया जाए ताकि ईमेल से प्रतिक्रियाएं मिल सकें। प्रश्नों के लिए साधारण भाषा का प्रयोग किया जाए और प्रश्न इस प्रकार बनाए जाएं ताकि सूचनादाता आसानी से सूचनाएं दे सके। प्रश्न बहुविकल्पीय होने चाहिए ताकि सूचनादाता उनका उत्तर देने में आसानी महसूस करें। पश्न कुछ इस तरह के हो सकते हैं :-

1. आपके पास कौन से आधुनिक उपकरण हैं?
2. क्या आपको मोबाइल में इंटरनेट का प्रयोग करना आता है?
3. क्या मोबाइल आपके पास रहता है या घरवालों के पास?
4. किस समय उपकरण का प्रयोग करने में आपको सुविधा होती है?
5. क्या आप इन माध्यमों से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं?
6. आप इस माध्यम से शिक्षा प्राप्त करके क्या नया सीख सके?
7. क्या भविष्य में भी आप इसको जारी रखने के पक्ष में हैं?

डेटा विश्लेषण

उपर्युक्त सूचनाएं मिलने के बाद इन सूचनाओं को सारणीबद्ध करके इनकी तालिका बनायी जाए और डेटा को अलग कर लिया जाए जैसे कितने लोगों के पास मोबाइल था, कितने प्रतिशत लोग इनका लाभ उठा सके। कितने लोगों तक शिक्षा का यह नया प्रारूप अपनी पहुंच बना सका। पाई चार्ट या ग्राफ या बार डायग्राम के माध्यम से इन सूचनाओं को दिखाया जा सकता है।

निष्कर्ष

चित्र या पाई चार्ट या बार डायग्राम आदि के माध्यम से कोई भी इन सूचनाओं के आधार पर निष्कर्ष निकाल सकता है कि पढ़ाई का यह तरीका कितना सफल रहा और समय पड़ने पर इस पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है या नहीं।

संभावित शोध Topic / विषय

1. मास मीडिया और उनकी सामाजिक जीवन में बदलती भूमिका।
2. सार्वजनिक परिवहन: लोगों के जीवन में इसकी क्या भूमिका है?
3. सामाजिक जीवन में संचार माध्यमों की क्या भूमिका है?
4. विभिन्न आयु में (जैसे कक्षा 5, 8, 11) विद्यालयी बच्चों की बदलती हुई आकांक्षाएं।
5. झोपड़पट्टी के निवासियों की समस्याएँ।
6. बच्चो।के प्रति अपराध।
7. वृद्धावस्था में घरों में रहने वाले लोगों की भावनात्मक स्थिति।
8. सरकारी स्कूलों में पढ़ाई और लड़कियों की करियर आकांक्षाएँ।
9. दिल्ली विश्वविद्यालय में उच्च कटऑफ के बारे में आशंकाएँ।
10. युवाओं का राजनीति की तरफ रुझान।
11. कोरोना के बाद जीवन।
12. कोरोना समय में शिक्षा।
13. महामारी के समय जीवन।
14. लॉकडाउन का अनुभव।
15. वर्क फ्राम होम।
16. प्रवासी मजदूरों की समस्याएँ।
17. असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों की समस्याएँ।

समाजशास्त्र (कोड़ नं. 39)

पुस्तक 2

भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास

क्र.सं.	पाठ	अंक
1.	**अध्याय 1 :** संरचनात्मक परिवर्तन	5
2.	**अध्याय 2 :** सांस्कृतिक परिवर्तन	5
3.	**अध्याय 4 :** ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन	10
4.	**अध्याय 5 :** औद्योगिक समाज में परिवर्तन तथा विकास	10
5.	**अध्याय 8 :** सामाजिक आंदोलन	10
	कुल	40

अध्याय - 1

संरचनात्मक परिवर्तन

मुख्य बिन्दु

1. ● संरचनात्मक परिवर्तन

   समाज में आने वाले परिवर्तन, जो समाज की संरचना में परिवर्तन लाते हैं, संरचनात्मक परिवर्तन कहलाते हैं।

2. ● उपनिवेशवाद

   ● एक स्तर पर एक देश द्वारा दूसरे देश पर शासन को उपनिवेशवाद माना जाता है। भारत में यह शासन किसी अन्य शासन से अधिक प्रभावशाली रहा। उपनिवेशवाद ने सामाजिक संरचना एवं संस्कृति में परिवर्तनों को दिशा दी एवं उन पर अनेक प्रभाव डाले।

   ● उपनिवेशवाद ने राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक सरंचना में नवीन परिवर्तन किए परन्तु मुख्य संरचात्मक परिवर्तन-औद्योगीकरण व नगरीकरण है।

3. ● उपनिवेशवाद का भारतीय समाज पर प्रभाव :-

   i) भारत में आधुनिक विचार एवं संस्थाए औपनिवेशिक काल की देन है, हमारे देश की संसदीय विधि एवं शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिश प्रारूप व प्रतिमानों पर आधारित है।

   ii) सड़कों पर बांए चलना, ब्रेड-आमलेट और कटलेट जैसी खाने की चीजें इस्तेमाल करना, नेक-टाई पोशाक पहनना, अंग्रेजी भाषा का अधिक प्रयोग करना आदि।

   (iii) उपनिवेशवाद का भारतीय समाज पर प्रभाव ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवादी व्यवस्था पर आधारित था। इसने आर्थिक व्यवस्था में बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप किया, जिसके कारण इसे मजबूती मिली। वस्तुओं की उत्पादन प्रणाली व वितरण के तरीके भी बदल गए।

   (iv) जंगल काट कर चाय की खेती की शुरूआत की तथा जंगलों को नियंत्रित एवं प्रशासित करने के लिए अनेक कानून बनाए।

(v) उपनिवेशवाद के दौरान लोगो का आवगमन बढ़ा : डाक्टर व वकील मुख्यत: बंगाल व मद्रास से चुनकर देश विदेश के विभिन्न भागों में सेवा के लिए भेजे गए। व्यवसायियों का आवागमन भी बढ़ा। यह भारत तक सीमित न रह कर सुदूर एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिका उपनिवेश तक बढ़ गया।

(vi) आज के झारखंड प्रदेश से उन दिनों बहुत से लोग चाय बागानों में मजदूरी करने के उद्देश्य से असम आए। भारतीय मजदूरों एवं दक्ष सेवाकर्मियों को जहाजों के माध्यम से सुदुर एशिया, अफ्रीका और अमेरिका भेजा गया।

(vii) उपनिवेशवाद द्वारा वैधानिक, सांस्कृतिक व वास्तुकला में भी परिवर्तन आया। कुछ परिवर्तन सुनियोजित तरीकों से लागू किए गए थे।

(viii) जैसे पश्चिमी शिक्षा पद्धति को भारत में इस उद्देश्य से लाया गया कि उससे भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार हो जो ब्रिटिश उपनिवेशवाद को बनाए रखने में सहयोगी हो। यही पश्चिमी शिक्षा पद्धति राष्ट्रवादी चेतना एवं उपनिवेश विरोधी चेतना का माध्यम बनी।

(ix) ब्रिटिश उपनिवेशवाद अब भी हमारे जीवन का एक जटिल हिस्सा है। हम अंग्रेजी भाषा का उदाहरण ले सकते हैं।

(x) बहुत से भारतीयों ने अंग्रेजी भाषा में उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाएँ की है। अंग्रेजी के ज्ञान के कारण विशेष स्थान प्राप्त है। जिसे अंग्रेजी का ज्ञान नहीं होता है उसे रोजगार के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अंग्रेजी ज्ञान से अब दलितों के लिए भी अवसरों के द्वार खुल गए है।

4. ● पूँजीवाद–एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों का स्वामित्व कुछ विशेष लोगों के हाथ में होता है। इसमें ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने पर जोर दिया जाता है। इसे गतिशीलता, वृद्धि, प्रसार, नवीनीकरण, तकनीक तथा श्रम के बेहतर उपयोग के लिए जाना गया। इससे बाजार को एक विस्तृत भूमंडलीकरण के रूप में देखा जाने लगा। भारत में भी पूँजीवाद के विकास के कारण उपनिवेशवाद प्रबल हुआ और इस प्रक्रिया का प्रभाव भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना पर पड़ा।

● अगर पूंजीवादी व्यवस्था शक्तिशाली आर्थिक व्यवस्था बन सकती है तो राष्ट्र राज्य भी सशक्त एवं प्रबल राजनीतिक रूप ले सकता है। औद्योगीकरण के कारण नए सामाजिक समूह एवं नए सामाजिक रिश्तों का विकास हुआ।

5. **नगरीकरण और औद्योगीकरण:-**

उपनिवेशवाद के दौरान दो संरचनात्मक परिवर्तन हुए:-

- हम नगरीकरण को औद्योगीकरण से जोड़कर देखते है।
- औद्योगीकरण का सम्बन्ध यान्त्रिक उत्पादन के उदय से है जो ऊर्जा के गैरमानवीय संसाधनों पर निर्भर होता है इसमें ज्यादातर लोग कारखानों, दफ्तरों तथा दुकानों में काम करते है। तथा इसके कारण कृषि व्यवसाय में लोगों की संख्या कम होती जा रही है। औपनिवेशिक काल के दौरान नगरीकरण में पुराने शहरों का अस्तित्व कमजोर होता गया और उनकी जगह पर नए औपनिवेशक शहरों का उद्‌भव और विकास हुआ।
- नगरीकरण को औद्योगीकरण से जोड़ कर देखा जा सकता है। दोनों एक साथ होने वाली प्रकियाएँ है कई बार औद्योगिक क्षरण भी देखा गया है। भारत में कुछ पुराने, परंपरागत नगरीय केन्द्रों का पतन हुआ। जिस तरह ब्रिटेन में उत्पादन व निर्माण को बढ़ावा मिला उसके विपरीत भारत में गिरावट आई। प्राचीन नगर जैसे-सूरत ओर मसुलीपट्‌टनम का अस्तित्व कमजोर हुआ।
- आधुनिक नगर जैसे बंबई, कलकत्ता, मद्रास जो उपनिवेशवादी शासन में प्रचलित हुए और मजबूत होते चले गए।
- बंबई से कपास, कलकत्ता से जूट, मद्रास से कहवा, चीनी, नील तथा कपास ब्रिटेन को निर्यात किया जाता था।
- प्रारम्भ में भारत के लोग औद्योगीकरण के कारण ब्रिटिशों के विपरीत कृषि क्षेत्र की ओर आए। इस प्रकार नए सामाजिक समूह तथा नए सामाजिक सम्बन्धों का उदय हुआ।
- स्वतंत्रता के बाद भारत की आर्थिक स्थिति को औद्योगीकरण के द्वारा ही सुधारा जा सका। समाजशास्त्री एम.एस.ए. राव ने लिखा है कि भारत के अनेक गाँव भी तेजी से बढ़ रहे नगरीय प्रभाव में आ रहे है।
- ब्रिटिश साम्राज्य की अर्थव्यवस्था में नगरों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। समुद्र तटीय नगर जैसे बंबई, कलकत्ता औद मद्रास उपयुक्त माने गए थे। क्योंकि इन जगहों से उपभोग की आवश्यक वस्तुओं का निर्यात आसानी से किया जा सकता था। यही से उत्पादित वस्तुओं को सस्ती लागत से आयात किया जा सकता था।

6. चाय की बागवानी

- अधिकारिक रिपोर्ट से पता चलता है कि औपनिवेशिक सरकार गलत तरीकों से मजदूरों की भर्ती करती थी।
- मजदूरों से बलपूर्वक बागानों में सस्ते में काम कराया जाता था। इससे बागान वालो को फायदा मिलता था और मजदूरो का शोषण होता था।
- बागानों के मालिक अंग्रेज और उनकी मेम विशाल बंगलों में रहते थे। सारा जरूरत का सामान उनके पास मौजुद था। उनकी जिंदगी चका-चौंध सें भरी थी।

7. स्वतंत्र भारत में औद्योगीकरण

- औद्योगीकरण को स्वतंत्र भारत ने सक्रिय तौर पर बढ़ावा दिया।
- स्वदेशी आंदोलन ने भारत की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रति निष्ठा को मजबूत किया।
- तीव्र और वृहद् औद्योगीकरण के द्वारा आर्थिक स्थिति में सुधार आया और सामाजिक न्याय हो पाया।
- भारी मशीनीकृत उद्योगों का विकास हुआ। इन्हें बनाने वाले उद्योगों,, पब्लिक सेक्टर के विस्तार और बड़े को-ऑपरेटिव सेक्टर को महत्वपूर्ण माना गया।

8. स्वतंत्र भारत में नगरीकरण

- भूमण्डलीकरण द्वारा शहरों का अत्यधिक प्रसार हुआ।
- एम.एस.ए. राव के अनुसार भारतीय गाँव पर नगरों के प्रभाव-

(क) कुछ गाँव ऐसे है जँहा से अच्छी खासी संख्या में लोग दूरदराज के शहरों में रोज़गार ढूँढ़नें के लिए जाते है। बहुत सारे प्रवासी केवल भारतीय नगरों में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी रहते हैं।

(ख) शहरी प्रभाव उन गाँवों में देखा जाता है जो औद्योगिक शहरों के निकट स्थित है जैसे भिलाई।

(ग) महानगरों का उद्भव और विकास तीसरे प्रकार का शहरी प्रभाव है जिससे निकटवर्ती गाँव प्रभावित होते है। कुछ सीमावर्ती गाँव पूरी तरह से नगर के प्रसार में विलीन हो जाते है। जबकि वे क्षेत्र जहाँ लोग नहीं रहते नगरीय विकास के लिए प्रयोग में ले लिए जाते हैं।

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

1. एक स्तर पर एक देश द्वारा दूसरे देश पर शासन को ..... कहते हैं।

   उत्तर – उपनिवेशवाद

2. उपनिवेशवाद के दौरान मुख्य संरचनात्मक परिवर्तन ..... व ..... है।

   उत्तर – उत्पादन के साधन व वितरण

3. ..... एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जिसके उत्पादन के साधनों का स्वामित्व कुछ विशेष लोगों के हाथ में होता है।

   उत्तर – पूंजीवादी

4. ..... व ..... दोनों जुड़ी हुई प्रक्रियाएँ हैं।

   उत्तर – नगरीकरण, औद्योगीकरण

5. बागानों के मालिक ..... थे।

   उत्तर – अंग्रेज

6. कथन सही लिखें–

   (a) औपनिवेशिक सरकार **अंगूर** की बागवानी के लिए गलत तरीकों से मजदूरों की भर्ती करती थी।

   उत्तर – चाय

   (b) बागानों के मालिक अंग्रेज और उनकी मेम **दयनीय** स्थिति में रहते हैं।

   उत्तर – ऐशो–आराम

   (c) भारत में सड़कों पर बाएँ चलना, ब्रेड–आमलेट खाना, नेक–टाई पहनना उपनिवेशवाद का हिस्सा **नहीं** है।

   उत्तर – है

(d) आधुनिक नगर जैसे बंबई, कलकत्ता, मद्रास जो उपनिवेशवादी शासन में प्रचालित हुए **कमजोर** होते गए।

उत्तर - विकसित

7. ब्रिटिश साम्राज्य की अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित तटीय नगर की भूमिका महत्वपूर्ण थी।

(a) बंबई(b) कलकत्ता

(c) मद्रास (d) उपयुक्त तीनो

उत्तर - (d) उपयुक्त तीनो

8. किसके द्वारा भारतीय गाँव पर नगरों के प्रभाव को लिखा गया।

(a) एम.एस. ए राव (b) श्रीनिवास

(c) ए. आर. देसाई (d) सर सैयद अहमद खान

उत्तर - (a) एम.एस. ए राव

9. आधुनिकीकरण की अवधारणा किसने दी ?

(a) डेनियल लर्नर (b) डेनियल बेल

(c) डेनियल थॉर्नर (d) डेनियल गूच

उत्तर - (a) डेनियल लर्नर

10. उपनिवेशवाद का संबंध निम्न में से किससे है ?

(a) राष्ट्रवाद (b) प्रजातिवाद

(c) साम्राज्यवाद (d) पूँजीवाद

उत्तर - (d) पूँजीवाद

11. भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की स्थापना तथा विस्तार में कौन सहायक था ?

(a) लॉर्ड कार्नवालिस (b) लॉर्ड क्लाइव

(c) वारेन हेस्टिंग्ज (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर - (d) उपर्युक्त सभी

12. सन् 1995 में भारत में मलिन बस्तियों में रहनेवाले लोगों की संख्या कितनी थी ?

(a) 250 लाख (b) 450 लाख

(c) 300 लाख (d) 500 लाख

उत्तर - (b) 450 लाख

13. वर्तमान स्थिति में किसी भी प्रकार के और किसी भी स्तर के बदलाव को कहते हैं?

(a) परिवर्तन (b) मौसमी प्रवसन

(c) नगरीकरण (d) औद्योगीकरण

उत्तर - (a) परिवर्तन

14. यूरोप और अमेरिका की सभ्यताओं की संस्कृति से प्रभावित होकर होने वाले परिवर्तन को कहते हैं।

(a) उपनिवेशवाद (b) मौसमी प्रवसन

(c) पश्चिमीकरण (d) मलिन बस्तियाँ

उत्तर - (c) पश्चिमीकरण

15. ''सामाजिक परिवर्तन से तात्पर्य सामाजिक ढाँचे के परिवर्तन से हैं'' यह कथन किसका था ?

(a) जॉनसन (b) गिलिन तथा गिलिन

(c) डॉ. मजूमदार (d) मैकाइवर तथा पेज

उत्तर - (a) जॉनसन

16. भारत में औद्योगीकरण लगभग कितना वर्ष पुराना है ?

(a) 200 (b) 300 (c) 400 (d) 100

उत्तर - (d) 100

17. घटते हुए पूँजी निवेश तथा निर्माण की मात्रा में अत्यधिक हास के साथ-साथ अर्थव्यवस्था के सेवा क्षेत्र के उत्पादन नियोजन में वृद्धि ..... कहलाती है ?

(a) पूंजीवाद (b) औद्योगिकरण (c) विऔद्योगीकरण

उत्तर - (c) विऔद्योगीकरण

18. योजना आयोग का गठन हुआ था

(a) 1952 (b) 1951 (c) 1950 (d) 1953

उत्तर - (c) 1950

19. राष्ट्रीय योजना समिति के संपादक थे

(a) के टी शाह (b) एम् आर शाह

(c) सुब्रत शाह (d) हरीश पटेल

उत्तर - (a) के टी शाह

20. ब्रिटेन के लिए सामान उतारने और चढाने के लिए ..... जगह का प्रयोग किया जाता था

(a) रामपुर (b) सीतापुर (c) परबतपुरी (d) हाजीपुरी

उत्तर - (c) परबतपुरी

2 अंक प्रश्न

1. अंग्रेजी भाषा ने हमारे समाज पर क्या प्रभाव डाला?
2. उपनिवेशवाद क्या है?
3. पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का भारत में क्या प्रभाव पड़ा?
4. पूंजीवाद किसे कहा जाता है?
5. औद्योगीकरण तथा शहरीकरण की परिभाषा लिखें?
6. ब्रिटेश औद्योगीकरण का भारतीय उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा?
7. आजादी के बाद भारत में औद्योगीकरण किस प्रकार हुआ।
8. औद्योगिक क्षरण क्या है?

4 अंक प्रश्न

1. उपनिवेशवाद ने हमारे जीवन को किस प्रकार प्रभावित किया?

(Outside Delhi 2018)

2. उपनिवेशवाद भारत में पहले शासनों से किस प्रकार भिन्न है?
3. उपनिवेशवाद के कारण लोगों का आवागमन बढ़ गया। कैसे?
4. उपनिवेशवाद के दौरान राष्ट्र राज्य की किस प्रकार उत्पत्ति हुई?
5. भारत में किन शहरों को अंग्रेजों ने बसाया तथा क्यों?
6. अनुच्छेद पढ़कर उत्तर दीजिए :-

उपनिवेशवाद के आयामों व तीव्रता को समझने के लिए यह आवश्यक है कि पूंजीवाद की संरचना को समझा जाए। पश्चिम में पूंजीवाद का प्रारंभ एक जटिल प्रक्रिया के फलस्वरूप हुआ। इस प्रक्रिया में मुख्य रूप से यूरोप द्वारा शेष दुनिया की खोज, गैर यूरोपीय देशों की संपत्ति और संसाधनों का दोहन, विज्ञान और तकनीक का अद्वितीय विकास और इसके उपयोग से उद्योग एवं कृषि में रूपांतरण आदि सम्मिलित हैं।

(क) पूंजीवाद किसे कहते हैं?

(ख) इसकी विशेषताएँ बताइये।

(ग) उपनिवेशवाद व पूंजीवाद में क्या सम्बंध है?

(घ) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था एक.....अर्थव्यवस्था है।

7. अनुच्छेद पढ़कर उत्तर दीजिए :-

ब्रिटिश साम्राज्य की अर्थव्यवस्था में नगरों की भूमिका महत्वपूर्ण थी। समुद्र तटीय नगर जैसे बंबई, कलकत्ता और मद्रास उपयुक्त माने गए थे क्योंकि इन जगहों से उपभोग की आवश्यक वस्तुओं का निर्यात आसानी से किया जा सकता था।

(क) संरचनात्मक परिवर्तन किसे कहते हैं?

(ख) नगरीकरण और औद्योगीकरण किस तरह एक दूसरे के पूरक हैं? समझाइये।

(ग) ब्रिटिश काल में कौन-कौन सी वस्तुओं का भारत से निर्यात किया जाता था?

(घ) समुद्र तटीय नगरों का विस्तार शीघ्रता से क्यों हुआ?

6 अंक प्रश्न

1. नगरीकरण और औद्योगीकरण का परस्पर संबंध है। चर्चा करें।
2. स्वतंत्र भारत में एम.एस.ए. राव के अनुसार भारतीय गाँव पर नगरों के प्रभावों की चर्चा कीजिए।
3. चार्ट को समझकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए

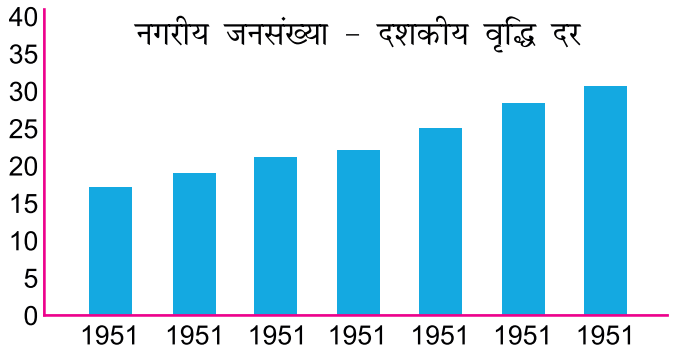

(क) नगरीकरण से आप क्या समझते हैं।

(ख) नगरीकरण में 1951 से 2011 तक किस प्रकार से परिवर्तन आया और उसके क्या कारण थे? उदाहरण सहित विस्तार से समझाइये।

अध्याय - 2

सांस्कृतिक परिवर्तन

मुख्य बिन्दु

1. सांस्कृतिक परिवर्तन को चार प्रक्रियाओं के रूप में देखा जा सकता है।

- संस्कृतिकरण, आधुनिकीकरण, लौकिकीकरण या धर्मनिरपेक्षीकरण, पश्चिमीकरण
- संस्कृतिकरण की प्रक्रिया उपनिवेशवाद से पहले भी थी लेकिन बाकी की तीन प्रक्रियाएं उपनिवेशवाद के बाद की देन है।

2. 19 वीं और 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुए समाज सुधार आंदोलनः-

- समाज सुधार आन्दोजन उन चुनौतियों के जवाब थे, जिन्हें भारत के लोग अनुभव कर रहे हो जैसे- सतीप्रथा, बालविवाह, विधवा पुनर्विवाह तथा जाति प्रथा। राजा राम मोहन राय ने सतीप्रथा का विरोध किया।
- समाज शास्त्री सतीश सबरवाल ने औपनिवेशिक भारत में आधुनिक परिवर्तनों के लिए निम्न पहलुओं को बताया।

(अ) **संचार माध्यम :** प्रेस, माईक्रोफोन, जहाज, रेलवे आदि। वस्तुओं के आवागमन में नवीन विचारों को तीव्र गति प्रदान करने में सहायता प्रदान की।

(ब) **संगठनों के स्वरूप :** बंगाल में ब्रह्म समाज और पंजाब में आर्य समाज की स्थापना हुई। मुस्लिम महिलाओं की राष्ट्र स्तरीय संस्था अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम की स्थापना हुई।

(स) विचार की प्रकृति- स्वतंत्रता तथा उदारवाद के नए विचार, परिवार संरचना, विवाह सम्बन्धी नियम, संस्कृति में स्वचेतन के विचार, शिक्षा के मूल्य।

- आधुनिक तथा पारम्परिक विचारधाराओं में वाद-विवाद हुए। ज्योतिबाफूले ने आर्यो से पहले को अच्छा काल माना। बाल गंगाधर तिलक ने आर्ययुग की प्रशंसा की, जहांआरा शाह नवाज़ ने अखिल भारतीय मुस्लिम महिला सम्मेलन में बहु-विवाह की कुप्रथा के विरूद्ध भाषण दिया तथा इसे कुरान की मूल भावनाओं के विरूद्ध बताया।

- समाज सुधारों के विरोधियों ने भी अपनी रूढ़िवादी बातों को उठाया। जैसे- सतीप्रथा के समर्थन में बंगाल में धर्म सभा का गठन हुआ।
- भारत में संरचनात्मक तथा सांस्कृतिक विविधता है।
- आधुनिक ज्ञान व शिक्षा के कारण शिक्षित भारतीयों को उपनिवेशवाद में अन्याय और अपमान का अहसास हुआ।

3. संस्कृतिकरण:-

उत्पत्ति एम.एन. श्रीनिवास

निम्न जाति या जनजाति या अन्य समूह उच्च जातियों विशेषकर, द्विज जाति की जीवन पद्धति,अनुष्ठान, मूल्य, आदर्श, विचारधाराओं का अनुकरण

संस्कृतिकरण का प्रभाव

- भाषा, साहित्य ,विचारधारा ,संगीत ,नृत्य नाटक , अनुष्ठान व जीवन पद्धति में
- मूलत: हिंदू समाज के अंतर्गत
- श्रीनिवास को गैर हिंदू संप्रदाय और समूह में भी यह प्रक्रिया दिखाई पड़ी
- देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग प्रभाव
- उच्च स्तरीय सांस्कृतिक जातियां प्रभुत्वशाली किसी न किसी स्तर का संस्कृतिकरण
- संस्कृतिकरण एम.एन. श्री निवास के अनुसार वह प्रक्रिया जिसमें निम्न जाति या जनजाति, उच्च जाति (द्विज जातियाँ) की जीवन पद्धति, अनुष्ठान मूल्य, आदर्श तथा विचारों का अनुकरण करते हैं। इसके प्रभाव भाषा, साहित्य, विचार-धारा, संगीत, नृत्य, नाटक, अनुष्ठान तथा जीवन पद्धति में देखे जा सकते हैं। यह प्रक्रिया अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग ढंग से होती है।
- जिन क्षेत्रों में गैर सांस्कृतिक जातियाँ प्रभुत्वशाली थी, वहां की संस्कृति को इन निम्न जातियों ने प्रभावित किया। श्री निवास ने इसे विसंस्कृतिकण का नाम दिया।
- **संस्कृतिकरण की आलोचना:-**
  - सामाजिक गतिशीलता निम्न जाति के स्तरीकरण में उर्ध्वगामी परिवर्तन करती है।
  - उच्च जाति की जीवन शैली उच्च तथा निम्न श्रेणी की जीवन शैली निम्न होने की भावना पाई जाती है।

- उच्च जाति की जीवन शैली का अनुकरण वांछनीय तथा प्राकृतिक है।
- यह अवधारणा असमानता तथा अपवर्जन पर आधारित है।
- निम्न जाति के प्रति भेदभाव एक विशेषाधिकार है।
- इसमें दलित समाज के मूलभूत पक्षों को पिछड़ा माना जाता है।
- लड़कियों को भी असमानता की श्रेणी में नीचे धकेल दिया जाता है।
- जातीय सदस्यता ही प्रतिभा की सूचक बन गई है। यही भावना दलितों में भी आई है। लेकिन फिर भी वे भेदभाव व अपर्वजन के शिकार है।

4. **पश्चिमीकरण**- ब्रिटिश शासन के 150 वर्षों में आए प्रौद्योगिकी, संस्था, विचारधारा, मूल्य परिवर्तनों को पश्चिमीकरण का नाम दिया गया। जीवनशैली एवं चिन्तन के अलावा भारतीय कला तथा साहित्य पर भी पश्चिमी संस्कृति का असर पड़ा है। ऐसे लोग कम ही थे जो पश्चिमी जीवन शैली को अपना चुके थे। इसके अलावा अन्य पश्चिमी सांस्कृतिक तत्वों जैसे नए उपकरणों का प्रयोग, पोशाक, खाद्य-पदार्थ तथा आम लोगों की आदतों और तौर-तरीकों में परिवर्तन आदि थे। मध्य वर्ग के एक बड़े हिस्से के परिवारों में टेलीविजन, फ्रिज, सोफा-सेट, खाने की मेज मौजूद होना एक आम बात है।

- श्रीनिवास के अनुसार निम्न जाति के लोग संस्कृतिकरण जबकि उच्च जाति के लोग पश्चिमीकरण की प्रक्रिया को अपनाते है।

5. **आधुनिकीकरण:**- प्रारम्भ में आधुनिकीकरण का आशय प्रौद्योगिकी ओर उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से था। परन्तु आधुनिक विचारों के अनुसार-सीमित, संकीर्ण स्थानीय दृष्टिकोण कमजोर पड़ जाते है। और सार्वभौमिक दृष्टिकोण यानि पूरा विश्व एक कुटुम्ब है को महत्त्व दिया जाता है।

6. **आधुनिकीकरण और धर्मनिरपेक्षीकरण:**-

- ये धनात्मक तथा अच्छे मूल्यों की ओर झुकाव है।
- आधुनिकीकरण का आशय प्रौद्योगीकरण और उत्पादन प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से है। इसका मतलब विकास का वो तरीका जिसे पश्चिमी यूरोप या उत्तर अमेरीका ने अपनाया।
- आधुनिकीकरण का मतलब ये समझ में आता है कि इसके समक्ष सीमित-संर्कीण-स्थानीय दृष्टिकोण कमजोर पड़ जाते है और सार्वभौमिक प्रतिबंद्धता और विश्वजनीन दृष्टिकोण ज्यादा प्रभावशाली होता है।

- इसमें उपयोगिता, गणना और विज्ञान की सत्यता को भावुकता, धार्मिक पवित्रता ओर अवैज्ञानिक तत्वों के स्थान पर महत्व दिया जाता है।
- इसके मूल्यों के मुताबिक समूह/संगठन का चयन जन्म के आधार पर नहीं बल्कि इच्छा के आधार पर होता है।
- धर्मनिरपेक्षीकरण का मतलब ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें धर्म के प्रभाव में कमी आती है।
- आधुनिक समाज ज्यादा ही धर्मनिरपेक्ष होता है।

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

1. कथन सही करें–

   (a) धर्मनिरपेक्षीकरण का मतलब ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें धर्म के प्रभाव में **अधिकता** आती है।

   (b) एम.एस. राव के अनुसार निम्न जाति के लोग संस्कृतिकरण जबकि उच्च जाति के लोग पश्चिमीकरण की प्रक्रिया को नहीं अपनाते हैं।

   (c) संस्कृतिकरण की आलोचना के अंतर्गत उच्च जाति की जीवन शैली का अनुकरण वांछनीय तथा प्राकृतिक नहीं है।

   (d) समाज सुधारकों ने सती प्रथा, बाल विवाह, विधवा पुनर्विवाह तथा जाति प्रथा के विरुद्ध आंदोलन **नहीं** चलाए।

उत्तर – (a) कमी (b) एम. एन. श्रीनिवास (c) निम्न जाति (d) चलाए

2. सामाजिक गतिशीलता ..... जाति के स्तरीकरण में उर्ध्वगामी परिवर्तन करती है।

उत्तर – निम्न

3. सती प्रथा के समर्थन में बंगाल में ..... सभा का गठन हुआ।

उत्तर – धर्म

4. आधुनिकीकरण का आशय ..... और ..... प्रक्रियाओं में होने वाले सुधार से था।

उत्तर – प्रौद्योगिकी, उत्पादन

5. ..... ने औपनिवेशिक भारत में आधुनिक परिवर्तनों के लिए तीन पहलुओं को बताया।

उत्तर – सतीश सबरवाल

6. संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसमें निम्न जाति किसकी जीवन पद्धति, विचारों का अनुकरण करते हैं–

(a) उच्च जाति (b) दलित

(c) अनुसूचित जाति (d) अनुसूचित जनजाति

उत्तर – (a) उच्च जाति

7. उपनिवेशवाद के दौरान लोगों द्वारा अपनाया नहीं गया।

(a) पश्चिमी पोशाक (b) पश्चिमी खाद्य-पदार्थ

(c) पश्चिमी संस्कृति (d) पश्चिमी देशों में रहना

उत्तर – (d) पश्चिमी देशों में रहना

8. आधुनिकीकरण का आशय है–

(a) गणना और विज्ञान की सत्यता की भावुकता

(b) धार्मिक पवित्रता

(c) अवैज्ञानिक तत्वों को महत्व देना

(d) सीमित-संकीर्ण स्थानीय दृष्टिकोण होना

उत्तर – (a) गणना और विज्ञान की सत्यता की भावुकता

9. निम्नलिखित में किसने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की?

(a) बी0 आर0 अम्बेडकर (b) ज्योतिबा फूले

(c) दयानंद सरस्वती (d) केशवचन्द्र सेन

उत्तर – (b) ज्योतिबा फूले

10. संस्कृतिकरण की अवधारणा किसके द्वारा दी गई है ?

(a) योगेश अटल (b) योगेन्द्र सिंह

(c) एम. एन. श्रीनिवास (d) श्यामाचरण दूबे

उत्तर – (c) एम. एन. श्रीनिवास

11. आर्य समाज के संस्थापक इनमें से कौन थे?

(a) स्वामी सरस्वती (b) स्वामी दयानंद सरस्वती

(c) बी सरस्वती (c) इनमें कोई नहीं

उत्तर – (b) स्वामी दयानंद सरस्वती

12. धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है –

(a) धर्म को मानना (b) अपने धर्म का सम्मान करना

(c) सभी धर्मों का सम्मान करना (d) किसी धर्म का सम्मान न करना

उत्तर – (c) सभी धर्मों का सम्मान करना

13. सती प्रथा के खिलाफ आवाज सर्वप्रथम किसने उठायी?

(a) रामकृष्ण परमहंस (b) बाल गंगाधर तिलक

(c) स्वामी विवेकानन्द (d) राजाराम मोहन राय

उत्तर – (d) राजाराम मोहन राय

14. मुस्लिम समाज में व्यापक पैमाने पर सुधार आंदोलन कार्य किसने किया ?

(a) मौलाना अबुल कलाम आजाद (b) डॉ. जाकिर हुसैन

(c) सैयद अहमद खाँ (d) ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

उत्तर – (c) सैयद अहमद खाँ

15. Modernization of India Tradition नामक पुस्तक के लेखक कौन हैं ?

(a) प्रो0 एम0 एन0 श्रीनिवास (b) प्रोन्टी0 के ओमान

(c) प्रो0 योगेन्द्र सिंह (d) प्रो0 ए0 आर0 देसाई

उत्तर – (c) प्रो0 योगेन्द्र सिंह

16. एम0 एन0 श्रीनिवास ने पश्चिमीकरण की अवधारणा की विस्तृत व्याख्या अपनी पुस्तक

(a) मेथड इन सोशल एंथ्रोपॉलोजी में की

(b) सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया में की

(c) द डोमिनेंट कास्ट एंड अदर एस्सेज में की

(d) किनशिप ऑर्गनाइजेशन इन इंडिया में की

उत्तर – (b) सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया में की

17. भारतीय समाज की कौन सबसे प्रमुख विशेषता है ?

(a) अनेकता में एकता (b) वर्ण व्यवस्था

(c) जजमानी व्यवस्था (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर - (d) उपर्युक्त सभी

18. पश्चिमीकरण की अवधारणा किसने विकसित की?

(a) एम. एन . श्रीनिवास (b) एच. सी. दूबे

(c) मर्टन (d) परेटो

उत्तर - (a) एम. एन . श्रीनिवास

19. धर्मनिरपेक्षीकरण के आवश्यक तत्त्व निम्न में कौन-से हैं ?

(a) तार्किकता (b) विभेदीकरण की प्रक्रिया

(c) धार्मिक संकीर्णता का हास (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर - (d) उपर्युक्त सभी

20. सर्वोदय 'शब्द किसकी देन है ?

(a) स्वामी विवेकानन्द (b) राजा राम मोहन राय

(c) स्वामी दयानन्द (d) गाँधीजी

उत्तर - (d) गाँधीजी

2 अंक प्रश्न

1. 19वीं सदी में समाजसुधारकों ने बहुत से सामाजिक विषयों को उठाया? वे क्याथे?
2. 20वीं सदी के कुछ आधुनिक सामाजिक संगठनों के नाम बताइये।
3. निम्न का अर्थ बताइये।

   (अ) संस्कृतिकरण

   (ब) विसंस्कृतिकरण
4. आधुनिकता के विषय में आधारभूत बिन्दु क्या है?
5. पाश्चात्यीकरण (पश्चिमीकरण) तथा धर्म निरपेक्षता में क्या सम्बन्ध है?

4 अंक प्रश्न

1. जाति का धर्मनिरपेक्षीकरण पर नोट लिखे।
2. समाज सुधार आन्दोलन के मुख्य उद्देश्य एक जैसे थे, फिर भी वे अलग थे। समझाइए।
3. संस्कृतिकरण भेदभाव व असमानता को बढ़ावा देता है। इसका वर्णन करो।
4. ब्राह्मण विरोधी आन्दोलन तथा पिछड़े वर्गों के आन्दोलन का संस्कृतिकरण पर क्या प्रभाव पड़ा।
5. अनुच्छेद पढ़कर उत्तर दीजिए।

   संस्कृतिकरण की अवधारणा एक ऐसे प्रारूप को सही ठहराती है जो दरअसल असमानता और अपवर्तन पर आधाारित है। इससे संकेत मिलता है कि पवित्रता और अपवित्रता के जातिगत पक्षों को उपयुक्त माना जाए और इसलिए ये लगता है कि उच्च जाति द्वारा निम्न जाति के प्रति भेदभाव एक प्रकार का विशेषाधिकार है।

   (क) संस्कृतिकरण की अवधारणा.....द्वारा दी गई थी।

   (ख) यहां संस्कृतिकरण के किस पहलू की चर्चा की गई है?

   (ग) पवित्रता और अपवित्रता की बात यहां किस संदर्भ में की गई है?

   (घ) क्या संस्कृतिकरण से किसी भी समूह की समाज से स्थिति बदल सकती है? कैसे ?

6. अनुच्छेद पढ़कर उत्तर दीजिए।

   'आधुनिकता' का मतलब है कि सीमित-संकीर्ण-स्थानीय दृष्टिकोण का कमजोर पड़ जाना और सार्वभौमिक प्रतिबद्धता और विश्वजनीन दृष्टिकोण का ज्यादा प्रभावशाली बन जाना। इसमें उपयोगिता, गणना और विज्ञान की सत्यता को भावुकता, धार्मिक पवित्रता और अवैज्ञानिक तत्वों के स्थान पर महत्व दिया जाता है।

   (क) आधुनिकता से धर्म के प्रभाव में किस प्रकार से कमी आती है?,

   (ख) पंथनिरपेक्षीकरण से आप क्या समझते हैं।

   (ग) क्या पश्चिमीकरण का मतलब आधुनिकीकरण है?

6 अंक प्रश्न

1. संस्कृतिकरण की विभिन्न स्तरों पर आलोचना हुई है? इसके विषय में विस्तार से बताए।
2. औपनिवेशिक भारत में आधुनिक बदलाव के विषय में कुछ तथ्यों का वर्णन कीजिए।
3. अनुच्छेद पढ़कर उत्तर दीजिए।

   उपनिवेशवाद ने हमारे जीवन पर दूरगामी प्रभाव डाले। उन्नीवसीं सदी में हुए समाज सुधार आंदोलन उन चुनौतियों के जवाब थे जिन्हें औपनिवेशिक भारत महसूस कर रहा था। आप संभवत: उन सभी सामाजिक पहलुओं से अवगत हों जिन्हें भारतीय समाज में सामाजिक कुरीति माना जाता था। उन सामाजिक कुरीतियों से भारतीय समाज बुरी तरह से ग्रस्त था।

   (क) उपनिवेशवाद द्वारा हमारे जीवन पर डाले गए प्रभाव की चर्चा कीजिए।

   (ख) भारतीय समाज किन सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त था और कौन-कौन से प्रयास उनको मिटाने के लिए समाज सुधारकों द्वारा किए गए। विस्तार से बताइये।

अध्याय - 4

ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन

मुख्य बिन्दु

1. भारतीय समाज प्राथमिक रूप से ग्रामीण समाज है। 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 60 प्रतिशत लोग गाँव में रहते हैं। उनका जीवन कृषि तथा उनके संबंधित व्यवसाय पर चलता है तथा भूमि उत्पाद एक महत्वपूण साधन है। भारत के विभिन्न भागों के त्यौहार पोंगल (तमिलनाडु), बैसाखी (पंजाब), ओणम (केरल), बीहू (आसाम) तथा उगाड़ी (कर्नाटक) मुख्य रूप से फसल काटने के समय मनाए जाते हैं।

- कृषि तथा संस्कृति का घनिष्ठ संबंध है। ग्रामीण भारत की सामाजिकता भी कृषि आधारित है। व्यवसायों की भिन्नता यहाँ की जाति व्यवस्था प्रदर्शित करती है। जैसे धोबी, लोहार, कुम्हार, सुनार, नाई आदि। बहुत से अन्य विशेषज्ञ एवं दस्तकार जैसे कहानी सुनाने वाले, ज्योतिषी, पुजारी इत्यादि भी ग्रामीण जीवन में लोगों को सहारा देते हैं। ग्रामीण समाज में कृषि योग्य भूमि ही जीविका का एक मात्र साधन और सम्पत्ति का एक प्रकार है।

  बड़े और मध्यम जमींदार : बड़ी मात्रा में जमीन, जिसे पहले जमींदार के नाम से जाना जाता था। ?

  छोटे और सीमान्त भूस्वामी : ये छोटे किसान होते हैं जिनके पास कम जमीन होती है। ये केवल अपने परिवार के उपभोग के लिए अनाज का उत्पादन कर पाते हैं। इनके पास बाजार में बेचने के लिये अतिरिक्त उत्पादित वस्तुएं नहीं होती।

  काश्तकार/पट्टेदार : ये वो कृषक होते हैं, जो भूस्वामी से जमीन पट्टे पर लेते हैं।

  भूमिहीन खेतिहर मजदूर : जिनके पास अपनी जमीन नहीं है, दूसरों के लिये काम करते हैं।

महिलाओं की स्थिति : कानून महिलाओं को जमीन में बराबर का हिस्सा देता है। परंतु महिला का नाम केवल दिखावे के लिये होता है। उस पर अधिकार तो पुरुष ही रखते हैं।

2. **कृषिक संरचना**- भारत के कुछ भागों में कुछ न कुछ जमीन का टुकड़ा काफी लोगों के पास होता है जबकि दूसरें भागों में 40 से 50 प्रतिशत परिवारों के पास भूमि नहीं होती है। उत्तराधिकार के नियमों और पितृवंशीय नातेदारी के कारण महिलाएँ जमीन की मालिक नहीं होती। भूमि रखना ही ग्रामीण वर्ग संरचना को आकार देता है। कृषि मजदूरों की आमदनी कम होती है तथा उनका रोजगार असुरक्षित होता है। वर्ष में वे काफी दिन बेरोजगार रहते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में वर्ग और जाति संरचना

ग्रामीण क्षेत्रों में वर्ग और जाति संरचना परस्पर संबंधित हैं।

उच्च जाति को उच्च वर्ग माना जाता था।

उच्च जाति, अमीर लोग, बड़े और मध्यम भूमि मालिकों ने गांवों में संसाधनों और श्रम बल को नियंत्रित किया।

बंधुआ मजदूर: अनपढ़ थे और कोई कुशल काम करना नहीं जानते थे।

- प्रत्येक क्षेत्र में एक या दो जाति के लोग ही भूमि रखते हैं तथा इनकी संख्या भी गांव में महत्वपूर्ण है। समाजशास्त्री एम.एन. श्रीनिवास ने ऐसे ही लोगों को प्रबल जाति का नाम दिया है। प्रबल जाति राजनैतिक, आर्थिक रूप से शक्तिशाली होती है। ये प्रबल जाति लोगों पर प्रभुत्व बनाए रखती है। जैसे पंजाब के जाट सिक्ख, हरियाणा तथा पश्चिम उत्तरप्रदेश के जाट, आन्ध्र प्रदेश के कम्मास व रेड्डी, कर्नाटक के वोक्कालिगास तथा लिंगायत, बिहार के यादव आदि। अधिकतर सीमान्त किसान तथा भूमिहीन लोग निम्न जातीय समूह से होते हैं। वे अधिकतर प्रबल जाति के लोगों के यहाँ कृषि मजदूरी करते थे। उत्तरी भारत के कई भागों में अभी भी बेगार या मुफ्त मजदूरी जैसी पद्धति प्रचलन में है।
- शक्ति तथा विशेषाधिकार उच्च तथा मध्यजातियों के पास ही थे। संसाधनों की कमी और भू-स्वामियों के आर्थिक सामाजिक तथा राजनीतिक प्रभाव के कारण बहुत से गरीब कामगार पीढ़ियों से उनके यहां बंधुआ मजदूर की तरह काम करते हैं। गुजरात में इस व्यवस्था को हलपति तथा कर्नाटक में जीता कहते हैं।

3. भूमि सुधार के परिणाम

- **औपनिवेशिक काल में भूमि सुधार-**

  प्राथमिक उद्देश्य

  1. पहले से कृषिक संरचना में पैदा हुई बाधाओं को दूर करना।
  2. शोषण और सामाजिक असमानता को दूर करना।
  3. समाज के सभी वर्गों में स्थिति और अवसरों की समानता सुनिश्चित करना।

  (i) **जमींदारी व्यवस्था**- इस प्रणाली में जमींदार भूमि का स्वामी माना जाता था। सरकार से कृषक का सीधा सम्बंध नही होता था। अपितु जमींदार के माध्यम से भूमि का कर (कृषकों द्वारा) सीधा सरकार को दिया जाता था।

  (ii) **रैयतवाड़ी व्यवस्था**- (रैयत का अर्थ है कृषक) इस व्यवस्था में भूमि का कर कृषक द्वारा सीधा सरकार को जाता था। इस व्यवस्था में जमींदार को बीच में से हटा दिया था।

- **स्वतंत्र भारत में भूमि सुधार**- स्वतंत्र भारत में नेहरू और उनके नीति सलाहकारों ने 1950 से 1970 तक भूमि सुधार कानूनों की एक श्रृंखला शुरू की। राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर विशेष परिवर्तन किए।

  सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन थे।

  - जमींदारी व्यवस्था को समाप्त करना परन्तु यह केवल कुछ क्षेत्रों में ही हो पाया।
  - पट्टेदारी को खत्म करना परन्तु यह केवल बंगाल तथा केरल तक ही सीमित रहा। जो किराए पर भूमि लेकर खेती करता है उन्हें काश्तकार, पट्टेदार या जोतदार कहते हैं।
  - भूमि की हदबंदी अधिनियम जो राज्यों का कार्य था इसमें भी बचाव के रास्ते ओर विधियां निकाल ली गई जिससे यह भी आधा-अधूरा ही रह गया।

- **बेनामी बदल**- भू-स्वामियों ने अपनी भूमि रिश्तेदारों या अन्य लोगों के बीच विभाजित की परन्तु वास्तव में भूमि पर अधिकार भूस्वामी का ही था। इस प्रथा को बेनामी बदल कहा गया।

- हदबंदी अधिनियम के प्रावधानों से बचने के लिये कुछ अमीर किसानों ने वास्तव में अपनी पत्नियों (लेकिन उनके साथ रहना जारी रखा) तलाक दे दिया। जिसने अविवाहित महिलाओं के लिये एक अलग हिस्सा दिया। लेकिन पत्नियों के लिये नहीं।

4. हरित क्रांति और इसके सामाजिक परिणाम:-

- **हरित क्रान्ति का पहला चरण-**
  - 1960-70 के दशक में कृषि आधुनिकरण का सरकारी कार्यक्रम जिसमें आर्थिक सहायता, अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा दी गई थी तथा यह अधिक उत्पादकता वाले संकर बीजों के साथ कीटनाशक, खादों तथा किसानों के लिए अन्य निवेश पर केन्द्रित थी। इस क्रांति के कारण मध्यम तथा बड़े किसान ही नई तकनीक का लाभ उठा सके। ज्यादातर कृषक स्वयं के लिए ही उत्पादन कर पाते है तथा बाजार के लिए असमर्थ होते है। इन्हें सीमान्त (जीवन निर्वाही कृषक) तथा आमतौर पर कृषक की संज्ञा दी गई है। कई मामलों में पट्टेदार कृषक बेदखल भी हुए क्योकि भू-स्वामियों ने जमीन वापिस ले ली तथा सीधे कृषि कार्य करना अधिक लाभदायक था। किसान वह है जो फसल का कुछ हिस्सा अपने लिए रखता है तथा बाजार से भी जुड़ा हुआ है। कृषक वह है जो फसल का उत्पादन सिर्फ अपने लिए करता है।
  - हरित क्रान्ति मुख्य रूप से गेहूँ तथा चावल उत्पाद करने वाले क्षेत्रों पर ही लक्षित थी।
  - हरित क्रान्ति कुछ क्षेत्रों में जैसे- पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, तटीय आन्ध्र प्रदेश तथा तमिलनाडु के कुछ हिस्सो में चली।
  - नयी तकनीक द्वारा कृषि उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि हुई।
  - कृषि मजदूरों की मांग बढ़ गई।
- **हरित क्रान्ति के ऋणात्मक प्रभाव**
  - केवल मध्यम और बड़े किसानों का लाभ हुआ।
  - बढ़ती कीमतों और भुगतान के तरीकों में बदलाव के कारण कृषि श्रमिकों की आर्थिक स्थिति में गिरावट।
  - व्यावसायीकरण और बाजारोन्मुख खेती ने आजीविका की असुरक्षा प्रदान की।
  - खेती के तरीकों और बीजों के पारंपरिक उपयोग की पारंपरिक प्रणाली का नुकसान।
  - पर्यावरणीय जोखिम बढ़ गए।

- इससे विभेदीकरण को बढ़ाव मिला। अमीर और अमीर हो गया और गरीब और गरीब हो गया।
- इससे क्षेत्रीय असमानताओं में वृद्धि हुई। जिन क्षेत्रों में तकनीकी परिवर्तन हुआ वे अधिक विकसित हुए तथा अन्य क्षेत्र पहले की तरह रह गए।

- **हरित क्रांति का दूसरा चरण**
  - सूखे तथा आंशिक सिंचित क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। किसान बाजार पर निर्भर हो गए हैं। बाजारोंन्मुखी कृषि में विशेषत: एक ही फसल उगाई जाती है। जिन क्षेत्रों में तकनीकी परिवर्तन हुआ वे अधिक विकसित हुए तथा अन्य क्षेत्र पूर्ववत् रहे जैसे बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश, तेंलगाना आदि। भारतीय कृषकों की बहुत सघन विस्तृत तथा पारम्परिक जानकारी लुप्त होती जा रही है जिन्हें किसानों ने सदियों में उन्नत किया था। इसका कारण संकर तथा सुधार वाले बीजों को प्रोत्साहित करना था। पुन: कृषि के पारम्परिक तरीके तथा अधिक सावयवी बीजों के प्रयोग की ओर लौटने की सलाह दे रहे हैं।
  - **जीविका कृषि**
  - जब कृषक मुख्य रूप से अपने लिए उत्पादन करते हैं और बाजार के लिए उत्पादन करने में असमर्थ होते हैं। इसे निर्वाह कृषि के रूप में जाना जाता है।

5. **स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण समाज में परिवर्तन:** स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संबंधों की प्रकृति में अनेक प्रभावशाली रूपान्तरण हुए। इसका कारण हरित क्रांति रहा।
   - गहन कृषि के कारण कृषि मजदूरों की बढ़ोतरी
   - नगद भुगतान
   - भू-स्वामियों एवं किसान के मध्य पुश्तैनी संबंधों में कमी होना।
   - दिहाड़ी मजदूरों का उदय
   - भू-स्वामियों से कृषि मजदूरों के मध्य संबंधों की प्रकृति में वर्णन समाजशास्त्री जॉन ब्रेमन ने सरंक्षण से शोषण की ओर बदलाव में किया था। (ब्रेमन 1974) जहाँ कृषि का व्यापारीकरण अधिक हुआ, जिसे कुछ विद्वानों ने पूँजीवादी कृषि का रूप कहा, क्योंकि विकसित क्षेत्रों के ग्रामीण विस्तृत अर्थव्यवस्था से जुड़ते जा रहे थे। मुद्रा का बहाव गांव की ओर बढ़ा तथा व्यापार व रोजगार भी बढ़ा यह

प्रक्रिया औपनिवेश काल से महाराष्ट्र में कपास की खेती बाड़ी से शुरू हो गयी थी। राज्यों में स्वतंत्रता के बाद सिंचाई, सड़कों तथा सरकारी सरंचनाओं द्वारा ऋण की सुविधा ने इसकी गति काफी बढ़ाई। इसका सीधा प्रभाव कृषि सरंचना तथा गांवो पर पड़ा। सम्पन्न किसानों ने अन्य प्रकार के व्यापारों में निवेश करना शुरू कर दिया तथा ग्रामीण क्षेत्रों से कस्बों में रहने लगे। नए अभिजात वर्ग बने जो आर्थिक तथा राजनीतिक रूप से प्रबल हो गए। इसके साथ ही उच्च शिक्षा का विस्तार, निजी व्यावसायिक महाविद्यालयों ने मध्यम वर्ग को बढ़ावा दिया। विभिन्न वर्गों द्वारा अपने बच्चों को इनमें शिक्षा देकर नगरीय मध्यम वर्ग को बढ़ावा दिया। विभिन्न स्थानों पर इनका प्रभाव विभिन्न देखा गया जैसे- केरल के काफी लोग खाड़ी प्रदेशों में जाने लगे।

6. **मजदूरों का संचार**- प्रवासी मजदूरों की बढ़ोत्तरी कृषि के व्यापारीकरण से जुड़ी है। मजदूरों तथा भू-स्वामियों के बीच संरक्षण का पारम्परिक बंधन टूटना तथा पंजाब जैसे हरित क्रांति द्वारा सम्पन्न क्षेत्रों में कृषि मजदूरों की मांग बढ़ने से मौसमी पलायन का एक नया रूप उभरा। 1990 के दशक से आई ग्रामीण असमानताओं ने बहुस्तरीय व्यवसायों की ओर बाध्य किया तथा मजदूरों का पलायन हुआ। जॉन ब्रेंमन ने इन्हें घुमक्कड़ मजदूर (फुटलूज लेबर) कहा। इन मजदूरों का शोषण आसानी से किया जाता है। मजदूरों के बड़े पैमाने पर संचार से ग्रामीण समाज, दोनो ही भेजने वाले तथा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों पर अनेक महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़े है। उदाहरण के लिए निर्धन क्षेत्रों में जहाँ परिवार के पुरूष सदस्य वर्ष का अधिकतर हिस्सा गाँवों से बाहर काम करने में बिताते है, कृषि मूलरूप से एक महिलाओं का कार्य बन गया है। महिलाएँ भी कृषि मजदूरों के मुख्य स्त्रोत के रूप में उभर रही हैं। जिससे कृषि मजदूरों का महिलाकरण हो रहा है।

7. **भूमण्डलीकरण, उदारीकरण तथा ग्रामीण समाज**- भूमण्डलीकरण तथा उदारीकरण के कारण बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ निश्चित फसल उगाने को कहती हैं। तथा ये किसानों को जानकारी व सुविधाएँ भी देती हैं। इसे संविदा कृषि कहा जाता है।

भारतीय कृषि में उदारीकरण के प्रभाव

- कृषि बाजार का विस्तार होना
- उत्पादकों को आकर्षक मूल्य मिलना
- उपभोक्ताओं को सस्ती कृषि वस्तुओं की प्राप्ति होना
- कृषि क्षेत्र में उत्पादन का बढ़ना

- संविदा कृषि सुरक्षा के साथ-साथ असुरक्षा भी देती है। किसान इन कंपनियों पर निर्भर हो जाते हैं खाद व कीटनाशकों के अधिक प्रयोग से पर्यावरण असुरक्षित हो जाता है।
- देशीय ज्ञान को निरर्थक बनाना
- कृषि रियायतों में कमी से उत्पादन लागत बढ़ी है। बाजार स्थिर नहीं है बीमारी सूखा बाढ़ तथा हानिकारक जन्तु, उधार पैसा लेना आदि से परिवार में संकट आ जाता है। कृषि बहुत से लोगों के लिए अरक्षणीय होती जा रही है। कृषि के मुद्दे अब सार्वजनिक मुद्दें नहीं रहे है, गतिशीलता की कमी के कारण कृषक शक्तिशाली दबाव समूह बनाने में असमर्थ हैं जो नीतियों को अपने पक्ष में करवा सकें।
- संविदा खेती में कम्पनी और जमीन मालिक तय करते थे कि क्या उपजाना है इसके लिए किसानों को बीज आदि प्रदान करते थे। कम्पनी भरोसा देती थी। कि वे अनाज आदि को खरीद लेगें। जिसका मूल्य पहले ही तय हो जाता था। इसमें कम्पनी पूँजी भी देती है।
- संविदा खेती बहुत ही आम है, खास करके फूल की खेती, फल, अंगूर, अनार, कपास के क्षेत्र में जहाँ खेती, किसानों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है वहीं यह किसानों के लिए अधिक असुरक्षित भी बन जाती है।

8. संविदा खेती:

- इसमें किसान अपने जीवन व्यापार के लिए इन कंपनियों पर निर्भर हो जाते है।
- निर्यातोन्मुखी उत्पाद जैसे फूल, और खीरे हेतू 'संविदा खेती' का अर्थ यह भी है कि कृषि भूमि का प्रयोग उत्पादन से हट कर किया जाता है।
- 'संविदा खेती' मूलरूप से अभिजात मदों का उत्पादन करती है तथा चूँकि यह अक्सर खाद तथा कीटनाशक का उच्च मात्रा में प्रयोग करते हैं इसलिए यह बहुधा पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित नहीं होती।

9. किसानों की आत्महत्या के कारण

- समाजशास्त्रियों ने कृषि तथा कृषक समाज में होने वाले सरंचनात्मक तथा सामाजिक परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में करने का प्रयास किया है।
- आत्महत्या करने वाले बहुत से किसान 'सीमांत किसान' थे जो मूल रूप से हरित क्रांति के तरीकों का प्रयोग करके अपनी उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे।

- कृषि रियायातों में कमी के कारण उत्पादन लागत में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई है बाज़ार स्थिर नहीं है तथा बहुत से किसान अपना उत्पादन बढ़ाने के लिए महंगे मदों में निवेश करने हेतू अत्यधिक उधार लेते हैं। किसान ऋणी हो रहे हैं।
- खेती का न होना तथा कुछ मामलों में उचित आधार अथवा बाज़ार मूल्य के अभाव के कारण किसान कर्ज का बोझ उठाने अथवा अपने परिवारों को चलाने में असमर्थ होते है। आत्महत्याओं की घटनाएँ बढ़ रही है। ये आत्महत्याएँ मैट्रिक्स घटनाएँ बन गई है।
- **ग्राम उदय से भारत उदय अभियान**

  ग्राम उदय से भारत उदय अभियान एक राष्ट्रव्यापी अभियान है जिससे पंचायती राज को अधिक मजबूत करना और इसके माध्यम से गांवों में सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने, ग्रामीण विकास तथा किसानों के विकास करना है। इसकी शुरुआत 14 अप्रैल 2016 से की गई थी।
- **राष्ट्रीय ग्रामीण - नगरीय मिशन**

  कार्यक्रम स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा चलाया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुरक्षा में केन्द्र सरकार की यह योजना 12 अप्रैल 2005 को शुरू की गयी। आरंभ में यह मिशन केवल सात साल (2005-2012) के लिए रखा गया, यह एक प्रमुख योजना है। यह कार्यक्रम भारत सरकार के द्वारा संचालित होता है जिसके माध्यम से पूरे देश में किसानों के लिए एकीकृत सहायता के मार्ग खोले गये हैं। इसके अतिरिक्त इन कार्यक्रमों के द्वारा ग्रामीण लोगों के जीवन-यापन में गुणात्मक सुधार हुआ है।

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

1. कथन सही करें–

   (a) कृषि तथा संस्कृति का घनिष्ठ संबंध **नहीं** है।

   (b) जॉन ब्रेमन ने **एक ही जगह** काम करने वाले मजदूरों को घुमक्कड़ मजदूर कहा है।

   (c) जमींदारी व्यवस्था के अंतर्गत कृषक का सीधा संबंध सरकार **से** था।

   (d) मैट्रिक्स घटनाएँ **अमीर** किसानों से संबंधित है।

उत्तर – (a) है (b) प्रवसन करने वाले (a) नहीं था (d) सीमांत

2. **कृषिक संरचना**

   मध्यम तथा बड़े जमीनों के मालिक → सीमांत किसान → कृषि मजदूर

3. श्रीनिवास के अनुसार प्रबल जाति ..... और ..... रूप से शक्तिशाली होती है।

उत्तर – आर्थिक, राजनीतिक

4. बंधुआ मजदूर को गुजरात में ..... तथा कर्नाटक में ..... कहते हैं।

उत्तर – हलपति, जीता

5. बेगार को ..... मजदूरी भी कहते हैं।

उत्तर – मुफ्त

6. हरित क्रांति में मुख्य रूप से ..... और ..... जैसी फसलों का उत्पादन किया गया।

उत्तर– गेहूं, चावल

7. संविदा खेती से क्या संबंधित नहीं है?

(a) किसान व्यापार के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों पर निर्भर होते है।

(b) खाद तथा कीटनाशक का उच्च मात्रा में प्रयोग

(c) बाजारोन्मुखी फसलों को उगाया जाता है।

(d) पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित होते हैं।

उत्तर - (d) पर्यावरणीय दृष्टि से सुरक्षित होते हैं।

8. किसानों द्वारा आत्महत्याएँ करने के कारण हैं–

(a) बैंक का कर्जा (b) फसल का उचित मूल्य न मिलना

(c) खेती का ना होना (d) उपर्युक्त तीनों

उत्तर - (d) उपर्युक्त तीनों

9. हरित क्रांति से निम्नलिखित में से किस राज्य में अधिक वृद्धि हुई–

(a) पंजाब (b) बिहार

(c) पूर्वी उत्तर प्रदेश (d) तेलंगाना

उत्तर - (a) पंजाब

10. बेनामी बदल के अंतर्गत भू-स्वामियों ने अपनी भूमि किसे नहीं दी थी।

(a) रिश्तेदारों को (b) पत्नी को

(c) नौकरों को (d) सरकार को

उत्तर - (d) सरकार को

11. जो फसल का कुछ हिस्सा अपने लिए रखकर तथा बाजार से भी जुड़े हो कहलाते हैं–

(a) किसान (b) कृषक

(c) जीवन निर्वाही कृषक (d) पट्टेदार

उत्तर - (a) किसान

12. जाट और राजपूत उत्तर प्रदेश में, कर्नाटक में लिंगायत प्रबल जातियों के उदाहरण हैं। (सत्य / असत्य)

उत्तर - सत्य

13. श्रमिक भी कृषि श्रम के मुख्य स्रोत के रूप में उभर रहे हैं, जो कृषि श्रम बल के मालिकाना जाति समूहों के लिए अग्रणी हैं। (सत्य / असत्य)

उत्तर - सत्य

14. ग्राम उदय से भारत उदय अभियान एक राष्ट्रव्यापी अभियान है जिसकी मदद से हम पंचायती राज को मजबूत करेंगे। (सत्य / असत्य)

उत्तर - सत्य

15. निम्न में कौन ग्रामीण समाज की विशेषता है ?

(a) श्रम विभाजन (b) सामाजिक गतिशीलता

(c) घनी आबादी (d) कृषि-व्यवसाय

उत्तर - (d) कृषि-व्यवसाय

16. लोगों को समता के आधार पर देखने और भेदभाव न करने के विचार को कहते हैं

(a) जीविका (b) समानता (c) चकबंदी (d) गहन कृषि

उत्तर - (b) समानता

17. जीवन जीने के लिए आवश्यक रोजगार या कार्य जिससे धन की प्राप्ति हो उसे कहते हैं।

(a) जीविका (b) बिचौलिए(c) बटाईदारी (d) काश्तकारी

उत्तर - (a) जीविका

18. भारत में हरित क्रांति लाने में किसका योगदान है ?

(a) जगदीशचन्द्र बसु (b) चन्द्रशेखर वेंकट रमन

(c) डॉ. होमी जहाँगीर भाभा (d) डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन

उत्तर - (d) डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन

19. 'सबला' स्कीम केन्द्रित है....

(a) असहाय महिलाएँ (b) किशोरियाँ

(c) मातृत्व लाभ (d) इनमें से सभी

उत्तर - (c) मातृत्व लाभ

20. भारत सरकार की ओर से भूमि के पुनर्गठन हेतु कौन-सा प्रयास किया गया?

(a) भूमि-प्रबन्धन (b) सहकारी कृषि

(c) चकबन्दी (d) इनमें से सभी

उत्तर - (d) इनमें से सभी

2 अंक प्रश्न

1. ग्रामीण समाज में कौन-कौन से पेशे अपनाए गए है?
2. कृषक समाज सरंचना से आप क्या समझते हैं?
3. 'बेगार' से क्या मतलब है?
4. रैय्यतबाड़ी प्रथा क्या होती है?
5. आजादी के बाद भारत की कृषि स्थिति क्या थी?
6. 'बेनामी बदल' से आप क्या समझते है।
7. कृषि मजदूरों के संचार (सरकुलेशन) से आप क्या समझते हैं?
8. जीवन निर्वाही कृषि क्या है?
9. जीवन निर्वाही कृषक और किसानों में क्या अन्तर है?
10. कृषि मजदूरों का महिलाकरण से आप क्या समझते हैं?
11. हमारी बहुत सी सांस्कृतिक प्रथाएँ एवं प्रतिमान किस प्रकार हमारी कृषिक पृष्ठभूमि सें संबद्ध होते है?

4 अंक प्रश्न

1. भारत में किसानों में आत्महत्या की प्रवृति बढ़ रही है। इसके कारणों पर प्रकाश डालिए।
2. ग्रामीण समाज में कृषि सरंचना का वर्णन करो।
3. ग्रामीण समाज में जाति व वर्ग में क्या संबंध है?
4. भूमि सुधार कानून को लागू करने में कुछ बचाव के रास्ते व युक्तियाँ थी। इनके विषय में बताएं।

5. औपनिवेशिक भारत में अंग्रेजों ने दो भूमि कर प्रणालियां अपनाई। ये कौन-कौन सी थी?

6. 'हरित-क्रांति' के बारे में लिखें।

7. हरित क्रांति के कारण क्षेत्रीय असमानताओं में किस प्रकार वृद्धि हुई?

8. जॉन ब्रेमन का घुमक्कड़ मजदूर (फुटलूज लेबर) से क्या तात्पर्य है?

9. संविदा कृषि के बारें में बताईए।

10. केरल की मिश्रित अर्थव्यवस्था के पीछे कौन से कारक पाए जाते है?

11. कृषि विज्ञान का इतिहास कुछ विद्वानों के लिए कृषि संबंधी सिद्धान्तों का सूचक है। व्याख्या कीजिये।

12. ग्रामीण समाज में नए क्षेत्रीय अभिजात वर्ग के उद्‌भव पर चर्चा करें।

13. नीचे दिए अनुच्छेद को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

    देश के विभिन्न भागों में 1997-98 से किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्या का सम्बंध कृषि में संरचनात्मक परिवर्तन व आर्थिक एवं कृषि नीतियों में परिवर्तन से होने वाली कृषिक समस्या से है। इनमें शामिल हैं : भूस्वामित्व के प्रतिमानों में परिवर्तन, फसलों के प्रतिमानों में परिवर्तन विशेषत: नगदी फसल की ओर झुकाव के कारण, उदारीकरण की नीतियां जिन्होंने भारतीय कृषि को भूमंडलीय शक्तियों के सम्मुख कर दिया है, उच्च लागत वाले निवेशों पर अत्यधिक निर्भरता, राज्य का कृषि विस्तार गतिविधियों से बाहर होना तथा बहुराष्ट्रीय बीज तथा खाद कंपनियों द्वारा उनका स्थान लेना, कृषि के लिए राज्य सहयोग में कमी तथा कृषि कार्यों का व्यैक्तिकरण। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 2001 तथा 2006 के मध्य आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र में 8900 किसानों ने आत्महत्या की।

    1. किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं का सम्बन्ध कृषि में.....व आर्थिक एवं कृषि नीतियों में परिवर्तन से होने वाली.....से है।

    2. 2001 तथा 2006 के मध्य आंध्र प्रदेश, केरल, कर्नाटक तथा महाराष्ट्र में किसानों ने आत्महत्या की।

       1. 7800 2. 8700 3. 8900 4. 9800

    3. राज्य का कृषि विस्तार गतिविधियों से बाहर होना किसानों की आत्महत्या का एक कारण है। (सत्य/असत्य)

4. भूस्वामित्व के प्रतिमानों में परिवर्तन, फसलों के प्रतिमानों में परिवर्तन का किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्या से कोई सम्बन्ध नहीं है। (सही करो)

14. नीचे दिए अनुच्छेद को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

कृषि उत्पादन और कृषिक संरचना के बीच एक सीधा सम्बन्ध होता है। ऐसे क्षेत्र जहां सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था होती है, जहां पर्याप्त वर्षा होती है, जहां सिंचाई के कृत्रिम साधन हों, जैसे चावल उत्पादन करने वाले क्षेत्र जो नदी के मुहाने (डेल्टा) पर होते हैं, उदाहरण के लिए तमिलनाडु में कावेरी बेसिन जहां गहन कृषि के लिए अधिक श्रमिकों की आवश्यकता होती है। यहां बहुत असमान कृषिक संरचना विकसित हुई। बड़ी संख्या में भूमिहीन मजदूर, जो कि अधिकांशतः बंधुआ और निम्न जाति के होते हैं, इस क्षेत्र की कृषीय संरचना के लक्षण थे।

1. जहां सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था होती है और जहां पर्याप्त वर्षा होती है, वहां फसल उगाई जाती है

   1. बाजरा 2. चना 3. सरसों 4. चावल

2. कावेरी नदी के डेल्टा पर जो तमिलनाडु में है, वहां पर उत्पादन होता है

   1. बाजरा 2. चना 3. सरसों 4. चावल

3. अधिकतर भूमिहीन मजदूर.....और.....के होते हैं।

4. कृषि उत्पादन और कृषक संरचना के बीच एक सीधा सम्बन्ध होता है। (सत्य/असत्य)

6 अंक प्रश्न

1. हरित क्रांति के समाज पर क्या प्रभाव हुए? विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. आजादी के बाद भारत में विभिन्न भूमि सुधार लागू किए गए, इनके विषय में लिखिए।
3. ग्रामीण क्षेत्र में कृषक समाज की सरंचना कर वर्णन करो।

4. हरित क्रान्ति के प्रथम चरण में गेहूं और चावल की फसल को उगाने पर जोर दिया गया। दिए गए आंकड़ों की मदद से हरित क्रान्ति के फलस्वरूप क्षेत्रीय असमानता पर चर्चा कीजिये और इस असमानता के कारण बताइये।

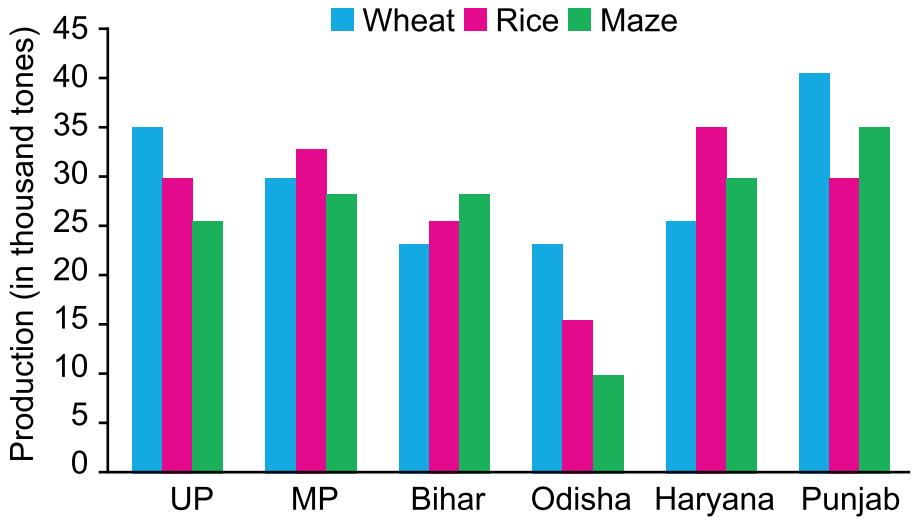

5. किसानों द्वारा आत्महत्याएं की जा रही हैं जो मैट्रिक्स घटनाएं बन गयीं हैं। सारणी में दिए आंकड़ों के आधार पर किसानों द्वारा की जा रही आत्महत्याओं की कारण सहित क्षेत्रीय विवेचना कीजिये।

SUICIDES IN FARM SECTOR					
SUICIDES BY	**2016**	**2017**	**2018**	**2019**	**% CHANGE OVER 2016**
Farmers	6,270	5,955	5,763	5,957	-5%
Labourers	5,109	4,700	4,586	4,324	-15%
Total suicides	**11,379**	**10,665**	**10,349**	**10,281**	**-10%**

SUICIDES IN STATES IN 2019			
	FARMERS	**LABOURERS**	**TOTAL**
Maharashtra	2,580	1,247	3,927
Karnataka	1,331	661	1,992
Andhra Pradesh	628	401	1,029
Madhya Pradesh	142	399	541
Telangana	491	8	499
Punjab	239	63	302
Detailed state-wise data for 2017 and 2018 has not been made available by NCRB			

अध्याय - 5

औद्योगिक समाज में परिवर्तन और विकास

मुख्य बिन्दु

1. औद्योगीकरण की कल्पना

- एक ऐसी धारणा है जिसमें मशीनों का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। बड़े-बड़े उद्योगों में आधुनिक मशीनों तथा श्रम के विभाजन की सहायता से कार्य किया जाता है। हर एक श्रमिक एक छोटा सा पूर्जा बनाता है तथा वह मुख्य उत्पाद को देख तक नहीं पाता है।
- मार्क्स, मैक्स वेबर और एमिल दुर्खीम ने शहरीकरण जैसे उद्योग के साथ सामाजिक सुविधाओं की संख्या को जोड़ा।
- आमने-सामने के संबंधों का नुकसान।
- औद्योगीकरण में श्रम का एक विस्तृत विभाजन शामिल है।
- मार्क्स ने इस स्थिति को अलगाव की संज्ञा दी, जब लोग काम का आनंद नहीं लेते हैं, और इसे कुछ ऐसा देखते हैं कि उन्हें केवल जीवित रहने के लिए कुछ करना पड़ता है, और यहां तक कि जीवित रहना इस बात पर निर्भर करता है कि तकनीक में किसी भी मानव श्रम के लिए जगह है या नहीं।
- औद्योगीकरण कुछ क्षेत्रों में अधिक समानता की ओर ले जाता है। उदाहरण के लिए, ट्रेनों, बसों या साइबर कैफे में जातिगत अंतर कोई मायने नहीं रखते।

2. भारत में औद्योगीकरण

(i) औद्योगीकरण समाज की छवि :- वर्तमान समाज औद्योगिक समाज है तथा औद्योगीकरण के इस युग में सामाजिक परिवर्तन की गति भी काफी तीव्र हो गई है क्योंकि विकास की गति तेजी से लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। आज उद्योगों का आधुनिकीकरण किया जा रहा है।

(ii) औद्योगीकरण एवं नगरीकरण परस्पर अंतर संबंधित अवधारणाएं हैं। औद्योगीकरण की प्रक्रिया जहां जितनी तीव्र होती है, वहां नगरीकरण की प्रक्रिया भी उसी रफ्तार से आगे बढ़ती है।

(iii)
- भारत में औद्योगीकरण का अनुभव कई मायनों में विकसित देशों से भिन्न है।
  - विकसित देशों में, अधिकांश लोग सेवा क्षेत्र में हैं, इसके बाद उद्योग और 10% से कम कृषि क्षेत्र में (ILO के आंकड़े हैं।)
  - भारत जैसे विकासशील देशों में, प्राथमिक क्षेत्र में लगभग (कृषि और खनन) 60%, द्वितीयक क्षेत्र में 17% (विनिर्माण, निर्माण और उपयोगिताओं और 23% तृतीयक क्षेत्र व्यापार, ट्रांसपोर्ट वित्तीय सेवाओं आदि में कार्यरत थे।

(iv) विकसित और विकासशील देशों के बीच पाया जाने वाला एक दूसरा बड़ा अंतर नियमित वेतनभोगी रोजगारों में नियुक्त कर्मचारियों की संख्या का है। विकसित देशों में अधिकांश जनसंख्या का भाग नियमित किस्म के औपचारिक रोजगारों में लगा होता है। जबकि इसके विपरीत भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 50% से भी अधिक लोग स्वरोजगार चलाते हैं या उनमें काम करते हैं। केवल 7.3% लोग नियमित रोजगारों में तथा लगभग 38.6% लोग अनियमित रोजगार में लगे होते हैं।

(v) संगठित या औपचारिक क्षेत्र

- संगठित या औपचारिक क्षेत्र की इकाइयों में 10 या 10 से अधिक लोग पूरे वर्ष रोजगार प्राप्त करते हैं या कार्यरत रहते हैं।
  - सरकार के पास पंजीकृत हैं।
  - लाभ के साथ नौकरियां सुरक्षित हैं।
  - भर्ती अधिक पारदर्शी है।
  - शिकायतों और निवारण के लिए तंत्र हैं।

(vi) असंगठित या अनौपचारिक क्षेत्र

- इकाइयों को सरकार के साथ पंजीकृत होने की आवश्यकता नहीं है।
- कर्मचारियों को उचित वेतन, पेंशन और अन्य लाभ नहीं मिल पाते हैं।
- नौकरियां सुरक्षित नहीं हैं।

3. भारत के प्रारम्भिक वर्षो में औद्योगीकरण:-

1948 में औद्योगिक नीति प्रस्ताव के साथ ही भारत में औद्योगिक नीति के विकास क्रम की शुरुआत हुई। विभिन्न नीतिगत प्रस्तावों में भी सार्वजनिक क्षेत्र के प्रति बुनियादी झुकाव को दोहराया गया है। अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक क्षेत्र को 1956 के औद्योगिक नीति प्रस्ताव में एक महत्वपूर्ण भमिका सौंपी गई।

- रुई, जूट, रेलवे तथा कोयला खानें भारत के प्रथम उद्योग थे। स्वतंत्रता के बाद भारत के परिवहन संचार, ऊर्जा, खान आदि को महत्व दिया गया।
- भारत की मिश्रित आर्थिक नीति में (निजी एवं सार्वजनिक) उद्योग शामिल थे।
- इससे पहले उद्योग मुख्य रूप से मद्रास, मुंबई, कोलकाता जैसे बंदरगाहों वाले शहरों में स्थित थे। परंतु आजादी के बाद उद्योगों का विस्तार बड़ौदा, कोयम्बटूर, बेंगलुरु, पुणे, फरीदाबाद तथा राजकोट जैसे कई शहरों तक हुआ और ये महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्रों में गिने जाते हैं।

4. उदारीकरण एवं भारतीय उद्योग में परिवर्तन

- 1990 से सरकार ने उदारीकरण नीति को अपनाया है तथा दूर संचार, नागरिक उड्डयन ऊर्जा आदि क्षेत्रों में निजी कंपनियाँ विशेषकर विदेशी फर्मो को प्रोत्साहित किया जा रहा है। बहुत-सी भारतीय कपंनियों को विदेशियों ने खरीद लिया है। तथा कुछ भारतीय कपंनियाँ बहुराष्ट्रीय कपंनियाँ बन गई है। इसके कारण आमदनी की असमानताएँ बढ़ रही है। बड़े उद्योगों में सुरक्षित रोजगार कम हो रहे हैं। किसान तथा आदिवासी लोग विस्थापित हो रहे हैं।

विनिवेश

- सरकार सार्वजनिक कंपनियों के अपने शेयर्स को निजी क्षेत्र की कंपनियों को बेचने का प्रयास कर रही है जिसे विनिवेश कहा जाता है। इससे कर्मचारियों को नौकरी जाने का खतरा रहता है।

5. लोग किस तरह काम पाते हैं-

- रोजगारों के विज्ञापन द्वारा बहुत कम लोग रोजगार पाते हैं, जबकि निजी सम्पर्को द्वारा स्वनियोजित लोग काम के आधार पर व्यवसाय करते हैं।
- एक फैक्ट्री के कामगारों को रोज़गार देने का तरीका भिन्न होता है। कामगार ठेकेदारों से रोज़गार पाते हैं। ठेकेदार गाँव जाता है वहाँ काम चाहने वालों से इसके बारे में

पूछता है। वह उन्हें कुछ पैसा उधार भी देता है। जिसे अग्रिम दिहाड़ी माना जाता है। जब तक यह उधार नहीं चुक जाता वह बिना पैसे के काम करता है।

- कार्यकारिणी और यूनियन दोनों ही अपने लोगों को काम दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कुछ कामगार अपने ही बच्चों को अपने बदले काम पर लगाना चाहते हैं।
- बहुत-सी फैक्ट्रियों में बदली कामगार भी होते हैं जो कि छुट्टी पर गए हुए मजदूरों के स्थान पर काम करते हैं। उन्हें सबके समान स्थायी पद और सुरक्षा नहीं दी जाती है।

ठेकेदारी व्यवस्था

- निर्माण स्थलों और ईंट भट्ठों पर काम करने के लिए आकस्मिक श्रम की भर्ती में उपयोग किया जाता है।
- ठेकेदार गांवों में जाकर लोगों से पूछता है कि क्या उन्हें काम चाहिए।
- ठेकेदार उन्हें ऋण देता है जिसमें कार्यस्थल तक परिवहन की लागत शामिल होती है।
- उधार दिए गए पैसे को अग्रिम वेतन के रूप में माना जाता है और श्रमिक तब तक मजदूरी के बिना करता है जब तक कि ऋण चुकाया नही जाता है।
- पूर्व में, खेतिहर मजदूरों को उनके जमींदार ने कर्ज से बांध दिया था।
- वे अनुबंध को तोड़ सकते हैं और एक और नियोक्ता ढूंढ़ सकते हैं।
- कभी-कभी, पूरे परिवार पलायन करते हैं और बच्चे अपने माता-पिता की मदद करते हैं।

6. काम को किस तरह किया जाता है-

- मैनेजर कामगारों को नियंत्रित करके अधिक काम कराते हैं। कामगारों से अधिक कार्य करवाने के दो तरीके होते हैं (कार्य के घंटों में वृद्धि तथा निर्धारित समय में उत्पादित वस्तु की मात्रा को बढ़ा देना।)।
- उत्पादन बढ़ाने का अन्य तरीका है कार्य को संगठित रूप से करना। इसे टेलरिज्म या औद्योगिक इंजीनियरिंग भी कहते है। एक अमेरिकन फैडरिक विनस्लो टेलर ने वैज्ञानिक प्रबंधन के नाम से इस व्यवस्था का आविष्कार किया। इस व्यवस्था में स्टापवाच की सहायता से कार्य को छोटे-छोटे टुकड़ों को तोड़कर कामगारों में

बांटना, कार्य को समय के साथ पूरा करना कार्य को तेज करने के लिए एसेंबली लाइन का प्रयोग करना कार्य, करने की गति को कन्वेयर बेल्ट के साथ गति रखना आदि होता है। कारखाने में सभी कार्य बाह्य स्रोतों से करवाते हैं। इस प्रकार का कार्य कम्पनी को सस्ता पड़ता है।

- अधिक मशीनों वाले उद्योगों में, कम लोगों को काम दिया जाता है, लेकिन जो होते है उन्हें भी मशीनी गति से काम करना होता है जैसे मारूति उद्योग में गति से काम करना होता है। इसमें प्रत्येक मिनट में दो कारें तैयार होकर आ जाती है। प्रत्येक कामगार 40 वर्ष का होने तक पूरी तरह थक जाता है ओर स्वैच्छिक अवकाश ले लेता है। यह कामगारों में अधिक तनाव की वजह से होता है।
- साफ्टवेयर, आई.टी. क्षेत्रों में काम करने वाले शिक्षित होते है। उनका कार्य भी टायलरिज्म लेबर प्रक्रिया के अनुरूप ही होता है। आई.टी. क्षेत्र में **'समय की चाकरी'** –औसतन 10–12 घंटे का कार्यदिवस और रातभर कार्य करने वाले कर्मचारी भी असामान्य बात नहीं है, जिसे नाइट आउट कहते है। जब उनकी परियोजना की अंतिम सीमा आ जाती है। लंबे कार्य घंटों का होना एक उद्योग की केंद्रिय 'कार्य संस्कृति' होती है। एक आठ घंटे काम करने वाले इंजीनियर के श्रम के आधार पर काम को अंतिम सीमा तक पहुँचाने के लिए उसे अतिरिक्त घंटों और दिनों तक काम करना पड़ता है। ऑफिस में देर तक रूक जाते है जो कि या तो साथियों के दबाव के कारण होता है अथवा वे अपने अधिकारियों को दिखाना चाहते हें कि वे कड़ी मेहनत कर रहे हैं।
- संयुक्त परिवार जो कि लुप्त हो गए थे भी औद्योगीकरण के कारण फिर से बनने लग गए हैं।

7. कोयला खनिकों की कार्यावस्थाएँ

- उद्योगों में कार्य करने की अवस्थाएं शोषण से भरपूर होती है।
- खदान एक्ट 1952 ने मजदूरों के विभिन्न कार्यो को स्पष्ट किया है। कोयले की खानों में काम करने के स्पष्ट नियम बनाए गए हैं। परंतु ठेकेदार इनका पालन नहीं करते। दुर्घटना के होने पर या किसी कर्मचारी की मृत्यु हो जाने पर कोई लाभ आदि देने की जिम्मेदारी से वे साफ बच जाते हैं। इसके अतिरिक्त वे अपनी जिम्मेदारियों को भी नहीं निभाते जैसे खनन का काम पूरा हो जाने पर वे खानों के गड्ढों को समतल नहीं कराते हैं।
- कोयला खनिकों को खतरा।

- भूमिगत खदानों में श्रमिकों को बाढ़, आग, छतों और पक्षों के पतन, गैसों और वेंटिलेशन विफलताओं के कारण बहुत खतरनाक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।
- कई श्रमिकों को श्वांस सम्बंधी समस्याएं और तपेदिक और सिलिकोसिस जैसी बीमारियां होती हैं।
- जमीनी खदानों में काम करने वाले लोग तेज धूप और बारिश दोनों में काम करते हैं और खदान में विस्फोट, गिरने वाली वस्तुओं आदि के कारण चोट का सामना करते हैं।
- इस प्रकार, अन्य देशों की तुलना में भारत में खनन दुर्घटनाओं की दर बहुत अधिक है।

8. घरों में होने वाला कार्य

- अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- इसमें लेस, जरी या ब्रोकेड, कालीन, बीड़ी बनाना, अगरबत्ती और ऐसे कई उत्पाद शामिल हैं।
- काम मुख्य रूप से महिलाओं और बच्चों द्वारा किया जाता है।
- एक एजेन्ट इन्हें कच्चा माल प्रदान करता है और तैयार उत्पाद भी प्राप्त करता है।
- श्रमिकों को प्रति नग के आधार पर भुगतान किया जाता है, जो उनके द्वारा तैयार किये जाने वाले नगों की संख्या पर निर्भर करता है जैसे बीड़ी उद्योग।

9. प्रवासी श्रमिकों की समस्याएं

- तट रेखा के साथ मछली प्रसंस्करण संयंत्र तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल की ज्यादातर एकल युवा महिलाओं को रोजगार देते हैं। उनमें से दस-बारह को छोटे कमरों में रखा जाता है और कभी-कभी किसी अन्य के लिए भी जगह बनानी पड़ती है।
- युवा महिलाओं को विनम्र कार्यकर्ता के रूप में देखा जाता है।
- कई पुरुष अपने परिवारों को गांवों में छोड़कर अकेले चले जाते हैं
- प्रवासियों के पास सामाजिकता निभाने के लिए बहुत कम समय होता है, जिसके परिणामस्वरूप अकेलापन और अस्थिरता होती है।

10. **हड़तालें एवं मजदूर संघ**- फैक्ट्री तथा अन्य उद्योगों में कामगारों के संघ है। जिनमें जातिवाद तथा क्षेत्रीयवाद पाया जाता है।

- मजदूर संघ- किसी भी मिल, कारखाने में मजदूरों के हितों की रक्षा करने के लिए मजदूर संघ का गठन किया जाता है। सभी मजदूर इसके सदस्य होते है।
- हड़ताल- अपनी मांगों को मनवाने के लिए कर्मचारी हड़ताल करते है। कभी-कभी काम की बुरी दशाओं के कारण कामगार हड़ताल पर जाते हैं।
- तालाबंदी- मिल मालिकों द्वारा मिल के मुख्य द्वारा पर ताला लगाना।
- तालाबंदी में प्रबंधन/मालिक गेट बद कर देता है और श्रमिकों को आने से रोकता है।
- श्रमिक किसी अन्य जगह काम करने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

11. **1982 की बम्बई टैक्सटाइल मिल की हड़ताल**

- बंबई मिल हड़ताल में मजदूरों की दो माँगें
- 1982 के बॉम्बे टेक्सटाइल स्ट्राइक का नेतृत्व व्यापार संघ के नेता डॉ. दत्ता सामंत ने किया था। यह हड़ताल करीब दो साल तक चली। मजदूरों की मांगें थीं :-
- बेहतर मजदूरी।
- अपना संघ बनाने का अधिकार।

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

1. लोग किस तरह काम पाते हैं–

(a) विज्ञापन द्वारा (b) जानकारी द्वारा

(c) रोजगार कार्यालय (d) उपरोक्त तीनों

उत्तर – (d) उपरोक्त तीनों

2. जो मजदूर छुट्टी पर गए हुए के स्थान पर काम करते हैं उन्हें कहते हैं–

(a) ठेकेदार (b) बदली कामगार

(c) गिरमिटिया मजदूर (d) तीनों में से कोई नहीं

उत्तर – (b) बदली कामगार

3. संगठित/औपचारिक क्षेत्र के अंतर्गत–

(a) पूरे वर्ष स्थायी रोजगार रहता है। (b) पेंशन की सुविधा होती है।

(c) बीमा होता है (d) उपरोक्त तीनों

उत्तर – (d) उपरोक्त तीनों

4. कथन सही लिखें–

(a) विनिवेश के तहत कर्मचारियों की नौकरी जाने का खतरा **नहीं** रहता है।

(b) तालाबंदी में **मजदूरों** द्वारा मिल के मुख्य द्वार पर ताला लगा दिया जाता है।

(c) भूमिगत खदानों में आग लगने का खतरा **नहीं** होता है।

(d) प्रसिद्ध बंबई कपड़ा मिल हड़ताल की **चार** माँगें थीं।

(e) फैक्ट्री तथा अन्य उद्योगों में जाति के आधार पर काम **नहीं** मिलता है।

उत्तर – (a) है (b) मालिकों (c) होता है (d) दो (e) मिलता है।

5. कामगारों से अधिक कार्य करवाने के दो तरीके होते हैं ..... तथा .....

उत्तर – काम के घंटे बढ़ाकर, उत्पादित वस्तु की मात्रा बढ़ाकर

6. सरकार सार्वजनिक कंपनियों के अपने शेयर्स को निजी क्षेत्र की कंपनियों को बेचने का प्रयास कर रही है जिसे ..... कहा जाता है।

उत्तर – विनिवेश

7. ..... ने वैज्ञानिक प्रबंधन या टेलरिज्म नामक व्यवस्था का आविष्कार किया।

उत्तर – फ्रेडरिक विस्लो टेलर

8. मारुति उद्योग में ..... मिनट में दो कारें तैयार होकर आ जाती हैं। प्रत्येक कामगार ..... वर्ष का होने तक पूरी तरह थक जाता है।

उत्तर – प्रत्येक, 40

9. औसतन 10–12 घंटे का कार्यदिवस और रात भर कार्य करने को ..... कहते हैं।

उत्तर – समय की चाकरी

10. ..... क्षेत्र में समय की चाकरी की जाती है।

उत्तर – आई टी

11. अपनी माँगों को मनवाने के लिए मजदूर ..... करते हैं।

उत्तर – हड़ताल

12. दिए गए कथनों को सही करें :–

(i) कार्ल मार्क्स के अनुसार अलगाव एक ऐसी स्थिति है जिसमें लोग अपने काम का आनंद लेते हैं।

(ii) भारत में बहुत कम लोगों के पास असुरक्षित नौकरियां हैं।

(iii) मछली उद्योग में ज्यादातर युवा काम करते हैं।

उत्तर – (i) काम से उब जाते हैं

(ii) सुरक्षित

(iii) आई टी

13. निम्न में से किसे द्वितीयक क्षेत्र में रखा जाता है ?

(a) कृषि (b) व्यापार (c) सेवा (d) उद्योग

उत्तर - (d) उद्योग

14. रेल यातायात किस श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया है ?

(a) द्वितीय (b) तृतीय (c)चतुर्थ (d)प्रथम

उत्तर - (d)प्रथम

15. भारत के औद्योगीकरण के विकास हेतु कार्य-योजना में किस बात पर बल दिया गया ?

(a) महानगरों में आबादी से हटकर औद्योगिक इकाइयों का निर्माण

(b) औद्योगिक कचरा निस्तारण हेतु संयत्रों को लगाने की अनिवार्यता

(c) प्रदूषण नियंत्रण हेतु उचित प्रावधान

(d) उपर्युक्त सभी

उत्तर - (d) उपर्युक्त सभी

16. भारत में स्पष्ट रूप से उदारीकरण की प्रक्रिया का आरम्भ किसके शासनकाल में हुआ?

(a) चन्द्रशेखर (b) वी.पी. सिंह (c) नरसिम्हा राव (d) अटल बिहारी वाजपेयी

उत्तर - (c) नरसिम्हा राव

17. उदारीकरण की प्रक्रिया के प्रभावस्वरुप आर्थिक क्षेत्र में कौन-सा सुधार हुआ ?

(a) औद्योगिक उत्पादन में तीव्र वृद्धि (b) उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार

(c) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर - (d) उपर्युक्त सभी

18. भारत में उदारीकरण की प्रक्रिया अपनाये जाने पर कौन-सी चुनौती सामने आयी?

(a) परम्परागत लघु उद्योगों का ह्रास (b) बेकारी (बेरोजगारी) में वृद्धि

(c) ऋणग्रस्तता में वृद्धि (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर - (d) उपर्युक्त सभी

19. भारतीय अर्थव्यवस्था का माडल किस प्रकार का है?

(a) पूँजीवादी (b) मिश्रित (c) समाजवादी (d)साम्यवादी

उत्तर – (b) मिश्रित

20. इनमें से कौन उदारीकरण की देन है?

(a) बाजारवाद (b) वैश्वीकरण (c) निजीकरण (d) उपर्युक्त सभी

उत्तर – (d) उपर्युक्त सभी

2 अंक प्रश्न

1. कामगार हड़ताल पर क्यों जाते हैं?
2. तालाबन्दी में मालिक क्या करता है?
3. संगठित और असंगठित क्षेत्र में अन्तर लिखिए।
4. औद्योगिक इन्जीनियरिंग (टेलरिज्म) क्या होता है?
5. समय की चाकरी से आप क्या समझते हैं?
6. औद्योगिकी में लोग अपने उत्पादन का अन्तिम रूप क्यों नहीं देख पाते?
7. विनिवेश किसे कहते है? *[Outside Delhi-2018]*
8. हड़ताल और तालाबंदी में क्या अंतर है?
9. बंबई कपड़ा मिल हड़ताल की दो माँगे कौन-सी थी?
10. बदली कामगार कौन होते है?

4 अंक प्रश्न

1. उद्योगों के प्राथमिक क्षेत्र कौन से है? असंगठित क्षेत्र के उद्योग क्या होते हैं?
2. 40 वर्ष तक अधिकाशं व्यक्ति उद्योगों में थक जाते हैं। इसमें प्रबन्धकों की भूमिका क्या है?

3. उदारीकरण के कारण कौन-कौन से उद्योग प्रभावित हुए है?

4. उद्योगों में लोग किस प्रकार से काम पाते हैं?

5. भारत में स्वतंत्रता के बाद औद्योगिक क्षेत्रों में क्या बदलाव आए?

6. भूमिगत खदानों में मजदूरों को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

7. घर में किया जाने वाला कार्य अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण भाग है। उदाहरण दीजिए। *[Outside Delhi-2018]*

8. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़ें और निम्नलिखित उत्तर दें।

   भूमिगत खदानों में श्रमिकों के बाढ़, आग, छतों और पक्षों के पतन, गैसों के उत्सर्जन और वेंटिलेशन विफलताओं के कारण बहुत खतरनाक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। कई श्रमिकों को श्वास संबंधी समस्याएं और तपेदिक और सिलिकोसिस जैसी बीमारियां होती हैं। ओवरग्राउंड खदानों में काम करने वालों को तेज धूप और बारिश दोनों में काम करना पड़ता है और खदान में विस्फोट, गिरती वस्तुओं आदि के कारण चोटों का सामना करना पड़ता है। भारत में खनन दुर्घटनाओं की दर अन्य देशों की तुलना में बहुत अधिक है।

   (i) खदान श्रमिकों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है? (1)

   (ii) खदान श्रमिकों के बीच किस प्रकार की बीमारियों के विकसित होने की संभावना है? (1)

   (iii) भारत में खनन दुर्घटनाओं की दर अधिक क्यों है? (1)

   (iv) जमीनी खदान के मजदूर किस स्थिति में अपना काम करते हैं? (1)

9. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़ें और निम्नलिखित उत्तर दें।

   श्रम के बड़े पैमाने पर प्रसार का ग्रामीण समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, दोनों प्राप्त करने और आपूर्ति करने वाले क्षेत्रों में उदाहरण के लिए, गरीब क्षेत्रों में जहाँ पुरूष परिवार के सदस्य अपने गाँव के बाहर काम करने में अधिक समय व्यतीत करते हैं, खेती मुख्य रूप से एक महिला कार्य बन गया है। महिलाएं भी कृषि श्रम के मुख्य स्रोत के रूप में उभर रही हैं, जिससे कृषि श्रम शक्ति का महिलाकरण हो रहा है। महिलाओं की असुरक्षा अधिक है क्योंकि वे समान काम के लिए पुरूषों की तुलना में कम वेतन कमाती हैं।

(i) श्रम के संचार से आप क्या समझते हैं? (1)

(ii) श्रम के संचार ने ग्रामीण समाज को कैसे प्रभावित किया? (1)

(iii) कृषि श्रम शक्ति के महिलाकरण से आप क्या समझते हैं? (1)

(iv) ग्रामीण महिलाओं को किन समस्याओं का सामान करना पड़ा? (1)

6 अंक प्रश्न

1. कामगारों की कार्य अवस्थाएं किस प्रकार की है उदाहरण देकर समझाइए।
2. उदारीकरण का भारत के उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ा है? बहुउद्देशीय कम्पनी क्या होती है?
3. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़ें और निम्नलिखित उत्तर दें।

आई.टी. क्षेत्र में 'समय की चाकरी'

औसतन 10-12 घंटे का कार्यदिवस, और रातभर कार्य करने वाले कर्मचारी भी असामान्य बात नहीं हैं, (जिसे 'नाइट आउट' कहते हैं) जब उनकी परियोजना की अंतिम सीमा आ जाती है। लंबे कार्य घंटों का होना एक उद्योग की केंद्रीय कार्य संस्कृति होती है। कुछ हद तक इसका कारण भारत और ग्राहक के देश के बीच समय की भिन्नता भी है, जैसे कि सम्मेलन का समय शाम का होता है जबकि अमेरिका में उस समय कार्य दिवस का प्रारंभ होता है। दूसरा कारण बाह्य स्रोतों को कार्य संरचना में अधिक कार्य का होना है जो, परियोजना की लागत और समयसीमा के तालमेल से जुड़ी होती है। एक आठ घंटे काम करने वाले इंजीनियर के श्रम के आधार पर काम को अंतिम सीमा तक पहुंचाने के लिए उसे अतिरिक्त घंटों और दिनों तक काम करना पड़ता है। अतिरिक्त कार्य घंटों को सामान्य व्यवस्थापित 'फलैक्सी-टाइम' सामान्य व्यवस्थापन के प्रयोग द्वारा तर्कसंगत (वैधता) बनाया जाता है, जो कि सैद्धांतिक रूप में कार्यकर्ता को अपने कार्य के घंटे नियत करने की छूट देती है (एक सीमा तक) लेकिन प्रायोगिक रूप में इसका अर्थ है कि वे तब तक कार्य करें तक कि वे हाथ में लिए हुए कार्य को समाप्त कर दें।

(i) 'नाइट आउट' से आपका क्या अभिप्राय है?

(ii) आई टी क्षेत्र में समय की चाकरी कैसे एक कर्मचारी की कार्य प्रणाली को प्रभावित करती है?

अध्याय - 8

सामाजिक आंदोलन

मुख्य बिन्दु

1. **सामाजिक आन्दोलन**- ये समाज को एक आकार देते हैं। 19वीं सदी में अनेक सुधार आन्दोलन हुए जैसे- जाति व्यवस्था के विरूद्ध, भेदभाव के विरूद्ध और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन आदि।

2. **सामाजिक आन्दोलन के लक्षण**

   - लम्बे समय तक निरंतर सामूहिक गतिविधियों की आवश्यकता।
   - संगठन होना आवश्यक है।
   - सामाजिक आन्दोलन प्राय: किसी जनहित के मामले में परिवर्तन के लिए होते है। जैसे आदिवासियों का जंगलो पर अधिकार, विस्थापित लोगों का पुनर्वास।
   - संगठन में नेतृत्व तथा संरचना होती है।
   - सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए।
   - भाग लेने वाले लोगों के उद्देश्य तथा विचारधाराओं में समानता होती है।
   - सामाजिक आन्दोलन के विरोध में प्रतिरोधी आन्दोलन जन्म लेते हैं। जैसे सती प्रथा के विरूद्ध आन्दोलन के खिलाफ धर्म सभा बनी, जिसने अंग्रेजों से सती प्रथा खत्म करने के विरूद्ध कानून बनाने की मांग की।
   - सामाजिक आन्दोलन विरोध के विभिन्न साधन विकसित करते है-मोमबत्ती या मशाल जुलूस, नुक्कड़ नाटक गीत आदि।

3.

सामाजिक परिवर्तन	सामाजिक आन्दोलन
(अ) निरंतरता	(अ) विशिष्ट उद्देश्य
(ब) संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण आदि	(ब) लोगों का निरन्तर सामाजिक प्रयास सती प्रथा विरोधी आंदोलन आदि

4. सामाजिक आन्दोलन के सिद्धान्त-

- **सापेक्षिक वंचन का सिद्धान्त**

  (1) सामाजिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब सामाजिक समूह अपनी स्थिति खराब समझता है।

  (2) मनोवैज्ञानिक कारण जैसे क्षोभ व रोष

सीमाएँ: सामूहिक गतिविधि के लिए वंचन का आभास आवश्यक है लेकिन यह एक पर्याप्त कारण नहीं है।

- दि लोजिक आफ कलैक्टिव एक्शन- सामाजिक आंदोलन में स्वयं का हित चाहने वाले विवेकी व्यक्तिगत अभिनेताओं का पूर्ण योग है। व्यक्ति कुछ प्राप्त करने के लिए इनमें शामिल होगा उसे इसमें जोखिम भी कम हो और लाभ अधिक।

सीमाएँ : सामाजिक आन्दोलन की सफलता संसाधनों व योग्यताओं पर निर्भर करती है।

- संसाधन गतिशीलता का सिद्धान्त- सामाजिक आन्दोलन में नेतृत्व, संगठनात्मक क्षमता तथा संचार सुविधाओं को एकत्र करना इसकी सफलता का जरिया है।

सीमाएँ : प्राप्त संसाधनों की सीमा में वंचित नहीं, नए प्रतीक व पहचान की रचना भी कर सकता है।

5. सामाजिक आन्दोलनों के प्रकार

(अ) प्रतिदानात्मक आन्दोलन- व्यक्तियों की चेतना तथा गतिधियों में परिवर्तन लाते है। जैसे केरल के इजह्वा समुदाय के लोगों ने नारायण गुरू के नेतृत्व में अपनी सामाजिक प्रथाओं को बदला।

(ब) सुधारवादी आन्दोलन- सामाजिक तथा राजनीतिक विन्यास को धीमे व प्रगतिशील चरणों द्वारा बदलना। जैसे- 1960 के दशक में भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन व सूचना का अधिकार।

(स) क्रांतिकारी आन्दोलन- सामाजिक संबंधों में आमूल परिवर्तन करना तथा राजसत्ता पर अधिकार करना। जैसे- बोल्शेविक क्रांति जिसमें रूस में जार को अपदस्थ किया।

6. सामाजिक आंदोलन के अन्य प्रकार

- पुराना सामाजिक आंदोलन (आजादी पूर्व)- नारी आंदोलन, सती प्रथा के विरूद्ध आंदोलन, बाल विवाह, जाति प्रथा के विरूद्ध आंदोलन। यह राजनीतिक दायरे में होते थे। किसी निश्चित क्षेत्र अथवा देश में होते हैं।
- नया सामाजिक आन्दोलन- जीवन स्तर को बदलने व शुद्ध पर्यावरण के लिए।
  - बिना राजनीतिक दायरे के होते है तथा राज्य पर दबाव डालते है।
  - अन्तर्राष्ट्रीय हैं

7. पारिस्थितिकीय आन्दोलन

उदाहरण- चिपको आंदोलन

चिपको आन्दोलन- उंत्तराचल में वनों को काटने से रोकने तथा पर्यावरण का बचाव करने के लिए स्त्रियां पेड़ों से चिपक गई ओर पेड़ काटने नहीं दिये। इस प्रकार यह आन्दोलन आर्थिक, पारिस्थितिकीय व राजनीतिक बन गया।

8. वर्ग आधारित आन्दोलन

- किसान आन्दोलन- 1858-1914 के बीच स्थानीयता, विभाजन व विभिन्न शिकायतों से सीमित होने की ओर प्रवृत्त हुआ।
  - 1859-62 नील की खेती के विरोध में।
  - 1857- दक्षिण का विद्रोह जो साहूकारी के विरोध में।
  - 1928- लगान विरोधी आंदोलन
  - 1920- ब्रिटिश सरकार की वन नीतियों के विरूद्ध आंदोलन
  - 1920-1940 आल इंडिया किसान सभा
- स्वतंत्रता के समय दो मुख्य किसान आंदोलन हुए

  (i) 1946-1947 तिभागा आन्दोलन- यह संघर्ष पट्टेदारी के लिए हुआ।

  (ii) 1946-1951 तेलंगाना आन्दोलन- यह हैदराबाद की सांमती दशाओं के विरूद्ध था।

- स्वतंत्रता के बाद दो बड़े सामाजिक आंदोलन हुए

  (i) 1967 नक्सली आन्दोलन- यह आंदोलन भूमि को लेकर हुआ था।

  (ii) नये किसानों का आंदोलन

- नया किसान आन्दोलन

  – 1970 में पंजाब व तमिलनाडु में प्रारंभ हुआ।

  – दल रहित थे।

  – क्षेत्रीय आधार पर संगठित थे।

  – कृषक के स्थान पर किसान जुड़े थे (किसान उन्हें कहा जाता है जो कि वस्तुओं के उत्पादन और खरीद दोनों में बाजार से जुड़े होते है।)

  – राज्य विरोधी व नगर विरोधी थे।

  – लाभ प्रद कीमतें, कृषि निवेश की कीमते, टैक्स व उधार की वापसी की माँगे थी।

  – सड़क व रेल मार्ग को बंद किया गया था।

  – महिला मुद्दों को शामिल किया गया।

- कामगारों का आन्दोलन

  – 1860 में कारखानों में उत्पादन का कार्य शुरू हुआ। कच्चा माल भारत से ले जाकर, इंग्लैंड में निर्माण किया जाता था।

  – बाद में ऐसे कारखानों को मद्रास, बंबई और कलकत्ता स्थापित किया गया।

  – कामगारों ने अपनी कार्य दशाओं के लिए विरोध किया।

  – 1918 में सर्वप्रथम मजदूर संघ की स्थापना हुई।

  – 1920 में एटक की स्थापना हुई (ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस-एटक)

  – कार्य के घंटों की अवधि को घटाकर 10 घंटे कर दिया गया।

  – 1926 में मजदूर संघ अधिनियम पारित हुआ जिसने मजदूर संघों के पंजीकरण का प्रावधान किया, और कुछ नियम बनाए।

9. जाति आधारित आन्दोलन

(अ) दलित आन्दोलन- दलित शब्द मराठी, हिन्दी, गुजराती व अन्य भाषाओं के रूप में पहचान प्राप्त करने का संघर्ष है। दलित समानता, आत्मसम्मान, अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

- मध्य प्रदेश में चमारों का सतनामी आन्दोलन
- पजांब में आदिधर्म आन्दोलन
- महाराष्ट्र में महार आन्दोलन
- आगरा में जाटवों की गतिशीलता
- दक्षिण भारत में ब्रह्ममण विरोधी आन्दोलन

(ब) पिछड़े वर्ग का आन्दोलन

- पिछड़े जातियों, वर्गों का राजनीतिक इकाई के रूप में उदय
- औपनिवेशिक काल में राज्य अपनी सम्पति का वितरण जाति आधारित करते थे।
- लोग सामाजिक तथा राजनीतिक पहचान के लिए जाति में रहते हैं।
- आधुनिक काल में जाति अपनी कर्मकांडों विषय वस्तु छोड़ने लगी तथा राजनीति गतिशीलता के लिए पंथनिरपेक्ष हो गई है।

(स) उच्चजाति का आन्दोलन- दलित व पिछड़ो के बढ़ते प्रभाव से उच्च जातियों ने उपेक्षित महसूस किया।

10. जन जातीय आन्दोलन- जनजातीय आंदोलनों में से कई मध्य भारत में स्थित है। जैसे- छोटा नागपुर व संथाल परगना में स्थित संथाल, हो, मुंडा, ओराव, मीणा आदि।

- झारखंड
  - बिहार से अलग होकर 2000 में झारखण्ड राज्य बना।
  - आन्दोलन की शुरूआत विरसा मुण्डा ने की थी।
  - ईसाई मिशनरियों ने साक्षरता का अभियान चलाया।
  - दिक्कुओं- (व्यापारी व महाजन) के प्रति घृणा।
  - आदिवासियों को अलग-थलग किया जाना।

- आन्दोलन के मुख्यबिन्दु व मुद्दे
  - भूमि का अधिग्रहण
  - ऋणों की वसूली
  - वनों का राष्ट्रीयकरण
  - पुर्नवास न किया जाना।
- पूर्वोत्तर राज्यों के आंदोलन- वन भूमि से लोगों का विस्थापन तथा पारिस्थितिकीय मुद्दे।

11. महिलाओं का आन्दोलन

- 1970 के दशक में भारत में महिला आन्दोलन का नवीनीकरण हुआ।
- महिला आन्दोलन स्वायत थे तथा राजनीतिक दलों से स्वतंत्र थे।
- महिलाओं के प्रति हिंसा के बारे में अभियान चलाए।
- स्कूल के प्रार्थना पत्र में माता-पिता दोनों का नाम शामिल।
- यौन उत्पीड़न व दहेज के विरोध में।
- कुछ महिला संगठनों के नाम- विमंस इंडिया एसोसिएशन (1971), आल इंडिया विमंस कान्फ्रेंस (1926)

प्रश्नावली

1 अंक के प्रश्न

1. कथन सही करें–

(a) तेलंगाना आंदोलन पट्टेदारी के लिए हुआ।

(b) सामाजिक आंदोलन के लिए किसी विशिष्ट उद्देश्य की जरूरत नहीं है।

(c) उत्तरांचल में हुए चिपको आंदोलन में पुरुष पेड़ों से चिपक गए थे।

(d) नए सामाजिक आंदोलन में जाति प्रथा एवं बाल विवाह के विरुद्ध आंदोलन किए।

(e) 1921 में एटक की स्थापना हुई।

उत्तर – (a) हैदराबाद निजाम की सामंती नीतियों (b) होती है

(c) महिलाएँ (d) जीवन की गुणवत्ता के मुद्दों के लिए

(e) 1920

2. नया किसान आंदोलन 1970 में ..... और ..... में प्रारंभ हुआ।

उत्तर – पंजाब, तमिलनाडु

3. दलित आंदोलन का एक उदाहरण मध्य प्रदेश में ..... का ..... आंदोलन।

उत्तर – चमारों, सतनामी

4. बिहार से अलग होकर 2000 में ..... राज्य बना।

उत्तर – झारखण्ड

5. नया किसान आंदोलन ..... विरोधी व ..... विरोधी थे।

उत्तर – राज्य, नगर

6. 1967 के नक्सली आंदोलन का मुद्दा था।

(a) भूमि (b) फसल

(c) लगान (d) पट्टेदारी

उत्तर – (a) भूमि

7. मजदूर संघ की स्थापना हुई।

(a) 1918 (b) 1919

(c) 1920 (d) 1921

उत्तर - (c) 1920

8. सामाजिक आंदोलन के प्रकार है।

(a) तीन (b) चार

(c) पाँच (d) दो

उत्तर - (a) तीन

9. निम्नलिखित में से कौन-सा सामाजिक आंदोलन विरोध के साधन हैं–

(a) मशाल जुलूस (b) नुक्कड़ नाटक

(c) काले कपड़े पहनना (d) उपरोक्त तीनों

उत्तर - (d) उपरोक्त तीनों

10. जनजातीय आंदोलन के मख्य बिंदु कौन-से हैं–

(a) भूमि का अधिग्रहण (b) ऋणों की वसूली

(c) वनों का राष्ट्रीकरण (d) उपरोक्त तीनों

उत्तर - (d) उपरोक्त तीनों

रिक्त स्थान भरो

11 सापेक्षिक वंचन के सिद्धान्त के अनुसार, सामाजिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक सामाजिक समूह यह महसूस करता है कि वह अपने आसपास के अन्य लोगों से खराब स्थिति में है। ऐसा संघर्ष सफल सामूहिक विरोध के रूप में परिणित हो सकता है।

.....के अनुसार, सामाजिक संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक सामाजिक समूह यह महसूस करता है कि वह अपने आसपास के अन्य लोगों से खराब स्थिति में है।

a. सापेक्षिक प्रशंसा के सिद्धांत b. सापेक्षिक वंचन के सिद्धांत

c. सापेक्षिक तुलना के सिद्धांत d. सापेक्षिक समझ के सिद्धांत

उत्तर: 11 b. सापेक्षिक वंचन के सिद्धांत

12. बताएं कि दिया गया कथन सही है या गलत

पुराने सामाजिक आंदोलनों में राजनीतिक दलों की भूमिका केंद्रीय नहीं थी।

उत्तर – गलत

13. चिपको आंदोलन का संबंध किस राज्य से है ?

(a) उत्तर प्रदेश (b)उत्तराखण्ड (c) मध्य प्रदेश (d) आंध्र प्रदेश

उत्तर – (b)उत्तराखण्ड

14. निम्न में से किस आंदोलन का सम्बन्ध पर्यावरण समस्याओं से जुड़ा हुआ है?

(a) दलित आंदोलन (b) आदिवासी आंदोलन

(c) चिपको आंदोलन (d) पिछड़ी जाति आंदोलन

उत्तर – (c) चिपको आंदोलन

15. चिपको आंदोलन सम्बन्धित है

(a) वृक्षों की रक्षा से (b)जल की रक्षा से

(c) पशुओं की रक्षा से (d) खनिजों की रक्षा से

उत्तर – (a) वृक्षों की रक्षा से

16. जनजातीय आंदोलन संबंधित है

(a) जाति से (b) जनजाति से (c) सम्प्रदाय से (d) धर्म से

उत्तर – (b) जनजाति से

17. अहिंसा के आधार पर चलाया गया एक आंदोलन जिसे गाँधीजी ने चलाया, उसका नाम है

(a) तेभागा आंदोलन (b) ट्रेड यूनियन आंदोलन

(c) जन आंदोलन (d) सत्याग्रह आंदोलन

उत्तर – (d) सत्याग्रह आंदोलन

18. चिपको आंदोलन चलाया गया

(a) 1973 ई. में (b)1970 ई. में (c)1983 ई. में (d) 1999 ई में

उत्तर - (a) 1973 ई. में

19. दलित-पैंथर्स की स्थापना कब की गई?

(a) 1972 ई. में (b) 1980 ई. में (c)1970 ई. में (d) 1983 ई. में

उत्तर - (a) 1972 ई. में

20. चिपको आंदोलन की अगुआयी किसने की?

(a) इंद्रेश चिपकलानी (b) मेधा पाटेकर

(c) सुंदरलाल बहुगुणा (d) स्वामी अग्निवेष

उत्तर - (c) सुंदरलाल बहुगुणा

2 अंक प्रश्न

1. सामाजिक आन्दोलन क्या होते है?
2. सामाजिक परिवर्तन व सामाजिक आन्दोलन में क्या अन्तर है?
3. किसान आन्दोलनों के दो उदाहरण लिखो।
4. एटक को समझाए।
5. जाति आधारित चार आन्दोलनों के उदाहरण लिखिए।
6. चार जन जातियों के नाम लिखें।
7. दो महिला संगठनों के नाम बताइए।
8. चिपको आंदोलन, पारिस्थितिकीय आंदोलन का एक उदाहरण है। हिमालय की तलहटी में इस तरह के आपस में जुड़े हितों और विचारधाराओं का अच्छा उदाहरण है।

   चिपको आंदोलन का वर्णन करें।

उत्तर: 8 1. यह आंदोलन पेड़ों को बचाने के लिए था।

2. जब सरकारी जंगल के ठेकेदार पेड़ों को काटने के लिए आए तो गांववासी, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल थीं, आगे बढ़े और कटाई रोकने के लिए पेड़ों से चिपक गए। गांववासियों के जीवन - निर्वहन का प्रश्न दांव पर था।

4 अंक प्रश्न

1. सुधारवादी व क्रांतिकारी आन्दोलनों में अन्तर बताइए।
2. प्रतिदानात्मक व सुधारवादी आन्दोलन में अन्तर बताइए।
3. पारिस्थितिकीय आन्दोलन का वर्णन कीजिए।
4. नए किसान आन्दोलन पर नोट लिखिए।
5. उस मुद्दे के विषय में बताइए जिसके लिए झारखंड के नेताओं ने आन्दोलन किया।
6. महिलाओं ने आधुनिक युग में विभिन्न मुद्दों को उठाया है? इनका वर्णन कीजिए।
7. भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विदेशी सत्ता तथा पूँजी का मेल सामाजिक विरोधों का केन्द्र बिन्दु था। महात्मा गांधी ने भारत में कपास उगाने वालों तथा बुनकरों की जीविका, जो सरकार की मिल में तैयार कपड़ों की तरफदारी करने की नीति से नष्ट हो गई थी, के समर्थन में हाथ से कला तथा बुना वस्त्र खादी पहना। नमक बनाने के लिए बहुचर्चित डांडी यात्रा अंग्रेजों की कर नीतियों, जिसमें उपभोग की मूलभूत सामग्री के उपभोक्ताओं पर साम्राज्य को लाभ पहुंचाने के लिए बहुत अधिक भार डाला गया था, को चुना और उन्हें प्रतिरोध का प्रतीक बना दिया।

सही विकल्प चुनें

1. मेल का मतलब है

a. योग
b. विभाजन
c. गुणा
d. जोड़

खाली स्थान भरें

2. .....ने भारत में कपास उगाने वालों तथा बुनकरों की जीविका, जो सरकार की मिल में तैयार कपड़ों की तरफदारी करने की नीति से नष्ट हो गई थी, के समर्थन में हाथ से कला तथा बुना वस्त्र खादी पहना।

बताएं कि दिए गए कथन सही हैं या गलत

3. गांधी जी ने प्रतिदिन के जन उपभोग की चीजों जैसे कपड़ा और नमक को चुना और उन्हें प्रतिरोध का प्रतीक बना दिया।

4. भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान विदेशी सत्ता तथा पूँजी का मेल सामाजिक विरोधों का केन्द्र बिन्दु था। (सही/गलत)

उत्तर 1. a. योग

2. महात्मा गांधी

3. सही

4. सही

8. दिए गए गद्यांश को पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें

सामाजिक आंदोलन प्राय: किसी जनहित के मामले में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से उत्प. न्न होते हैं, जैसे कि जनजातीय लोगों के लिए जंगल के उपयोग का अधिकार अथवा विस्थापित लोगों के पुनर्वास तथा क्षतिपूर्ति के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए। ऐसे ही अन्य मुद्दों के बारे में सोचिए जिन्हें सामाजिक आंदोलनों ने पूर्व तथा वर्तमान में उठाया हो। जबकि सामाजिक परिवर्तन लाना चाहते हैं, कभी-कभी यथापूर्व स्थिति बनाए रखने के लिए प्रतिरोधी आंदोलन जन्म लेते है। ऐसे प्रतिरोधी आंदोलनों के कई उदाहरण हैं। जब राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध किया तथा ब्रह्म समाज की स्थापना की तो सती प्रथा के प्रतिरक्षकों ने धर्म सभा स्थापित की तथा अंग्रेजों को सती प्रथा के विरुद्ध कानून न बनाने की याचिका दी।

1. सामाजिक आंदोलन प्राय: किसी.....के मामले में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से उत्पन्न होते हैं।

a. निजी b. जनहित

c. व्यक्तिगत d. अन्य

2. जबकि सामाजिक।परिवर्तन लाना चाहते हैं, कभी-कभी यथापूर्व स्थिति बनाए रखने के लिए.....जन्म लेते हैं। कई बार यथास्थिति की रक्षा में उठता है।

a. प्रतिरोधी आंदोलन b. सहायता आंदोलन

c. सहयोग आंदोलन d. आंदोलन

3. .....ने सती प्रथा के खिलाफ अभियान चलाया।

   a. दयानंद सरस्वती b. विवेकानंद

   c. राजा राममोहन राय d. फुले

4. सती प्रथा के प्रतिरक्षकों ने.....सभा स्थापित की तथा अंग्रेजों को सती प्रथा के विरुद्ध कानून न बनाने की याचिका दी।

   a. समर्थन b. विरोध

   c. धर्म d. अधर्म

उत्तर 1. b जनहित

2. a. प्रतिरोधी आंदोलन

3. c राजा राममोहन राय

4. c धर्म

6 अंक प्रश्न

1. नए सामाजिक आन्दोलन व पुराने सामाजिक आन्दोलन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
2. सामाजिक आन्दोलनों की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. सामाजिक आन्दोलनों के सिद्धान्तों के विषय में बताइये
4. किसान आन्दोलन व नए किसान आन्दोलन में अन्तर लिखिए।
5. मनकर ओल्सन की पुस्तक 'द लॉजिक ऑफ कलैक्टिव एक्शन' में तर्क दिया गया है कि सामाजिक आंदोलन में स्वहित चाहने वाले विवेकी, व्यक्तिगत अभिनेताओं का पूर्ण योग है। एक व्यक्ति भी सामाजिक आंदोलन में शामिल होगा जब वह उससे कुछ प्राप्त कर सके। वह तभी भाग लेगा जब जोखिम कम हो और लाभ अधिक। ओल्सन का सिद्धांत विवेकी, अधिकतम उपयोगिताकारी व्यक्ति के अभिप्राय पर आधारित है। क्या आप सोचते हैं कि लोग कोई कार्य करने से पहले व्यक्तिगत लागत तथा लाभ की गणना करते हैं ?

   1. सामाजिक आंदोलन से आप क्या समझते हैं ?
   2. ओल्सन के सिद्धान्त का वर्णन करें।

प्रश्न पत्र हल करने के लिये याद करने योग्य महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. प्रश्न पत्र को अच्छी तरह से पढ़ें।
2. प्रश्न पत्र में दिये गये प्रश्नों को हमेशा क्रमानुसार करें।
3. प्रश्न पत्र को हल करते समय प्रश्नों की संख्या नं0 को उत्तर पुस्तिका में सही लिखे।
4. हमेशा महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करें।
5. 1 अंक वाले प्रश्नों को समझ कर लिखें।
6. 2 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर देने में शब्दों को सीमित रखे (कोई दो महत्त्वपूर्ण बिंदु लिखें)
7. 4 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर देने में कोई 4 महत्त्वपूर्ण बिन्दु विस्तार से लिखे।
8. 6 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर देने में कोई 6 महत्वपूर्ण बिन्दु विस्तार से लिखे।
9. 6 अंक वाले अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़े। उत्तर देने के लिए अनुच्छेद की सहायता लेते हुए अपनी समझ से लिखे।
10. प्रत्येक उत्तर के बीच में अन्तर रखें।
11. अपनी लिखाई पर विशेष ध्यान दें।

समाजशास्त्र में अच्छे अंक हासिल करने हेतु महत्वपूर्ण बिन्दुः-

1. N C E R T की दोनो पुस्तके तथा सहायक सामग्री का ही इस्तेमाल करें।
2. N C E R T में दिये गये रंगीन व ग्रे बाक्स को भी ध्यानपूर्वक पढे।
   - 4 अंक व 6 अंक वाला अनुच्छेद अक्सर इन बाक्स से पूछा जाता है।
   - समाजशास्त्र विषय में अपना ज्ञान बढ़ाने के लिये भी इन बाक्स को अवश्य पढ़ें।
3. N C E R T में दिये अभ्यास को भी अवश्य हल करें।
4. CBSE के सैम्पल पेपर्स तथा पिछले 5 सालों के प्रश्न पत्रों को अवश्य हल करें।
5. CBSE बोर्ड परीक्षा से पहले कोई एक प्रश्नपत्र अवश्य हल करें। ताकि समय सीमा का आपको ज्ञान हो जाये।
6. इसमें दिए गए सैम्पल पेपर हल करके देखें।

अभ्यास (अनुच्छेद)

1. निचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िये और प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–

द्विंद स्वराज्य में गाँधी जी और मशीन 1924 में मशीनों के प्रति पागलपन का विरोधी हूँ जो मजदूरों को कम करने की मशीने है आदमी श्रम से मजदूरों को कम करते जाएंगे जबकि हजारों मजदूरों को बिना काम के सड़कों पर भूख से मरने के लिए फेंक न दिया जाए। मैं समय और मजदूर दोनों को बचाना चाहता हूँ मानव जाति के विखंडन के लिए नहीं बल्कि सबके लिए। मैं संपत्ति को कुछ हाथों में एकत्रित नहीं होने देना चाहता हूँ। 1934–एक राष्ट्र के रूप में जब हम चर्खे को अपनाते है। तो हम केवल बेरोजगारी की समस्या का समाधान करते हैं। बल्कि यह भी घोषित करते हैं। कि हमारी किसी भी राष्ट्र का शोषण करने की इच्छा नहीं है, और हम अमीरों द्वारा गरीबों के शोषण को भी समाप्त करना चाहते हैं।

प्रश्न 1. उदाहरण द्वारा बताइए कि मशीने किस तरह कामगारों के लिए समस्या पैदा करती है?

प्रश्न 2. गाँधी जी के दिमाग में क्या विकल्प था? चर्खे को अपनाने से शोषण को कैसे रोका जा सकता है?

2. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

यह एक रोचक तथ्य है कि संस्कृत भाषा का सबसे महान व्याकरणाचार्य, पाणिनी, जिसने ईसा पूर्व चौथी शताब्दी के आसपास संस्कृत व्याकरण और स्वर विज्ञान को सुव्यवस्थित एवं रूपांतरित किया था, वे अफगान मूल के थे। सातवीं शताब्दी के चीनी विद्वान थी जिंग ने चीन से भारत आते हुए मार्ग ने जावा (श्रीविजय शहर में) रूककर संस्कृत थी। अत: क्रियाओं का प्रभाव थाईलैंड से मलाया, इंडो-चाइना, इंडोनोशिया, फिलिपिंस, कोरिया और जापान... तक समस्त एशिया महाद्वीप की भाषाओं और शब्दावलियों में दृष्टिगोचर होता है। हमें 'कूपमंडूक' (कुएँ में रहने वाले मेंढ़क) से संबंधित एक नीतिकथा में एकाकीकरणवाद (आइसोलेशिनिज्म) के विरूद्ध एक चेतावनी मिलती है। यह नीतिकथा संस्कृत के अनेक प्राचीन ग्रंथों में बार-बार दोहराई गई है। 'कूपमंडूक' एक मेंढ़क है जो जीवनभर एक कुएँ में रहता है; वह और कुछ नहीं जानता है। और बाहर की हर चीज पर शक करता है। वह किसी से बात नहीं करता और किसी के साथ किसी भी विषय पर तर्क-वितर्क नहीं करता। वह तो बस बाहरी दुनिया के बारे में अपने दिल में गहरा संदेह पाले रखता है। विश्व का वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास में बहुत ही सीमित होता है। यदि हम भी कूपमंडूक की तरह जीवन बिताते।

प्रश्न 1. क्या भूमंडलीकरण के अत: संबंध विश्व और भारत के लिए नए है? उदाहरण देते हुए उत्तर की पुष्टि कीजिए।

प्रश्न 2. "भूमंडलीकरण ने आधुनिक जीवन को प्रभावित किया है" क्या आप इस कथन से सहमत है?

3. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों के दीजिए–

दलित जाति की कलावती चुनाव लड़ने के संबंध मे चिंतित थी। आज वह एक पंचायत के सदस्य है और यह अनुभव कर रही है कि जब से वह पंचायत सदस्य बनी है तब से उसका विश्वास और आत्मसम्मान बढ़ गया है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि अब उसका अपना एक नाम हैं पंचायत की सदस्य बनने से पहले 'रामू की माँ' या 'हीरालाल की पत्नी' के नाम से जानी जाती थी। यदि वह ग्राम-प्रधान पद का चुनाव हार गई तो उसे अनुभव होगा कि उसकी सखियों की नाक कट गट गई।

प्रश्न 1. पंचायतों को जमीनी स्तर पर लोकतंत्र में परिवर्तन लाने वाली ईकाई के रूप में माना जाता है?

प्रश्न 2. प्रचायतों की शक्तियाँ और उत्तरदायित्व का उल्लेख कीजिए।

4. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अल्पसंख्यकों को संरक्षण देने के विषय में डॉ. अम्बेडकर के विचार: उन कट्टरपंथियों को, जिनके मन में अल्पसंख्यकों के संरक्षण के विरूद्ध एक तरह का दुराग्रह घर कर गया है, मैं दो बाते करना चाहता हूँ। यह कि अल्पसंख्यक वर्ण एक ऐसी विस्फोटक शक्ति है जो यदि भड़क उठे तो राज्य की संपूण्र रचना को तार-तार कर देगी। यूरोप का इतिहास इस तथ्य का ठोस एवं भयावह साक्ष्य प्रस्तुत करता है। दूसरी बात यह है कि भारत के अल्पसंख्यक अपने अस्तित्व को बहुसंख्यकों के हाथों में सौंपने के लिए सहमत हुए है। आयरलैंड के विभाजन को रोकने के लिए चली बातचीत के इतिहास में, रेडमंड ने कारसन से कहा, "आप प्रोटेस्टैड अल्पसंख्यक के लिए चाहे जो सुरक्षा माँग ले, हमें आयरलैंड को संयुक्त, अविभाजित रखना है।" कारन का उत्तर था "लानत है तुम्हारी सुरक्षा पर, हम तुम्हारे द्वारा शासित होना ही नहीं चाहते।" भारत में अल्पसंख्यको के किसी भी वर्ग ने यह रूख नहीं अपनाया।

प्रश्न 1. 'अल्पसंख्यक' (वर्ग) क्या होते हैं?

प्रश्न 2. अल्पसंख्यकों को भारत में संरक्षण की क्यों जरूरत होती है?

5. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िये और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–

जनसंख्या की वृद्धि की दर भरण–पोषण के संसाधनों के जनसंख्या में होने वाली वृद्धि की दर से सदा आगे रहती है, इसलिए समृद्धि को बढ़ाने का एक ही तरीका है। कि जनसंख्या की वृद्धि को नियंत्रित किया जाए। दुर्भाग्वश, मनुष्यों में अपनी जनसंख्या को स्वेच्छापूर्वक घटाने की एक सीमित क्षमता ही होती है। (कृत्रिम विरोधों द्वारा जैसे कि बड़ी उम्र में विवाह करने या यौन संयम रखकर अथवा ब्रह्मचार्य का पालन करते हुए सीमित संख्या में बच्चे पैदा किए जाएँ। माल्यस का विश्वास था कि अकालों और बिमारियों के रूप में जनसंख्या वृद्धि को रोकने के प्राकृतिक निरोध अनिवार्य होते हैं। क्योंकि वे ही खाद्य आपूर्ति ओर बढ़ती हुई जनसंख्या के बीच असंतुलन को रोकने के प्राकृतिक उपाय है। उदारवादी और मार्क्सवादी विद्वानों ने माल्थस के इस विचार की आलोचना की, कि गरीबी का कारण जनसंख्या वृद्धि है। आलोचकों का कहना था कि बजाय आर्थिक संसाधनों के असमान वितरण के कारण होती है।

प्रश्न 1. जनसंख्या की वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए माल्थस ने कौन से कृत्रिम और प्राकृतिक निरोध बताए है?

प्रश्न 2. उदारवादी और मार्क्सवादी विद्वानों ने माल्थस की आलोचना की। व्याख्या कीजिए।

6. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढिए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए?

जनजाति क्षेत्रों में पंचायती राज

बहुत से आदिवासी क्षेत्रों की प्रारंभिक स्तर के लोकतांत्रिक कार्यों की आपनी समृद्ध परंपरा रही है। हम मेघालय से संबधित एक उदाहरण दे रहे हैं। गारो, खासी और जयंतिया, तीनों ही आदिवासी जातियों की सैकड़ों साल पुरानी राजनीतिक संस्थाएँ इतनी सुविकसित थीं कि ग्राम, वंश और राज्य के स्तर पर वे बड़ी कुशलता से कार्य करती थीं। उदाहरणार्थ, खासियों की पारंमरिक राजनीतिक प्रणाली में प्रत्येक वंश की अपनी परिषद होती थी जिसे 'दरबार कुर' कहा जाता था। और जो उस वंश के मुखिया के निर्देशन में कार्य करता था। यद्यपि मेघालय में जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक राजनीतिक संस्थाओं की परंपरा रही है, लेकिन अदिवासी क्षेत्रों का एक बड़ा संविधान के 73वें संशोधन के प्रावधान से बाहर है। शायद यंह इसलिए क्योंकि उस समय की नीतियाँ बनाने वाले पारंपरिक राजनीतिक संस्थाओं में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे।

प्रश्न 1. खासी राजनीतिक संस्था का नाम बताइए?

प्रश्न 2. आदिवासी क्षेत्रों की राजनीतिक संस्थाओं को समझाएँ?

7. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

आयु संरचना में अपेक्षाकृत छोटी आयु के वर्गों की ओर जो झुकाव पाया जाता है। उसे भारत के लिए लाभकारी माना जाता है। पिछले दशक में पूर्व एशियाई अर्थव्यस्थाओं की तरह और आज के आयरलैंड की तरह यह समझा जाता कि भारत को भी 'जनसंख्यिकीय लाभांश' का फायदा मिल रहा है। यह लाभांश इस तथ्य के कारण मिल रहा है। कि कार्यशील लोगों की वर्तमाना पीढ़ी अपेक्षाकृत बड़ी है। एवं उसे वृद्ध लोगों की अपेक्षाकृत छोटी पीढ़ी का भरणपोषण करना पड़ा रहा है। लेकिन यह लाभ अपने आप मिलने वाला नहीं है बल्कि इसके लिए उपयुक्त नीतियों का सोच-समझकर पालन करना होगा जैसाकि बॉक्स 2.3 में वर्णन किया गया है।

प्रश्न 1. आयु संरचना से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 2. जनसांख्यिकीय लाभांश को समझाए?

8. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

विश्व में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र और आधारभूत ढाँचे में हुई महत्वपूर्ण उन्नति के फलस्वरूप भूंमडलीय संचार व्यवस्था में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है। अब कुछ घरों से कार्यालयों में बाहरी दूनिया के साथ संबध बनाए रखने के अनेक साधन मौजूद हैं। जैसे–टेलीफोन (लैंडलाइन और) मोबाइल दोनों किस्मों के) फैक्स मशीनें, डिजिटल और केबल टेलीविजन, इलेक्ट्रोनिक मेल और इंटरनेट आदि।

प्रश्न 1. डिजिटल विभाजन से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 2. विश्व में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र और दूरसंचार के आधारभूत ढाँचे को समझाएँ?

9. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

औद्योगिक क्रांति के साथ ही, मुद्रण उद्योग का भी विकास हुआ। कुलीन मुद्रणालय के प्रथम उत्पाद साक्षर अभिजात लोगों तक ही सीमित थे। तत्पश्चात् 19वीं सदी के मध्य भाग में आकर जब प्रौद्योगिकियों, परिवहन और साक्षरता में और आगे विकास हुआ, तभी समाचारपत्र जन-जन तक पहुँचने लगे। देश के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को एक जैसे समाचार पढ़ने या सुनने को मिलने लगे। ऐसा कहा जाता है। कि इसी के फलस्वरूप

देश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोग परस्पर जुड़े हुए महसूस करने लगे और उनमें 'हम की भावना' विकसित हो गई।

प्रश्न 1. काल्पनिक समुदाय से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 2. काल्पनिक समुदाय के बारे में किस विद्वान ने कहा है?

10. नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

तथाकथित 'नए किसानों' का आंदोलन पंजाब और तमिलनाडु में 1970 के दशक में प्रारंरभ हुआ। ये आंदोलन क्षेत्रीय आधाार पर संगठित थे, दल-रहित थे, और इसमें कृषक के स्थान पर किसान जुड़े थे। (किसान उन्हें कहा जाता है जो कि वस्तुओं के उत्पादन और खरीद दोनों रूपों में बाजार से जुड़े होते हैं) आंदोलन की मौलिक विचारधारा मजबूत राज्य-विरोधी थी। माँगों के केंद्र में 'मूल्य और संबंधित मुद्दे थे (उदाहरण के लिए कीमत वसूली, लाभप्रद कीमतें, कृषि निवेश की कीमतें, टैक्स और आधार की वापसी) उपद्रव के नए तरीके अपनाए गए; सड़कों एवं रेलमार्गों को बंद करना, राजनीतिज्ञों और प्रशासकों के लिए गाँव में प्रवेश की मनाही और इसी तरह के अन्य कार्य। यह तर्क दिया जाता है कि किसान आंदोलन के वातावरण एवं महिला मुद्दों सहित उनकी कार्यसूची एवं विचारधारा में विस्तार हुआ है। अत: उन्हें नए सामाजिक आंदोलन' के एक भाग के रूप में विश्वस्तर पर देखा जा सकता है।

प्रश्न 1. नए किसानों का आंदोलन कब और किन राज्यों में शुरू हुआ?

प्रश्न 2. नए किसानों का आंदोलन की माँगों के केन्द्र में मूल्य और संबंधित मुद्दे क्या थे?

समाजशास्त्र (039)

कक्षा बारहवीं

नमूना प्रश्न पत्र 2022-23 (CBSE)

समय: 3 घंटे अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

1. प्रश्न पत्र को चार खंडों में बांटा गया है।
2. कुल 38 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. खंड ए में प्रश्न संख्या 1-20 शामिल है। ये MCQ प्रकार के प्रश्न हैं। प्रश्न के अनुसार, एक उत्तर हो सकता है।
4. खंड बी में प्रश्न संख्या 21-29 शामिल है। ये बहुत ही लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं जिनमें प्रत्येक के 2 अंक हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
5. खंड सी में प्रश्न संख्या 30-35 शामिल है। वे लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं जिनमें प्रत्येक के 4 अंक हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 80 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
6. खंड डी में प्रश्न संख्या 36-38 शामिल है। वे दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं जिनमें प्रत्येक के 6 अंक हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। प्रश्न संख्या 36 का उत्तर दिए गए गद्यांश की सहायता से देना है।

खंड- ए

प्रश्न संख्या	खंड- ए	अंक
1.	'अकाल भी मृत्यु दर में वृद्धि का एक प्रमुख और आवर्ती स्रोत थे।' निम्नलिखित में से कौन अकाल का कारण नहीं है? a) कृषि-जलवायु वातावरण में निरंतर गरीबी और कुपोषण। b) परिवहन और संचार के अपर्याप्त साधन। ग) पात्रताओं की विफलता d) जन्म दर में वृद्धि	1

2.	दावा (ए): जनसांख्यिकीय संरचना द्वारा प्रदान किए गए अवसर के कारण जनसंख्या पिरामिड मध्यम आयु समूहों में एक उछाल दिखाता है। कारण (R) : यह मध्यम आयु वर्ग में उच्च जन्म दर के कारण है। a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है। b) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है। c) A सत्य है लेकिन R असत्य है। d) A असत्य है और R सत्य है।	1
3.	जनजातीय समुदायों की मुख्यधारा के साथ बातचीत आम तौर पर आदिवासियों के लिए प्रतिकूल रही है। आज कई आदिवासी पहचान गैर-आदिवासी शब्द की जबरदस्त ताकत के लिए ..... के विचारों पर केंद्रित हैं। a) प्रतिरोध और सहयोग b) सहयोग और विरोध c) प्रतिरोध और विरोध d) आंदोलन और विरोध	1
4.	अभिकथन (A) : जनजातियाँ प्राचीन समाज हैं जो सभ्यता से दूषित नहीं हैं। कारण (R) : जनजातियों को वास्तव में पहले से मौजूद राज्यों और आदिवासियों जैसे गैर-राज्य समूहों के बीच शोषणकारी और उपनिवेशवादी संपर्क से उत्पन्न होने वाली 'माध्यमिक' घटना के रूप में देखा जाना चाहिए। a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है। b) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है। c) A सत्य है लेकिन R असत्य है। d) A असत्य है और R सत्य है। 1	1

5.	निम्नलिखित में से कौन प्रभुत्वशाली जातियों को प्रमुख बनाता है? I. छोटी आबादी II. ज़मीन के अधिकार III. मध्यम जाति IV. क्षेत्रीय राजनीति में निर्णायक भूमिका a) I. और II. b) I. और III. c) II., III और IV. d) I. और IV.	1
6.	..... परिवार को अक्सर भारत के लक्षण के रूप में देखा जाता है। a) एकल b) पितृसत्तात्मक c) पितृवंशीय d) विस्तारित	1
7.	जिस व्यक्ति को उसकी जाति के कारण नौकरी से मना कर दिया जाता है, उसे बताया जा सकता है कि वह दूसरों की तुलना में कम योग्य था और चयन विशुद्ध रूप से योग्यता के आधार पर किया गया था। यह एक उदाहरण है a) भेदभाव b) सामाजिक स्तरीकरण c) समतावाद d) रूढ़िबद्ध धारणा	1

8.	एक संपन्न परिवार का व्यक्ति महंगी उच्च शिक्षा का खर्च वहन कर सकता है। प्रभावशाली रिश्तेदारों और दोस्तों वाला कोई व्यक्ति, अच्छी सलाह, सिफारिशों या सूचनाओं तक पहुंच के माध्यम से - अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी पाने का प्रबंधन कर सकता है। दिए गए संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा सत्य है? I. पूंजी के कई रूप हैं। II. पूंजी के विभिन्न रूपों को दूसरे में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है। III. पूंजी अधिव्यापन के रूप। a) I असत्य है b) I और II सत्य हैं c) I और III सत्य हैं d) I, II और III सत्य हैं	1
9.	ऐतिहासिक रूप से, राज्यों ने राष्ट्र-निर्माण रणनीतियों के माध्यम से अपनी राजनीतिक वैधता को स्थापित करने और बढ़ाने का प्रयास किया है। उन्होंने आत्मसात या एकीकरण की नीतियों के माध्यम से अपने नागरिकों की वफादारी और आज्ञाकारिता को सुरक्षित करने की मांग की। इन उद्देश्यों को प्राप्त करना आसान नहीं था, विशेष रूप से सांस्कृतिक विविधता के संदर्भ में जहां नागरिक, अपने देश के साथ अपनी पहचान के अलावा, अपने समुदाय के साथ पहचान की एक मजबूत भावना भी महसूस कर सकते हैं - जातीय, धार्मिक, भाषाई आदि। दो राष्ट्र निर्माण रणनीतियों का इस्तेमाल किया गया था a) आत्मसात और एकीकरण b) आत्मसात और संस्कृतिकरण c) एकीकरण और संस्कृतिकरण d) पश्चिमीकरण और संस्कृतिकरण	1

10.	प्रथाओं के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को फिर से मजबूत करने में चुनौती है a) बहुलवाद b) संस्थागत आवास c) लोकतांत्रिक तरीकों से संघर्ष का समाधान d) उपरोक्त सभी	1
11.	जबकि कुछ गाँव विस्तार की प्रक्रिया में पूरी तरह से लीन हैं, बसे हुए क्षेत्र को छोड़कर कई अन्य की भूमि का उपयोग शहरी विकास के लिए किया जाता है..... ..... शहरों की वृद्धि आसपास के गांवों पर तीसरे प्रकार के शहरी प्रभाव के लिए जिम्मेदार है. a) महानगर b) छोटा नगर c) पृथक-बस्ती d) विरासत	1
12.	20वीं शताब्दी में ..... आंदोलन के विकास के साथ, कई भारतीय भाषाओं में संस्कृत के शब्दों और वाक्यांशों को छोड़ने का प्रयास किया गया। a) ब्राह्मणवादी b) ब्राह्मण विरोधी c) महिला d) आदिवासी	1
13.	निम्नलिखित में से कौन अनुबंध कृषि का परिणाम नहीं है? a) यह कई लोगों को उत्पादन प्रक्रिया से अलग करता है। b) कृषि के अपने स्वदेशी ज्ञान को अप्रासंगिक बना देता है। c) यह पारिस्थितिक रूप से टिकाऊ है d) मुख्य रूप से कुलीन वस्तुओं के उत्पादन को पूरा करता है	1

14.	अभिकथन (A) : निम्न श्रेणी के जाति समूहों के सदस्यों को गाँव के जमींदार को प्रति वर्ष निश्चित दिनों के लिए श्रम देना पड़ता था। कारण (R): संसाधनों की कमी और आर्थिक और सामाजिक समर्थन के लिए जमींदार जाति पर निर्भरता का मतलब था कि कई कामकाजी गरीब वंशानुगत श्रम संबंधों में जमींदारों से बंधे थे। a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है। b) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है। c) A सत्य है लेकिन R असत्य है। d) A असत्य है और R सत्य है।	1
15.	महिलाएं भी कृषि श्रम के मुख्य स्रोत के रूप में उभर रही हैं जिससे ..... श्रम शक्ति का विकास हुआ है। a) कृषि का महिलाकरण b) कृषि का स्त्रीकरण c) कृषि का सुधार d) कृषि की बहाली	1
16.	1997-98 से देश के विभिन्न हिस्सों में हो रही किसानों की आत्महत्याओं की संख्या को कृषि में संरचनात्मक परिवर्तन और आर्थिक और कृषि नीतियों में बदलाव के कारण हुए 'कृषि संकट' से जोड़ा जा सकता है। निम्नलिखित में से कौन कृषि संकट का कारण नहीं है? a) परिवर्तित फसल स्वरूप b) जोत के स्वरूप में बदलाव c) शहरों में भारी प्रवास d) नकदी फसलों में स्थानांतरण	1
17.	आउटसोर्सिंग में, ... देशों द्वारा ..... देशों को कार्य आवंटित किया जाता है। a) विकसित, विकासशील b) अविकसित, विकसित c) विकासशील, अविकसित d) विकासशील, विकसित	1

18.	अभिकथन (A) : पहले आर्किटेक्ट और इंजीनियरों को कुशल ड्राफ्ट्समैन होना पड़ता था, अब कंप्यूटर उनके लिए बहुत काम करता है। कारण (R) : मशीनरी का उपयोग श्रमिकों को कुशल बनाता है। a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है। b) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है। c) A सत्य है लेकिन R असत्य है। d) A असत्य है और R सत्य है।	1
19.	'स्टैंड अप इंडिया स्कीम' और 'मेक इन इंडिया' ऐसे कार्यक्रम हैं जो .....को साकार करने में मदद करेंगे a) उच्च निर्भरता अनुपात के लाभ b) जनसांख्यिकीय लाभांश c) उच्च मृत्यु दर का लाभ d) उच्च प्रजनन दर का लाभ	1
20.	अभिकथन (A) : मॉडर्न फूड्स में, 604 श्रमिकों को पहले पांच वर्षों में सेवानिवृत्त होने के लिए मजबूर किया गया था। कारण (R) : यह कार्य में शालीनता के कारण था। a) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है। b) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है। c) A सत्य है लेकिन R असत्य है। d) A असत्य है और R सत्य है।	1

	खंड- बी	
21.	1911-21 के दशक में भारत की विकास दर ने एक विविध स्वरूप का प्रदर्शन किया। दो कारण बताइए।	2
22.	अंग्रेजों द्वारा सामाजिक संस्थानों में लाए गए सभी परिवर्तन जानबूझकर नहीं किए गए थे। कथन को सही ठहराने के लिए एक उदाहरण दीजिए।	2
23.	'अंग्रेजी और भारतीय दोनों काल्पनिक लेखन में, हम अक्सर 'आलसी' या 'चालाक' के रूप में वर्गीकृत लोगों के एक पूरे समूह का सामना करते हैं। इस तरह के वर्गीकरण में क्या समस्याएँ हैं? अथवा विश्व के सभी क्षेत्रें में विकलांग व्यक्तियों को पूर्वाग्रह, कम अपेक्षाएं और यहां तक कि भय सहित व्यवहार संबंधी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। विकलांग व्यक्तियों के जीवन के सभी पहलुओं पर अक्षमता के बारे में नकारात्मक दृष्टिकोण, शिक्षा प्राप्त करने की क्षमता, गैर-शोषणकारी कार्यों में भाग लेने के लिए, जहां और किसके साथ रहने के लिए, शादी करने और परिवार शुरू करने और समुदाय के भीतर स्वतंत्र रूप से स्थानांतरित करने के लिए प्रभाव पड़ता है। ऐसे किन्हीं दो तरीकों का सुझाव दीजिए जिनके द्वारा नि:शक्तजनों की दशाओं को सुधारने के लिए अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाया जा सकता है।	2
24	हर इंसान को इस दुनिया में काम करने के लिए स्थिर पहचान की भावना की जरूरत होती है। जैसे प्रश्न - मैं कौन हूँ ? मैं दूसरों से कैसे अलग हूँ? दूसरे मुझे कैसे समझते और बुझते हैं? मेरे पास क्या लक्ष्य और आकांक्षाएं होनी चाहिए? - बचपन से ही हमारे जीवन में लगातार आते रहते हैं। इन सवालों का जवाब कैसे दिया जाता है? अथवा जब किसी राष्ट्र में सांस्कृतिक विविधता के प्रबंधन की बात आती है तो राज्य वास्तव में एक बहुत ही महत्वपूर्ण संस्था है। कैसे?	2
25.	आत्मसातवादी और एकीकरणवादी नीतियों में क्या अंतर है?	2
26	कुमुद पावड़े के उदाहरण का उपयोग करते हुए, दिखाएँ कि कैसे संस्कृतिकरण की प्रक्रिया को लिंगवादी किया जाता है।	2
27	19वीं सदी के सामाजिक सुधार आंदोलनों में क्या अनोखा था?	2

28.	कृषि समृद्धि पर परिणाम के संबंध में जमींदारी व्यवस्था और रैयतवाड़ी व्यवस्था में अंतर स्पष्ट कीजिए।	2
29.	बेंगलुरू, हैदराबाद और गुरुग्राम जैसी जगहों पर, जहां कई आईटी फर्म या कॉल सेंटर स्थित हैं, दुकानों और रेस्तरां ने भी अपने खुलने का समय बदल दिया है, और देर तक खुलते हैं। कारण बताएं। अथवा औद्योगिक समाज अलगाव की विशेषता है। कैसे?	2
	खंड-सी	
30.	पहचान के संदर्भ में आदिवासी समाज अधिकाधिक विभेदित क्यों होते गए? अथवा समकालीन काल में जाति व्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण लेकिन विरोधाभासी परिवर्तनों में से एक यह है कि यह उच्च जाति, शहरी मध्य और उच्च वर्गों के लिए 'अदृश्य' हो गया है। विस्तार से बताएं।	4
31.	राष्ट्र को परिभाषित करना कठिन क्यों है?	4
32.	पूंजीवाद और उपनिवेशवाद कैसे जुड़े हुए हैं?	4
33.	अधिकांश राज्यों में भूमि हदबंदी अधिनियम दंतविहीन कैसे साबित हुआ?	4
34.	एक उद्योग जितना अधिक यंत्रीकृत होता है, उतने ही कम लोगों को रोजगार मिलता है। एक उपयुक्त उदाहरण के साथ व्याख्या करें। अथवा महात्मा गांधी ने मशीनीकरण को रोजगार के लिए एक खतरे के रूप में देखा। समझाएं	4
35.	पुराने और नए सामाजिक आंदोलनों के बीच अंतर करें।	4
	खंड- डी	
36.	'...ठेकेदारों के आदमियों ने, जो जोशीमठ से रेनी जा रहे, रेनी से कुछ देर पहले बस रुकवाई । गाँव के बाहर से ही वे जंगल की तरफ जा रहे थे । एक छोटी लड़की जिसने मजदूरों को उपकरणों के साथ देखा था, भाग कर गाँव की महिला मंडल की प्रमुख गौरा देवी के पास गयी। गौरा देवी ने दूसरी गृहणियों को इकठा किया और जंगल जा पहुंची। जब उन्होंने मजदूरों से कटाई कार्य प्रारम्भ न करने की याचना की तो प्रारम्भ में, उन्हें गलियां तथा धमकियाँ मिली। जब महिलाओं ने झुकने से इनकार कर दिया, तो पुरुषों को अंततः चले जाना पड़ा ।'	6

	पर्यावरण आंदोलन भी अर्थशास्त्र और पहचान के मुद्दों के बारे में कैसे हैं? विस्तार में बताएं ।	
37.	**सारणी 3: भारत में गिरता हुआ स्त्री-पुरुष अनुपात, 1901-2011** टिप्पणी : स्त्री-पुरुष अनुपात को प्रति 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है स्रोत : 2011 की जनगणना के आधार पर क) लिंगानुपात में गिरावट के कारण बताइए। ख) आपकी राय में, बालिकाओं के प्रति इस पूर्वाग्रह से निपटने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए? *(दृष्टिहीन उम्मीदवारों के लिए)* जनसांख्यिकी और समाजशास्त्रियों ने भारत में लिंगानुपात में गिरावट के कई कारण बताए हैं। विस्तृत से चर्चा करें।	6
38.	जाति और आदिवासी भेदभाव को संबोधित करने वाली राज्य और गैर-राज्य पहलों पर विस्तार से चर्चा करें। अथवा आज आदिवासियों के सामने प्रमुख चिंताएँ क्या हैं?	6

वर्ष	स्त्री-पुरुष अनुपात (सभी आयु वर्गों में)	पिछले दशक की तुलना में अंतर	बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (0–6 वर्ष)	पिछले दशक की तुलना में अंतर
1901	972	–	–	–
1911	964	–8	–	–
1921	955	–9	–	–
1931	950	–5	–	–
1941	945	–5	–	–
1951	946	+1	–	–
1961	941	–5	976	–
1971	930	–11	964	–12
1981	934	+4	962	–2
1991	927	–7	945	–17
2001	933	+6	927	–18
2011	943	+10	919	–8

अंकन योजना

समाजशास्त्र (039)

बारहवीं कक्षा

प्रश्न संख्या	खंड- ए	अंक
1	D	1
2	C	1
3	C	1
4	D	1
5	C	1
6	D	1
7	A	1
8	C	1
9	A	1
10	D	1
11	A	1
12	B	1
13	C	1
14	A	1
15	A	1
16	C	1
17	A	1
18	A	1
19	B	1
20	C	1
	खंड- बी	
21	- 1911 और 1921 के बीच विकास की नकारात्मक दर - 0.034 थी। -यह 1918-19 के दौरान इन्फ्लूएंजा महामारी के कारण था।	2
22	- ब्रिटिश प्रशासकों ने देश पर कुशलतापूर्वक शासन करने के तरीके सीखने के प्रयास में जाति की जटिलताओं को समझने की कोशिश करके शुरुआत की। इनमें से कुछ प्रयासों ने पूरे देश में विभिन्न जनजातियों और जातियों के 'रीति-रिवाजों और तौर-तरीकों' पर बहुत ही व्यवस्थित और गहन सर्वेक्षण और रिपोर्ट का रूप ले लिया।	2

	-इस प्रयास का जाति की सामाजिक धारणाओं पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा और सैकड़ों याचिकाओं को जनगणना आयुक्त को विभिन्न जातियों के प्रतिनिधियों द्वारा संबोधित किया गया, जो सामाजिक पैमाने में उच्च स्थान का दावा करते थे और अपने दावों के लिए ऐतिहासिक और शास्त्र संबंधी साक्ष्य पेश करते थे।	
23	-ऐसा सामान्य कथन प्रत्येक समूह के व्यक्तियों के लिए सत्य है। -ऐसे व्यक्तियों के लिए भी, यह हर समय सत्य नहीं है - एक ही व्यक्ति अलग-अलग समय पर आलसी और मेहनती दोनों हो सकता है। अथवा -अधिक जागरूकता और इसलिए समावेश। - विकलांग लोगों को समर्थन देने और उन्हें शामिल करने के लिए उपयुक्त बुनियादी ढाँचा।	2
24	-जिस तरह से हमारा समाजीकरण किया जाता है, उसके कारण हम इनमें से कई सवालों के जवाब देने में सक्षम हैं। -समाजीकरण प्रक्रिया में हमारे माता-पिता, परिवार, रिश्तेदार समूह और हमारे समुदाय जैसे महत्वपूर्ण अन्य लोगों के खिलाफ निरंतर संवाद, बातचीत और यहां तक कि संघर्ष भी शामिल है। हमारा समुदाय हमें वह भाषा (हमारी मातृभाषा) और सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करता है जिसके माध्यम से हम दुनिया को समझते हैं। यह हमारी आत्म-पहचान को भी बांधता है। अथवा विविध समूहों के सांस्कृतिक बहिष्कार को समाप्त करने के प्रयासों की आवश्यकता है। राज्य को बहुविध और पूरक पहचान बनाने में सक्षम होना चाहिए। इस तरह की उत्तरदायी नीतियां विविधता में एकता की भावना पैदा करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती हैं- एक 'हम-भावना'	2

25	आत्मसात को बढ़ावा देने वाली नीतियों का उद्देश्य सभी नागरिकों को सांस्कृतिक मूल्यों और मानदंडों के एक समान सेट को अपनाने के लिए राजी करना, प्रोत्साहित करना या मजबूर करना है। एकीकरण को बढ़ावा देने वाली नीतियां इस बात पर जोर देती हैं कि सार्वजनिक संस्कृति को एक सामान्य राष्ट्रीय स्वरूप तक सीमित रखा जाए, जबकि सभी 'गैर-राष्ट्रीय' संस्कृतियों को निजी क्षेत्र में ले जाया जाए।	2
26	कुमुद पावड़े ने अपनी आत्मकथा में बताया है कि कैसे एक दलित महिला संस्कृत की शिक्षिका बनी। एक छात्र के रूप में वह संस्कृत के अध्ययन की ओर आकर्षित होती है, शायद इसलिए कि यह वह साधन है जिसके माध्यम से वह एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश कर सकती है जो उसके लिए लिंग और जाति के आधार पर प्रवेश करना संभव नहीं था। शायद वह इसकी ओर आकर्षित हुई थी क्योंकि इससे वह मूल में पढ़ सकती थी कि महिलाओं और दलितों के बारे में ग्रंथों का क्या कहना है।	2
27	19वीं सदी के इन सामाजिक सुधार प्रयासों की जो विशेषता थी, वह आधुनिक संदर्भ और विचारों का मिश्रण थी। यह पश्चिमी उदारवाद के आधुनिक विचारों का एक रचनात्मक संयोजन और पारंपरिक साहित्य पर एक नया रूप था।	2
28	अंग्रेजों के अधीन, जमींदारों को पहले की तुलना में भूमि पर अधिक नियंत्रण दिया जाता था। चूंकि उपनिवेशवादियों ने कृषि पर भारी भू-राजस्व (कर) भी लगाया, जमींदारों ने किसानों से जितना हो सके उतना उपज या पैसा निकाला। इस जमींदारी व्यवस्था का एक परिणाम यह था कि ब्रिटिश शासन की अधिकांश अवधि के दौरान कृषि उत्पादन स्थिर या कम हो गया था। रैयतवाड़ी व्यवस्था में, जमींदारों के बजाय 'वास्तविक किसान' कर का भुगतान करने के लिए जिम्मेदार थे। क्योंकि औपनिवेशिक सरकार सीधे किसानों या जमींदारों से निपटती थी, कराधान का बोझ कम था और खेती करने वालों के पास कृषि में निवेश करने के लिए अधिक प्रोत्साहन था। परिणामस्वरूप, ये क्षेत्र अपेक्षाकृत अधिक उत्पादक और समृद्ध बन गए।	2

29	-ओवरवर्क को आईटी क्षेत्र में आउटसोर्स की गई परियोजनाओं की संरचना में बनाया गया है: परियोजना लागत और समय-सीमा को आमतौर पर मानव दिवस के संदर्भ में कम करके आंका जाता है, और क्योंकि कार्यदिवस आठ घंटे के दिन पर आधारित होते हैं, इसलिए इंजीनियरों को अतिरिक्त घंटे और दिन लगाने पड़ते हैं। समय सीमा को पूरा करने के लिए। -विस्तारित कामकाजी घंटों को 'फ्लेक्सीटाइम' के सामान्य प्रबंधन अभ्यास द्वारा वैध बनाया गया है, जो सिद्धांत रूप में एक कर्मचारी को अपने काम के घंटे (सीमा के भीतर) चुनने की स्वतंत्रता देता है, लेकिन व्यवहार में, इसका मतलब है कि उन्हें तब तक काम करना होगा जब तक हाथ में काम खत्म करने के लिए आवश्यक हो । -लेकिन जब कोई वास्तविक काम का दबाव नहीं होता है, तब भी वे कार्यालय में देर तक रुकते हैं या तो साथियों के दबाव के कारण या क्योंकि वे बॉस को दिखाना चाहते हैं कि वे कड़ी मेहनत कर रहे हैं। (कोई दो) अथवा -औद्योगिक समाज में श्रम का विस्तृत विभाजन शामिल है, इसलिए लोग अक्सर अपने काम का अंतिम परिणाम नहीं देखते हैं क्योंकि वे उत्पाद का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही पैदा कर रहे हैं। -काम दोहराव और थकाऊ है। -यह लोगों को अलगाव की ओर ले जाता है क्योंकि वे अपने काम का आनंद नहीं लेते हैं और इसे जीवित रहने के लिए उन्हें कुछ करने के रूप में देखते हैं, और यहां तक कि यह अस्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि तकनीक में किसी मानव श्रम के लिए जगह है या नहीं।	2

	खंड- सी	
30	जनजातीय आंदोलनों को जन्म देने में मुद्दों के दो व्यापक सेट सबसे महत्वपूर्ण रहे हैं। ये महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधनों जैसे भूमि और विशेष रूप से वनों पर नियंत्रण और जातीय-सांस्कृतिक पहचान के मामलों से संबंधित मुद्दे हैं। दोनों अक्सर एक साथ जा सकते हैं, लेकिन आदिवासी समाज के भेदभाव के साथ वे अलग भी हो सकते हैं। जनजातीय समाजों के भीतर मध्य वर्ग अपनी जनजातीय पहचान पर जोर देने के कारण गरीब और अशिक्षित आदिवासी जनजातीय आंदोलनों में शामिल होने के कारणों से भिन्न हो सकते हैं। किसी भी अन्य समुदाय की तरह, यह इस प्रकार की आंतरिक गतिशीलता और बाहरी ताकतों के बीच का संबंध है जो भविष्य को आकार देगा। अथवा -विकासात्मक नीतियों से सवर्ण, शहरी मध्य और उच्च वर्ग को सबसे अधिक लाभ हुआ है। -उनकी जाति की स्थिति यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण थी कि इन समूहों के पास तीव्र विकास द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का पूरा लाभ उठाने के लिए आवश्यक आर्थिक और शैक्षिक संसाधन थे। -विशेष रूप से, उच्च जाति के अभिजात वर्ग को सब्सिडी वाली सार्वजनिक शिक्षा से विशेष रूप से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा और प्रबंधन में व्यावसायिक शिक्षा से लाभ हुआ। -साथ ही, वे स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती दशकों में सार्वजनिक क्षेत्र की नौकरियों के विस्तार का भी लाभ उठाने में सक्षम थे।	4
31	एक राष्ट्र एक अजीबोगरीब प्रकार का समुदाय है जिसका वर्णन करना आसान है लेकिन परिभाषित करना कठिन है। हम साझा धर्म, भाषा, जातीयता, इतिहास या क्षेत्रीय संस्कृति जैसे सामान्य सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक संस्थानों के आधार पर स्थापित कई विशिष्ट राष्ट्रों को जानते हैं और उनका वर्णन कर सकते हैं। लेकिन किसी भी परिभाषित विशेषताओं, किसी भी विशेषता के साथ आना मुश्किल है जो एक राष्ट्र के पास होना चाहिए। प्रत्येक संभावित मानदंड के लिए एक प्रति-उदाहरण अपवाद हैं। उदाहरण के लिए, ऐसे कई राष्ट्र हैं जो एक समान भाषा, धर्म, जातीयता आदि को साझा नहीं करते हैं। दूसरी ओर, कई भाषाएँ, धर्म या जातियाँ हैं जो राष्ट्रों में साझा की जाती हैं। लेकिन यह सभी अंग्रेजी बोलने वालों या सभी बौद्धों के एक एकीकृत राष्ट्र के गठन की ओर नहीं ले जाता है	4

32	पश्चिम में पूंजीवाद बाकी दुनिया के यूरोपीय अन्वेषण की एक जटिल प्रक्रिया से उभरा, इसकी संपत्ति और संसाधनों की लूट, विज्ञान और प्रौद्योगिकी की अभूतपूर्व वृद्धि, उद्योगों और कृषि के लिए इसका दोहन। पूंजीवाद की शुरुआत से ही इसकी गतिशीलता, इसकी क्षमता बढ़ने, विस्तार करने, नवाचार करने, प्रौद्योगिकी और श्रम का उपयोग करने की सबसे बड़ी गारंटी थी। इसकी वैश्विक प्रकृति भी इसकी विशेषता थी। पश्चिमी उपनिवेशवाद पश्चिमी पूंजीवाद के विकास से अटूट रूप से जुड़ा था। भारत जैसे उपनिवेशवादी देश में पूंजीवाद के विकास के तरीके पर इसका स्थायी प्रभाव पड़ा	4
33	इन कानूनों ने एक विशेष परिवार के स्वामित्व वाली भूमि की मात्र पर ऊपरी सीमा लगा दी। भूमि के प्रकार, उसकी उत्पादकता और ऐसे अन्य कारकों के आधार पर सीमा क्षेत्र से क्षेत्र में भिन्न होती है। कई खामियां थीं और अन्य रणनीतियाँ जिसके माध्यम से अधिकांश जमींदार अपनी अधिशेष भूमि को राज्य द्वारा अपने कब्जे में लेने से बचने में सक्षम थे। जबकि कुछ बहुत बड़ी सम्पदाओं को तोड़ दिया गया था, ज्यादातर मामलों में जमींदार तथाकथित 'बेनामी हस्तांतरण' में, रिश्तेदारों और नौकरों सहित अन्य लोगों के बीच भूमि को विभाजित करने में कामयाब रहे - जिससे उन्हें भूमि पर नियंत्रण रखने की अनुमति मिली (वास्तव में यदि नहीं तो नाम)। कुछ जगहों पर, कुछ अमीर किसानों ने भूमि सीमा अधिनियम के प्रावधानों से बचने के लिए वास्तव में अपनी पत्नियों को तलाक दे दिया (लेकिन उनके साथ रहना जारी रखा), जिसमें अविवाहित महिलाओं के लिए एक अलग हिस्से की अनुमति थी, लेकिन पत्नियों के लिए नहीं।	4
34	मारुति उद्योग लिमिटेड में हर मिनट दो कारें असेंबली लाइन से लुढ़कती हैं। श्रमिकों को पूरे दिन में केवल 45 मिनट का आराम मिलता है - 7.5 मिनट के दो चाय के ब्रेक और आधे घंटे के एक लंच ब्रेक। उनमें से अधिकांश 40 वर्ष की आयु तक समाप्त हो जाते हैं और स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले लेते हैं। जहां उत्पादन बढ़ा है, वहीं कारखाने में स्थायी नौकरियों की संख्या कम हुई है। फर्म ने सफाई, और सुरक्षा, साथ ही पुर्जों के निर्माण जैसी सभी सेवाओं को आउटसोर्स किया है। पुर्जे आपूर्तिकर्ता कारखाने के आसपास स्थित होते हैं और हर दो घंटे या समय पर पुर्जे भेजते हैं। आउटसोर्सिंग और जस्ट-इन-टाइम कंपनी के लिए लागत कम रखता है, लेकिन कर्मचारी बहुत तनाव में हैं, क्योंकि अगर आपूर्ति नहीं पहुंचती है, तो उनके उत्पादन लक्ष्य में देरी हो जाती है, और जब वे आते हैं तो उन्हें बनाए रखने के लिए दौड़ना पड़ता है। कोई आश्चर्य नहीं कि वे थक जाते हैं।	4

	अथवा गांधी ने मशीनरी के लिए दीवानगी पर आपत्ति जताई, न कि मशीनरी पर। दीवानगी उस चीज़ के लिए है जिसे वे श्रम-बचत करने वाली मशीनरी कहते हैं। पुरुष तब तक 'श्रम बचाने' में लगे रहते हैं जब तक कि हजारों लोग बिना काम के नहीं होते और उन्हें भूख से मरने के लिए खुली सड़कों पर फेंक दिया जाता है। वह मानव जाति के एक अंश के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए समय और श्रम बचाना चाहता था। वह चाहता था कि धन का केंद्रीकरण कुछ के हाथों में न हो, बल्कि सभी के हाथों में हो। उनका मानना था कि जब कोई राष्ट्र चरखा अपनाता है तो हम न केवल बेरोजगारी के प्रश्न का समाधान करते हैं बल्कि हम घोषणा करते हैं कि हमारा किसी राष्ट्र का शोषण करने का कोई इरादा नहीं है, और हम अमीरों द्वारा गरीबों का शोषण भी समाप्त करते हैं।	
35.	पुराने आंदोलन- -पुराने सामाजिक आंदोलनों ने स्पष्ट रूप से सत्ता संबंधों के पुनर्गठन को एक केंद्रीय लक्ष्य के रूप में देखा। -पुराने सामाजिक आंदोलन राजनीतिक दलों के ढांचे के भीतर काम करते थे। - प्रकृति में क्षेत्रीय नए आंदोलन- -'नए' सामाजिक आंदोलन समाज में सत्ता के वितरण को बदलने के बारे में नहीं थे, बल्कि स्वच्छ वातावरण जैसे जीवन की गुणवत्ता के मुद्दों के बारे में थे। -नए आंदोलन राजनीतिक दलों के ढांचे के भीतर काम नहीं करते हैं, लेकिन गैर-पार्टी राजनीतिक संरचनाओं के माध्यम से काम कर सकते हैं। -प्रकृति में वैश्विक	4

	खंड- डी	
36	जलाऊ लकड़ी, चारा और अन्य दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सभी ग्रामीण जंगल पर निर्भर थे। इस संघर्ष ने गरीब ग्रामीणों की आजीविका की जरूरतों को लकड़ी बेचने से राजस्व उत्पन्न करने की सरकार की इच्छा के खिलाफ रखा। निर्वाह की अर्थव्यवस्था को लाभ की अर्थव्यवस्था के खिलाफ खड़ा किया गया था। सामाजिक असमानता (ग्रामीण बनाम सरकार जो वाणिज्यिक, पूंजीवादी हितों का प्रतिनिधित्व करती है) के इस मुद्दे के साथ, चिपको आंदोलन ने पारिस्थितिक स्थिरता के मुद्दे को भी उठाया। प्राकृतिक वनों को काटना पर्यावरणीय विनाश का एक रूप था जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में विनाशकारी बाढ़ और भूस्खलन हुआ था। ग्रामीणों के लिए, ये 'लाल' और 'हरे' मुद्दे आपस में जुड़े हुए थे। जबकि उनका अस्तित्व जंगल के अस्तित्व पर निर्भर था, उन्होंने अपने स्वयं के लिए वन को पारिस्थितिक संपदा के रूप में भी महत्व दिया जो सभी को लाभान्वित करता है। इसके अलावा, चिपको आंदोलन ने मैदानी इलाकों में मुख्यालय वाली एक दूर की सरकार के खिलाफ पहाड़ी ग्रामीणों की नाराजगी भी व्यक्त की, जो उनकी चिंताओं के प्रति उदासीन और शत्रुतापूर्ण थी। इसलिए, अर्थव्यवस्था, पारिस्थितिकी और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के बारे में चिंताएं चिपको आंदोलन को रेखांकित करती हैं।	6
37-	क) -पुत्र -वरीयता -एक बेटी की परवरिश का मतलब है फिजूलखर्ची निवेश -दहेज बी) -शिक्षा - भ्रूण हत्या की रोकथाम - कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम *(दृष्टिहीन उम्मीदवारों के लिए)* 'जनसांख्यिकीविदों और समाजशास्त्रियों ने भारत में लिंगानुपात में गिरावट के कई कारण बताए हैं।' विस्तार में बताना। -पुत्र वरीयता -बेटी की परवरिश करना मतलब फिजूलखर्ची निवेश -दहेज -जागरूकता और साक्षरता की कमी	6

	- शैशवावस्था में बालिकाओं की गंभीर उपेक्षा - लिंग-विशिष्ट गर्भपात - कन्या भ्रूण हत्या	
38.	भारतीय राज्य में आजादी से पहले से ही अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जातियों के लिए विशेष कार्यक्रम होते रहे हैं। -आरक्षण में सार्वजनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रें में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के सदस्यों के लिए कुछ स्थानों या 'सीटों' को अलग रखना शामिल है। -जाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1850, जिसने केवल धर्म या जाति परिवर्तन के कारण नागरिकों के अधिकारों में कटौती की अनुमति नहीं दी। -93वां संशोधन उच्च शिक्षा संस्थानों में अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए आरक्षण शुरू करने के लिए है। -संविधान ने अस्पृश्यता (अनुच्छेद 17) को समाप्त कर दिया और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम 1989 को पेश किया। - ज्योतिबा फुले, अयोथीदास, पेरियार, अम्बेडकर और अन्य जैसे लोगों द्वारा शुरू किए गए स्वतंत्रता-पूर्व संघर्षों और आंदोलनों से लेकर उत्तर प्रदेश में बहुजन समाज पार्टी या दलित जैसे समकालीन राजनीतिक संगठनों तक। कर्नाटक की संघर्ष समिति, दलित राजनीतिक दावे ने एक लंबा सफर तय किया है। -दलितों ने कई भारतीय भाषाओं, विशेष रूप से मराठी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु और हिंदी में साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अथवा 1947 में भारत की आजादी से आदिवासियों का जीवन आसान हो जाना चाहिए था लेकिन ऐसा नहह्न था। सबसे पहले, वनों पर सरकार का एकाधिकार जारी रहा। कुछ भी हो, जंगलों का शोषण तेज हो गया। दूसरे, भारत सरकार द्वारा अपनाई गई पूंजी-गहन औद्योगीकरण की नीति में खनिज संसाधनों और बिजली उत्पादन क्षमता की आवश्यकता थी जो आदिवासी क्षेत्रों में केंद्रित थे। नई खनन और बांध परियोजनाओं के लिए आदिवासी भूमि का तेजी से अधिग्रहण किया	6

	गया। इस प्रक्रिया में लाखों आदिवासी बिना किसी उचित मुआवजे या पुनर्वास के विस्थापित हो गए। 'राष्ट्रीय विकास' और 'आर्थिक विकास' के नाम पर न्यायोचित, ये नीतियां भी आंतरिक उपनिवेशवाद का एक रूप थीं, आदिवासियों को वश में करना और उन संसाधनों को अलग-थलग करना, जिन पर वे निर्भर थे। पश्चिमी भारत में नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर बांध और आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदी पर पोलावरम बांध जैसी परियोजनाएं सैकड़ों-हजारों आदिवासियों को विस्थापित करती हैं, जिससे वे और अधिक निराश्रित हो जाते हैं। ये प्रक्रियाएँ जारी हैं और 1990 के दशक के बाद से और भी अधिक शक्तिशाली हो गई हैं जब भारत सरकार द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीतियों को आधिकारिक तौर पर अपनाया गया था। कॉरपोरेट फर्मों के लिए आदिवासियों को विस्थापित करके भूमि के बड़े क्षेत्रों का अधिग्रहण करना अब आसान हो गया है। उनके खिलाफ भारी बाधाओं के बावजूद और उनके हाशिए पर जाने के बावजूद कई आदिवासी समूह बाहरी लोगों (जिन्हें 'दिकु' कहा जाता है) और राज्य के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद के भारत में, आदिवासी आंदोलनों की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में झारखंड और छत्तीसगढ़ के लिए राज्य का दर्जा प्राप्त करना शामिल है, जो मूल रूप से क्रमशः बिहार और मध्य प्रदेश का हिस्सा थे।	

समाजशास्त्र (039)

कक्षा बारहवीं

अभ्यास प्रश्न पत्र 2022-23

समय: 3 घंटे अधिकतम अंक: 80

सामान्य निर्देश

1. प्रश्न पत्र को चार खंडों में बांटा गया है।
2. कुल 38 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. खंड क में प्रश्न संख्या 1-20 शामिल है। ये MCQ प्रकार के प्रश्न हैं। प्रश्न के अनुसार, एक उत्तर हो सकता है।
4. खंड ख में प्रश्न संख्या 21-29 शामिल है। ये बहुत ही लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं जिनमें प्रत्येक के 2 अंक हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
5. खंड ग में प्रश्न संख्या 30-35 शामिल है। वे लघु उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं जिनमें प्रत्येक के 4 अंक है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 80 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
6. खंड घ में प्रश्न संख्या 36-38 शामिल है। वे दीर्घ उत्तरीय प्रकार के प्रश्न हैं जिनमें प्रत्येक के 6 अंक है। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। प्रश्न संख्या 36 का उत्तर दिए गए गद्यांश की सहायता से देना है।

खंड- क

रिक्त स्थान भरो

प्र.1 जनसांख्यिकीय आँकड़े, राज्य की नीतियाँ, विशेष रूप से आर्थिक विकास और सामान्य जन कल्याण संबंधी नीतियाँ बनाने और कार्यान्वित करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं ।

.....जन कल्याण संबंधी नीतियाँ बनाने और कार्यान्वित करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं । 1

(क) जनसांख्यिकीय आँकड़े (ख) राज्य की नीतियाँ

(ग) आँकड़े (घ) आर्थिक विकास

प्र. 2 जाति जन्म से निर्धारित होती है। एक बच्चा अपने माता- पिता की जाति में ही जन्म लेता है । जाति कभी चुनाव का विषय नहीं होती । जाति हमें ..... प्राप्त होती हैं - 1

(क) इनाम में (ख) खैरात में

(ग)जन्म से (घ) चुनाव से

प्र. 3 ग्रामीण समाज का मुख्य व्यवसाय ..... है । 1

(क) नौकरी (ख) कृषि

(ग)पंडिताई (घ) प्रशिक्षण

प्र. 4 मार्क्स ने उस स्थिति को ..... कहा है जिसमें लोग अपने कार्य से प्रसन्न नहीं होते हैं। 1

(क) सफलता (ख) उम्मीद

(ग)अलगाव (घ) चुनौती

प्र. 5 जाति व्यवस्था में विवाह संबंधी नियम ..... होते हैं । 1

(क) सरल (ख) कठोर

(ग) सीधे (घ) उल्टे

प्र. 6 मैनेजर का मुख्य कार्य होता है कामगारों को <u>नियंत्रित</u> रखना और उनसे अधिक काम करवाना । नियंत्रित रखने से यहाँ पर क्या अर्थ हैं - 1

(क) कामगारों को बाँध कर रखना

(ख) कामगारों को दबा कर रखना

(ग) कामगारों को प्रबंधित कर रखना

(घ) कामगारों को खुश रखना

प्र.7 'ESSAY ON POPULATION' नामक पुस्तक किसने लिखी थी - 1

(क) माल्थस (ख) दुखीर्म

(ग) वेबर (घ) स्पेंसर

प्र. 8 कौन सी 'शिक्षा पद्धति' राष्ट्रवादी चेतना एवं उपनिवेश विरोधी चेतना का माध्यम बनी 1

(क) पूर्वी (ख) पश्चिमी

(ग)उत्तरी (घ) दक्षिणी

प्र. 9 नव वर्ष के रूप में 'उगाड़ी' पर्व किस प्रदेश में मनाया जाता है 1

(क) तमिलनाडु (ख) असम

(ग) पंजाब (घ) कर्नाटक

प्र.10 निम्न में कौन सी जाति आंध्र प्रदेश में प्रबल जाति मानी जाती है 1

(क) रेड्डी (ख) भूमिहार

(ग) लिंगायत (घ) राजपूत

प्र. 11 एक जमाना था जब अकाल व्यापक रूप से बार-बार पड़ते थे । उन दिनों अकाल पड़ने के कई कारण होते थे। जिनमें से एक खेती का वर्षा पर निर्भर होना था। जिससे लोग लोग घोर गरीबी और कुपोषण की हालात में जीवन बिताने को मजबूर होते थे। जबकि अन्य कारण का संबंध किससे नही है:- 1

(क) परिवहन

(ख) संचार

(ग) सिंचाई की सुविधा का अभाव

(घ) हरित क्रांति

प्र. 12 जनजाति एक आधुनिक शब्द है जिसका प्रयोग उपमहाद्वीप के.....के लिए किया जाता है। 1

(क) प्राचीन निवासी (ख) वन निवासी

(ग) मूलनिवासी (घ) अनैच्छिक निवासी

प्र.13 औपनिवेशिक शासन काल के दौर में सभी प्रमुख सामाजिक संस्थाओं में और विशेष रूप से ..... व्यवस्था में प्रमुख परिवर्तन आए। 1

(क) जाति (ख) सामाजिक

(ग)राजनैतिक (घ) आर्थिक

प्र. 14 'भारत में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में गिरावट आने के कई कारण बताए गए है।' निम्नलिखित में से कौन सा लिंगानुपात का कारण है:- 1

1. शैशवावस्था में बच्चियों की देखभाल में घोर उपेक्षा

2. लिंग विशेष का गर्भपात

3. धार्मिक एंव सांस्कृतिक अंधविश्वास

4. प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ अधिनियम

(क) 1 & 2 (ख) 2 & 3

(ग) 1, 2, &3 (घ) 1, 2 &4

प्र. 15 विधवा विवाह के समर्थकों में से निम्न हैं ? 1

1. रानाडे 2. ईश्वर चंद्र 3. स्वामी दयानन्द

(क) 1 & 2 (ख) 2 & 3

(ग) 1, 2, &3 (घ) 1 & 3

प्र. 16 अभिकथन (A) एक जनसंख्या पिरामिड मध्य आयु वर्ग में स्पष्ट रूप से जनसांख्यिकीय संरचना द्वारा प्रदान किए जाने के कारण एक उभार दिखाता है। 1

कारण (R) यह मध्यम आयु वर्ग में उच्च जन्म दर के कारण है।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सत्य है और R असत्य है।

(घ) A असत्य है परन्तु R सत्य है।

प्र. 17 अभिकथन (A) पहले आर्किटेक्ट और इंजीनियरों को कुशल ड्राफ्ट्समैन होना पड़ता था, अब कंप्यूटर उनके लिए सभी काम करता है। 1

कारण (R) मशीनरी का उपयोग श्रमिकों को अकुशल करता है।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सत्य है और R असत्य है।

(घ) A असत्य है परन्तु R सत्य है।

प्र. 18 अभिकथन (A) भारत की अधिकांश आबादी शहरों में रहती है । 1

कारण (R) भारत में गांवों से आबादी लगातार घट रही है।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सत्य है और R असत्य है।

(घ) A असत्य है परन्तु R सत्य है।

प्र.19 अभिकथन (A) राष्ट्र एक अनुठे किस्म का समुदाय होता है जिसका वर्णन तो आसान है पर इसे परिभाषित करना कठिन है। 1

कारण (R) अनेक विशिष्ट राष्ट्रों का वर्णन कर सकते है जिसकी स्थापना क्षेत्रीय संस्कृति के किस आधार पर नही की गई थी ।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सत्य है और R असत्य है।

(घ) A असत्य है परन्तु R सत्य है।

प्र.20 अभिकथन (A) पति-पत्नी दोनो नौकरी करते हैं तो बच्चों को शिशुपालन गृह में छोड़ा जाता है। 1

कारण (R) औद्योगीकरण के कारण फिर से संयुक्त परिवार बनने लगे है जो लुप्तप्राय हो गए थे।

(क) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सही हैं और R, A की व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सत्य है और R असत्य है।

(घ) A असत्य है परन्तु R सत्य है।

खंड ख

प्र. 21 अधिकांश देशों में पराश्रितता अनुपात बढ़ने के कारण समस्याएँ क्यों उत्पन्न हो रही हैं? 2

प्र. 22 भारत में लिंगानुपात में गिरावट के कारण क्या हैं ? 2

प्र. 23 जनजातियों के स्थायी लक्षण क्या हैं ? 2

प्र. 24 आदिवासी संघर्ष से आप क्या समझते है ? 2

प्र. 25 अस्पृश्यता से आप क्या समझते है ? 2

प्र. 26 'बेगार' से आप क्या समझते है ? 2

अथवा

किन्ही दो भूमि सुधार कार्यक्रमों के बारे में बताए ?

प्र. 27 संगठित और असंगठित क्षेत्र में अंतर बताइए ? 2

प्र. 28 लोग काम कैसे पाते हैं ? 2

अथवा

'समय की चाकरी' से क्या तात्पर्य है ?

प्र. 29 सामाजिक आंदोलन के कोई दो लक्षण बताएं ? 2

अथवा

तिभागा आंदोलन क्या था ?

खंड-ग

प्र. 30 राज्यों का भाषा के आधार पर पुनर्गठन ने भारत का हित या अहित किया है? तर्क द्वारा स्पष्ट कीजिए। 4

अथवा

पूर्वाग्रह क्या है? यह रुढिवादी धारणाओं पर किस प्रकार आधारित है ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

प्र. 31 उपनिवेशवाद में पूंजीवाद वास्तव में बेहतर उपयोगी सिद्ध हुई है। चार तर्कों के आधार पर स्पष्ट करें। 4

प्र. 32 उपनिवेशवाद के कारण जाति व्यवस्था में क्या- क्या बदलाव आए । 4

प्र. 33. स्वतंत्रता के बाद भारतीय ग्रामीण समाज में हुए परिवर्तन कौन-कौन से थे? स्पष्ट करें। 4

प्र. 34 सामाजिक आंदोलन क्या है? इसे किस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है ? वर्णन करें। 4

अथवा

उदारीकरण ने रोजगार के प्रतिमानों को किस प्रकार प्रभावित किया है ?

प्र. 35 स्वतन्त्रता के बाद सरकार द्वारा लागू किए गए प्रमुख भूमि सुधार कानून क्या थे? स्पष्ट कीजिये । 4

खंड- घ

प्र. 36 निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए तथा प्रश्नों के उत्तर दीजिये - 6

1970 के दशक के मध्य में भारत में महिला आंदोलन का नवीनीकरण हुआ । कुछ लोग इसे भारतीय महिला आंदोलन का दूसरा दौर कहते हैं । जबकि

बहुत सी चिंताएँ उसी प्रकार बनीं रहीं, फिर भी संगठनात्मक रणनीति तथा विचारधाराओं दोनों में परिवर्तन हुआ । स्वायत्त महिला आंदोलन कहे जाने वाले आंदोलनों में वृद्धि हुई । 'स्वायत्त' शब्द इस तथ्य की ओर संकेत था कि उन महिला संगठनों से जिनके राजनीतिक दलों से संबंध थे, से भिन्न यह 'स्वायत्तशासी' अथवा राजनीतिक दलों से स्वतंत्र थीं। यह अनुभव किया गया कि राजनीतिक दल महिलाओं के मुद्दों को अलग-थलग रखने की प्रवृति रखते हैं।

(1) भारत में महिला आंदोलन का नवीनीकरण कब हुआ ?

(2) राजनीतिक दल महिलाओं के मुद्दों को लेकर कैसी प्रवृति रखते थे?

प्र. 37 '19 वीं तथा 20वीं शताब्दी में महिलाओं के उत्थान के लिए चलाया जाने वाला आंदोलन पुरूष समाज सुधारकों द्वारा प्रारंभ किया गया था।' उपर्युक्त उदाहरण के साथ चर्चा कीजिये। 6

प्र. 38 जाति से आप क्या समझते हैं? जाति और वर्ण में क्या अंतर है? 6

अथवा

परिवार से आप क्या समझते है? परिवार के विभिन्न प्रकारों के बारे में बताए ?